Lkekpkj ladyu

fo'k; lwph

Cykd ,

;wfuV ,d   lekpkj ladyu dk ifjp;

;wfuV nks   lekpkj ladyu ds fl)kar] dk;Z vkSj mRrjnkf;Ro

Cykd ch

;wfuV ,d   lekpkj ladyu ds rduhd] lekpkj ds rRo

;wfuV nks   lepkj ds L=ksr] iadkj vkSj leL;k,a

Cykd lh

;wfuV ,d   laoknnkrk ds xq.k] dk;Z vkSj nkf;Ro

;wfuV nks   laoknnkrk ds izdkj

Cykd Mh

;wfuV ,d   vijk/k lekpkj] U;k;ky;] jk{kk] jktuhfr] okf.kT; vkSj 0;kikj] [ksy lekpkj

;wfuV nks   dk;Zdze dk lekpkj ladyu] cSBdsa] lfeukj] dk;Z'kkyk vkSj dkUQzsal] lk{kkRdkj

Cykd bZ

;wfuV ,d   jsfM;ks i=dkfjrk vkSj lekpkj ifjp;
;wfuV nks   njn'kZu i=dkfjrk vkSj lekpkj ifjp;

Block – A Unit –I
Lesson 1

lekpkj ladyu dk ifjp;

ys[kd % Jh v:.k dqekj iqujh{kd % Jh fefgj jatu ik=

<u><kapk</u>

1.0 mn~ns';
1.1 ikB ifjp;
1.2 fo'k; oLrq iLrqfrdj.k
1.2.1 lepkj dk Lo:Ik o ifjp;
1.2.2 lekpkj dh ifjHkk"kk
1.2.3 lekpkjksa dk p;u dSls djsa
1.2.4 lekpkj ys[ku dh vk/kqfud rduhd
1.2.5 lekpkj ladyu ds {ks=
1.2.6 lekpkj ladyu ds egRoiw.kZ midj.k
1.2.7 lekpkj ladyu dh lko/kkfu;ka
1.3 lkj
1.4 fof'k"V 'kCnkoyh
1.5 vkadyu iz'ukoyh
1.6 lanHkZ iqLrdsa

1.0 mn~ns';

इस अध्याय को पढकर पत्रकारिता के छात्र समाचार संकलन के निम्नलिखित पहलुओं को विस्तार पूर्वक जान जाएंगे और उन्हें समझने में आसानी होगी। यह पहलु हैं – समचार संकलन का स्वरूप व परिचय, समाचार की परिभाषा, समाचारों का चयन कैसे करें, समाचार लेखन की आधुनिक तकनीक, समाचार संकलन के क्षेत्र, समाचार संकलन के महत्वपूर्ण उपकरण, व समाचार संकलन की सावधानियां।

1.1 ikB ifjp;

सूचना क्रांति ने समाचार संकलन को एक नई दिशा दे दी है। नई तकनीक के कारण प्रिंट मीडिया हो या इलैक्ट्रानिक मीडिया सब में सबसे पहले समाचार देने की होड़ लगी रहती है। ऐसी स्थिति में समाचार संकलन में महत्वपूर्ण भूमिका घटना स्थल पर सर्वप्रथम पहुंचने की हो गई है। उसके बाद दूसरा स्थान नई तकनीक का आता है। नई तकनीक के सहारे ही पत्रकार संकलित किये गए समाचार को न्यूज रूम तक या अपने कार्यालय तक पहुंचा पाता है। किसी भी समाचार की खोज, उसका निरीक्षण और परीक्षण करने के बाद सत्य और सही जानकारी की खोज करना ही समाचार संकलन है। संकलन के स्थल कई हो सकते हैं। जैसे अस्पताल, धरना, जुलूस, प्रदर्शन, सभा, बैठक, समारोह, आमसभा, प्राकतिकआपदा, सडकदुर्धटना, रेलदुर्धटना, हवाईदुर्धटना, शैक्षणिकस्थल, स्कूल, महाविद्याल, विश्वविद्यालय, अदालत, विधानसभा, लोकसभा और विभिन्न सरकारी कार्यालय इत्यादि। समचार संकलन की पूरी प्रक्रिया को जानने से पहले पत्रकारिता के छात्र को यह जानना आवश्यक है, कि समाचार क्या है। क्योंकि जब हमें यह नहीं मालूम होगा कि समाचार किसे कहते हैं, तब तक समाचार संकलन के लिए गया कार्य अंधेरे में तीर चलाने के समान होगा।

1.2 fo’k; oLr iLrfrdj.k

समाचार पत्र एक अजिल्द धारावाही प्रकाशन है, जो नियमित समय के अंतर से प्रकाशित होता है। उसमें समाचारों को प्रमुखता दी जाती है। अधिकांश समाचार पत्र दैनिक या साप्ताहिक होते हैं। कुछ अर्धसाप्ताहिक भी होते हैं। पाक्षिक और मासिक समाचारपत्रों के उदाहरण शायद ही कभी मिले हों। समाचारपत्र और पत्रिका का अंतर भी रोचक है, विशेष रूप से साप्ताहिक प्रकाशनों के बीच यदि प्रकाशन सजिल्द है, तो उसे पत्रिका कहा जाता है। समाचार पत्रों के लिए पृष्ठ संख्या और आकार का निर्धारण कभी नहीं किया गया। bu lkbDykihfM;k fcVkfudk

इस पाठ में विषय वस्तु को निम्नलिखित कम में प्रस्तुत किया गया है –

- 1.2.1 समचार का स्वरूप व परिचय
- 1.2.2 समाचार की परिभाषा
- 1.2.3 समाचारों का चयन कैसे करें
- 1.2.4 समाचार लेखन की आधुनिक तकनीक
- 1.2.5 समाचार संकलन के क्षेत्र कौन–कौन से हैं
- 1.2.6 समाचार संकलन के महत्वपूर्ण उपकरण
- 1.2.7 समाचार संकलन की सावधानियां

1.2.1 lepkj dk Lo:Ik o ifjp;

समाचार शब्द का उच्चारण करना जितना आसान है। उतना ही इसके लिए एक ठोस परिभाषा देना। समाचार के बारे में जितनी भी परिभाषा दी जाए वह कम है। लेकिन समाचार की परिभाषा के ज्ञान के बिना इसे समझना पत्रकारिता के छात्रों के लिए आसान नहीं होगा। समाचार की परंपरागत परिभाषा है, यदि कुत्ता आदमी को काटे तो यह समाचार नहीं है, बल्कि आदमी कुत्ते को काटे तो यह समाचार है। उक्त परिभाषा भले ही वर्तमान परिस्थितियों में उपयुक्त नहीं लगे, लेकिन इससे पत्रकारितां के छात्रो को इतना ज्ञान अवश्य हो जाता है कि समाचार की खोज के लिए उसे कुछ अलग हटकर इस बारे में सोचना होगा और समझना होगा।

समाचार का शाब्दिक अर्थ सम्यक् अथवा समान आचार, व्यवहार और आचरण से है। समाचार का संधि विच्छेद होगा सम जोड़ आचार। अर्थात् सम्यक आचार। समाचार को संस्कृत में वार्ता, उर्दू में खबर और अंग्रेजी में न्यूज कहते हैं। समाचार की परिभाषा को अच्छी तरह समझने के लिए हमें समाचार शब्द के अंग्रेजी रूपांतर पर जाना होगा, जहां समाचार को न्यूज कहा जाता है। न्यूज अर्थात उत्तर, पूर्व, पश्चिम और दक्षिण दिशाओं से प्राप्त सूचना है। समाचार को विभिन्न विद्वानों द्वारा दिये गए परिभाषाओं से भी समझा जा सकता है।

1.2.2 lekpkj dh ifjHkk'kk

ohlh oxhlt ने समाचार को परिभाषित करते हुए कहा है। राजधानी, सरकारी कार्यालयों और जिला कार्यालयों के स्रोत तथा उसके आस–पास की घटनाएं ही समाचार के केंद्र नहीं, सरकार और सदन के निर्णय की लोकप्रियता पर आधारित घटनाएं तथा विचार भी समाचार हैं। समाचार के बारे में र्टनर कालेज के अनुसार वह सभी कुछ जिससे आप कल तक अनभिज्ञ थे, समाचार है। जिसके बारे में कल तक आप नहीं जानते थे वही समाचार है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जाता है कि जिसके बारे में सभी को जानने की इच्छा हो वही समाचार है।

ब्रिटेन के एक समचार पत्र मैनचेस्टर गार्डियन ने एक बार 'समाचार की परिभाषा क्या है' इस बारे में एक प्रतियोगिता का आयोजन किया था। प्रतियोगिता में प्राप्त सैकडों परिभाषाओं में से इस परिभाषा को पुरस्कृत किया गया था। lekpkj fdlh vuks[kh ;k vlk/kkj.k /kVuk dh vfoyEc lpuk dks dgrs gS] ftlds ckjs esa yksx igys dqN Hkh ugha tkurs gks] ysfdu ftls rqjUr tkuus dh vf/kd ls vf/kd yksxksa esa :fp gksA
इन परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि जिसमें नवीनता, समायिकता, असाधारणता और लोगों से जुड़ी सूचनाएं ही समावार है। तभी तो यह कहा जाता है कि सभी समाचार सूचना हो सकती है, लेकिन सभी सूचनाएं समाचार नहीं हो सकती है। क्योंकि समाचार में नवीनता का होना अनिवार्य है। जिसमें नवीनता नहीं होगी, उसे न कोई पढ़ना पसंद करेगा और न ही सुनना। इसलिए समाचार के लिए नवीनता के अतिरिक्त सामयिकता, विशिष्टता, असाधारणता, परिवर्तन, समाजिक मूल्यों और मर्यादाओं का उल्लंधन, अवमूल्यन का होना अनिवार्य हो गया है। इसके बिना समाचार की संरचना नहीं हो सकती है। कौन सी घटना या सूचना समाचार बन जाए इसके लिए उसकी नवीनता का ज्ञान होना जरूरी है। यदि इस बारे में स्पष्ट जानकारी नहीं होगी, तब तक आप समाचार संकलन के लिए आगे बढ नहीं सकते। इन्हीं तथ्यों को ध्यान में रखकर कहा गया है कि एक अच्छे पत्रकार को हर घटना या सूचना की नवीनता के बारे में जानकारी होनी चाहिए, नहीं तो ऐसा भी हो सकता है कि जिसे वह समाचार समझकर उसका संकलन कर रहा हो। वह समाचार ही नहीं हो।
इसे एक उदाहरण के माध्यम से समझा जा सकता है। यदि आप किसी अस्पताल में समाचार संकलन के लिए गए हैं, वह भी पहली बार, ऐसे में आपके लिए हो सकता है कि हर घटना या दृश्य समाचार हो। इस स्थिति में आपके लिए समाचार का चयन करना मुश्किल होगा, क्योंकि इस बात की अधिक संभावना होगी, कि आप जिसे समाचार समझकर उसका संकलन कर रहे हैं। वह

पुराना होने के कारण उसकी महत्ता समाप्त हो गई हो। इस प्रकार की संभावना सभी क्षेत्रों में होती है। चाहे वह राजनीति से संबंधित हो या अपराध से संबंधित घटना। इस स्थिति से बचने के लिए यह जरूरी है कि आप समाचार का चयन करते समय उसकी नवीनता अर्थात समय का ध्यान जरूरी है। क्योंकि जैसे ही समाचार के समय की ओर आपका ध्यान जाएगा, वैसे ही आपको इस प्रकार की उलझन से छुटकारा मिल जाएगा।

1-2-3 lekpkj p;u dh fof/k

समाचारों के चयन के लिए संवाददता को अपने कौशल, अनुभव और धैर्य का परिचय देना होता है। संवाददाता में जब तक समाचार सूंधने की कला नहीं होगी तब तक वह कितना भी नगर या क्षेत्रों की परिक्रमा कर ले। उसे समाचार नहीं मिलेगा। सूचना प्रौद्योगिकी ने जहां समाचार चयन की विधि में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया है। इसके विपरीत इस कारण संवददातओं की चुनौतियां भी बढ़ गई हैं। समचार चयन करने की कला में महारथ हासिल होना यह संवाददाता की पहली और सबसे बडी आहर्ता है। इसके लिए संवाददाता को सदैव सजग और जागरुक रहना पडता है। समाचार सूंधने का कौशल संवाददाता की इच्छा और प्रतिभा पर भी निर्भर करता है। किसी ने ठीक ही कहां है कि समाचार प्रत्येक स्थान पर है, बस जरूरत है उसे पहंचानने की और उस पर कार्य करने की। समाचार संकलन के लिए संवाददाता अपने अपने क्षेत्र के अनुसार योजना तैयार करता है। इसके अंर्तगत संवाददाता अपने समाचार के फालोअप पर विशेष नजर रखता है। समचारों के चयन के लिए अब संवाददाताओं द्वारा धड़ल्ले से मोबाइल का प्रयोग किया जाता है। यहां तक की खोजी खबर के लिए मोबाइल के जरिए फोटो लेने की प्रक्रिया संवाददातओं ने प्रारंभ कर दी है। दूसरी ओर समाचार अब डाक या फैक्स के माध्यम की बजाए ई मेल या फिर मॉडम के जरिए भेजे जाने लगे हैं। इस प्रक्रिया के कारण समाचार भेजने में जहां समय की बचत हो रही है, वहीं पाठकों को कम से कम समय में अधिक जानकारी प्राप्त हो रही है। इसके विपरीत इस पर लागत भी कम आ रही है। समाचार का चयन कैसे किया जाता है की प्रक्रिया को निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है। यदि किसी संवाददाता के पास एक अज्ञात फोन आया कि अमुक स्थान पर बस या रेल दुर्धटनाग्रस्त हो गई है। उस स्थिति में सबसे पहले संवाददाता क्या करेगा? यदि संभव हो तो सूचना देने वाले व्यक्ति से पहले घटना स्थल पर जाने की जानकारी प्राप्त कर लें। साथ ही वहां की क्या स्थिति है उसका एक अनुमान ले लें। यदि बड़ी दुर्घटना हुई है तो, सबसे पहले इसकी सूचना अपने मुख्य्य संवाददाता या संपादक को दें तथा फोटोग्राफर को साथ लेकर घटना स्थल की ओर जाएं। यदि रास्ते में सरकारी अस्पताल है तो वहां, जाकर यह पता लगाएं कि कोई घायल यात्री इलाज के लिए आया है या नहीं। यदि आया है तो उसे देखें। बात करने की स्थिति में है तो बात करें या उसके समीप कुछ समय चुपचाप रख रहकर वस्तु स्थिति को समझने का प्रयास करें। वहां जाते ही अपने आप को महिमा मंडित करने का कदापि प्रयास न करें, क्याोंकि कई बार ऐसा देखने में आया है कि अस्पताल प्रशासन को आपकी उपस्थिति का एहसास हो जाने के बाद उनके कार्य करने की शैली में भी बदलाव आ जाता है। ऐसी स्थिति होने पर आप को मानवीय पहलु से संबंधित स्टोरी करने का सुअवसर हाथ से निकल सकता है। स्थिति का अवलोकन करने के बाद एक बार घटना स्थल पर अवश्य जाएं, क्योंकि धटना स्थल पर नहीं जाने से और प्रत्यक्षदर्शियों के हवाले से समाचार लिखने पर त्रुटि की संभावना बनी रहती है।

1-2-4 lekpkj y[ku dh vk/kfud rduhd

समाचार संकलन और लेखन विशेष तकनीक की मांग करता है। भाग दौड़ की जिंदगी के कारण यह संभव नहीं है कि सभी पाठक समाचार के सभी पृष्ठ पढ़ ले। प्रत्येक पाठक की कोशिश होती

है कि वह कम से कम समय में अधिक से अधिक समाचारों को पढ ले। फिर भी कई बार ऐसा होता है कि समय की कमी के कारण पाठक सिर्फ मुख्य–मुख्य समाचारों को ही पढना चाहता है। ऐसे में संवाददाता के लिए यह जानना जरूरी है कि वह समाचार संकलन से लेकर लेखन तक किन–किन तकनीकों का प्रयोग करें जिससे कि वह अपने द्वारा लिखे गए समाचार को अधिक से अधिक पाठकों को पढ़ा सके। इन सब चीजों को देखते हुए प्रत्येक समाचार पत्र द्वारा एक नीति तैयार की गई है, जिससे कि पाठक को अपने रूचि का समाचार पढने के लिए अलग से माथापच्ची नहीं करना पड़े। इस क्रम में समचार पत्र के प्रथम पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक के स्थान निर्धारित कर दिये गए हैं। यही कारण है कि कई समाचार पत्रों ने स्थानीय समाचारों को प्रमुखता देने के लिए अलग से चार या छह पृष्ठ का जिलावार संस्करण प्रकाशित करना शुरू कर दिया है। ऐसा करने के पीछे यह समाचार प्रबंधकों और संपादकों द्वारा तर्क दिया गया कि सोलह पृष्ठ के अखबार में स्थानीय समाचारों को स्थान या प्रमुखता नहीं मिल पाती है, क्याोंकि सूचना प्रौद्योगिकी ने पूरे विश्व को Xykcy foy:t में परिर्वतित कर दिया है। इस कारण देश विदेशों की खबरों की अधिकता बनी रहती है। ऐसे में स्थानीय समाचारों के लिए उपयुक्त स्थान ही नहीं मिल पाता है। समाचार लेखन में सबसे महत्वपूर्ण जानकारी पहले दी जाती है। उसके बाद महत्व के अनुसार घटते क्रम में शेष जानकारी प्रदान की जाती है। इसलिए संवाददाता के लिए यह जानना जरूरी है कि समचार लेखन में कोई सी ऐसी तकनीक है कि जिनका प्रयोग करना अनिवार्य है।

,d lekpkj e: i:e[k :Ik l: rRo gk:r: gA

- आमुख
- डेटलाइन
- विलोम पिरामिड शैली
- समाचार का शेष भाग

vke:[k

समाचार के सारांश को आमुख कहा जाता है। इसके अंतर्गत किसी धटना के संबंध में क्या, कहां, कब, कौन, कैसे, क्यों इत्यादि की जानकारी देना अनिवार्य होता है। इनमें से पहले के चार क्रमशः चार ककार मूल जिज्ञास को और बाद के दो ककार कैसे और क्यों कारण को बताते हैं। इसका लेखन के बाद ही समाचार का विवरण संवाददाता द्वारा दिया जाता है। जनसंचार के विशेषज्ञों का मानना है कि कारण जिज्ञास की पूर्ति आमुख की जगह समाचार कथा के शेष कलेवर में किया जाना चाहिए।

आमुख को दूसरे शब्दों में मुखड़ा भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे इंट्रो कहा जाता है। इंट्रो अंग्रेजी शब्द इंट्रोडक्शन का संक्षिप्त रूप है, जिसका प्रचलन समाचार जगत में अपेक्षाकृत अधिक होता है। मुखड़ा का शब्दकोश में प्रयुक्त अथ चेहरा अथवा मुख होता है, जबकि आमुख का अर्थ आरंभ प्रस्तावना अथवा भूमिका होता है। आमुख के आकार को लेकर जनसंचार विशेषज्ञों में मतभेद है। लेकिन एक आदर्श आमुख एक अनुच्छेद का हो सकता है, जिसमें समचार लाइनों की संख्या बारह से पंद्रह के बीच की हो। ofj’B i=dkj Mk un fd kkj f=[kk d vuql kj बेहतर आमुख वह है, जिसमें शब्दों की संख्या 35 से लेकर 45 के बीच में हों। वरिष्ठ पत्रकार i:eukFk pr:o:nh ने भी आमुख के बारे में कहा है कि आमुख जितना छोटा हो, उतना ही अच्छा है। आमुख की महत्ता को देखते हुए इसे समाचार के मस्तिष्क की संज्ञा दी गई है। कुछ संचार विशेषज्ञों ने इसे समाचार की खिड़की भी कहा है।

एक अच्छा आमुख लिखने को लेकर कई बार संवाददाता उलझन में फंस जाता हैं। यही कारण है कि कई बार आमुख में ककार और सारे तत्वों को समेटने की कोशिश में समाचार की ऐसी रचना हो जाती है, जिससे पाठक उलझन में फंस जाता है। इसके लिए विशेषकर नए संवाददाातओं को आमुख लिखते समय विशेष सर्तक रहने की सलाह दी जाती है। प्रायः यह देखा गया है कि एक अच्छा आमुख लिखने की कला संवाददाता में समाचार लेखन के साथ–साथ अनुभव के साथ भी आती है। समचार पत्रों में कई बार आमुख रहस्य और नाटकीयता लिये हुए होता है। इस कारण समचार पढने के प्रति पाठकों में जिज्ञासा काफी अधिक बढ जाती है। शायद यही कारण है कि इन दिनों समाचार पत्रों में आमुख लिखने की परंपरागत परिपाटी समाप्त होती जा रही है। इससे एक कदम आगे बढते हुए एक राष्ट्रीय समााचार पत्र के संपादकीय बोर्ड ने एक प्रस्ताव पारित कर अपने सभी उपसंपादकों और संवाददाताओं को आमुख नहीं लिखने की सलाह दी है और कहा है कि वह समाचार का लेखन इस प्रकार के जिससे कि पाठक को उसकी बात आसानी से समझ में आ जाए और पाठकों में समाचार पढ़ने को लेकर जिज्ञासा बनी रहे।

MsV ykbu

समाचार लिखने से पूर्व समाचार पत्रों में डेट लाईन देने की परंपरा है, जबकि इलैक्ट्रानिक मीडिया में समाचार के अंत में डेट लाईन का उपयोग किया जाता है। समाचार एजेंसियों में भी डेट लाईन देने की परंपरा है। इन दिनों यह देखने में आया है कि कई समाचार पत्रों में भी डेट लाईन अब समाचार के नीचे दिया जाने लगा है। पहले यह परंपरा थी कि संवाददता जिस स्थान से समाचार का लेखन करता है उस स्थान का नाम पहले लिखता था, उसकी बाद में तिथि लिखता था, तथा इन्हें लिखने के बाद ही समाचार का आमुख लिखता था। लेकिन इस परिपाटी में भी तेजी से बदलाव आया है। अब प्रायः सभी समाचार पत्रों ने डेट लाईन में से तिथि देना बंद कर दिया है। तिथि देना बंद करने के पीछे यह तर्क दिया गया कि यदि किसी कारण भूलवश डेट लाईन में एक दिन पूर्व की तिथि लिख दी गई तो पाठक को लगता है कि समाचार पत्र ने उसके साथ धोखा किया है। इस प्रकार की गलतियों का खामियाजा कई बड़े समाचार पत्रों को भी भुगतना पड़ा है। इस कारण होने वाली असुविधा को देखते हुए अधिकांश समाचार पत्रों ने डेट लाईन देने की परिपाटी बंद ही कर दी है।

foykse fijkfeM “kSyh

विलोम पिरामिड शैली का प्रयोग समाचार लेखन के लिए किया जाता है। पिरामिड का आधार भाग चौड़ा होता है और शीर्ष तक पहुंचते हुए उसकी चौडाई क्रमशः कम हो जाती है और पिरामिड की चोटी नुकीली हो जाती है। पिरामिड को उलट दिया जाए तो चौडा भाग उपर तथा नुकीला भाग नीचे होगा। संवाद संप्रेषण की तकनीक के तहत विलोम पिरामिड शैली का तात्पर्य यह है कि सबसे पहले महत्व की चीजें उपर तथा कम महत्व की चीजें बाद में नीचे लिखी जाएं। क्योंकि समाचार के महत्व का क्रम उपर से नीचे आते हुए क्रमशः धटता जाता है। इसलिए सबसे पहले समाचार का चरमोत्कर्ष पाठक को बता दिया जाता है। समचार लेखन की परंपरागत शैली आज भी यह विद्यमान है, क्योंकि इसका लाभ यह है कि पाठक को सबसे पहले उसे जानने योग्य महत्वपूर्ण बातें बता दी जाती हैं। इस शैली का सबसे महत्वपूर्ण लाभ उपसंपादकों को उस समय मिलता है जब उसे स्थान की कमी के कारण समाचार को नीचे से काट कर छोडने में आसानी होती है। यदि ऐसा नहीं होता तब उपसंपदकों को समाचारों के संपादन करते समय जगह की कमी होने पर उसे बार–बार समाचार का लेखन करना पड़ता।

कई बार विलोम पिरामिड शैली में समाचार लिखने के कारण कुछ खामियां भी रह जाती है। आमुख में संपूर्ण समाचार का सारांश अथवा सार संक्षेप लिखने के कारण शेष कलेवर में उसकी पुनरावृति होती है। आमुख में छह ककार अथवा अधिकतम महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश कराने पर कई बार समाचार बोझिल हो जाता है तथा वाक्य संरचना जटिल हो जाती है। इस कारण समाचार की रोचक प्रस्तुति नहीं हो पाती है। जिससे आमुख के नीचे का समाचार पढ़ने के प्रति पाठक की जिज्ञासा समाप्त हो जाती है। इसके चलते अब समाचार पत्रों में इस शैली का प्रयोग घटने लगा है।

lekpkj dk “k’k Hkkx

समाचार में आमुख के बाद बचे भाग को शेष कलेवर कहते हैं। इसके अंतगर्त समाचार का न केवल विस्तार किया जाता है, अपितु पूरे घटना क्रम की जानकारी विस्तार से भी दी जाती है। इसीलिए कहा गया है कि यदि समाचार का आमुख यदि सिर है तो शेष कलेवर उसका धड़ है। शेष कलेवर का विभाजन चार से पांच या अनके अनुच्छेदों में किया जाता है। इसमें समाचार के कारण और अन्य विवरणों की विस्तार से दी जाती है। ऐसा करने से समाचार में सजीवता का संचार बना रहता है और पाठक में समाचार पढने की लालसा बनी रहती है। भाषणों का समाचार संकलन करते समय यह आवश्यक नहीं है कि संप्रेषक द्वारा पहले कही गई बात को पहले लिखी जाए। ऐसी स्थिति में समाचार तत्व के घटते हुए महत्व में समाचार लिखा जाता है। समाचार के शेष कलेवर में भाषा की सरलताा होनी चाहिए तथा उसमें रोचकता के साथ–साथ अच्छी प्रस्तुति का होना भी आवश्यक है।

1-2-5 lekpkj l dyu d {k=

पल–पल की घटनाओं के बारे में संकलन कर उसे समाचार की शक्ल में प्रस्तुत करना संवाददाताओं के लिए चुनौती पूर्ण कार्य हो गया है। ऐसे में यदि संवाददाताओं को समाचार संकलन के क्षेत्र के बारे में जानकारी नहीं होगी, तब तक उसे समाचारों का संकलन या चयन करने में काफी दिक्कतों का सामना करना पडेगा, इसलिए पत्रकारिता के छात्रों को अभी से समझ लेना चाहिए कि वे कौन–कौन से क्षेत्र हैं, जिनमें समाचारों का संकलन किया जाता है। चौबीस घंटे के खबरिया चैनलों की भरमार और जिलावार समाचार पत्रों के संस्करणों ने समाचार संकलन के क्षेत्र को और अधिक व्यापक व चुनौतीपूर्ण बना दिया है, इसी का परिणाम है कि अब राष्ट्रीय समाचार पत्रों में भी जिला स्तर पर संवाददाताओं के मध्य बीटों अर्थात क्षेत्र का निर्धारण किया जाने लगा है।

lekpkj l dyu d fuEufyf[kr {k= g

- जिला प्रशासन
- जिला पुलिस
- राजनीतिक
- सामाजिक
- आर्थिक
- सांस्कृतिक
- मानवीय रूचि

- खेल
- शिक्षा
- कृषि एवं पशुपालन

ftyk i kklu % जिला उपायुक्त सहित विभिन्न सरकारी कार्यालयों के कार्य, गतिविधियां, योजनाएं और समस्याएं।

ftyk iqfyl % अपराध एवं उन पर नियंत्रण।

jktuhfrd % ग्रामीण, नगर, जिला, प्रदेश, देश और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक गतिविधियां।

lkekftd % रचनात्मक विकास, जन कल्याण, नव निर्माण, समाज सुधार, सामाजिक कुरीतियां, परोपकार।

vkfFkZd : व्यापारिक गतिविधियां, औद्योगिक, कालाबाजारी, तस्करी, रहन–सहन।

lkaLd`frd : साहित्य, कला, नृत्य व संगीत, धार्मिक आयोजन, प्रवचन, त्यौहार एवं पारंपरिक मान्यताएं।

ekuoh; :fp : समायकिता, मानवीय गुणों व दुर्बलताओं से संबंधित प्रसंग, साहस, भय, त्याग और स्वार्थ, नये खोज और आविष्कार प्राकृतिक प्रकोप इत्यादि

[ksy : ग्रामीण, जिला, राज्य स्तरीय विभिन खेल प्रतियोगिताएं, प्रशिक्षण एवं चयन।

f'k{kk : स्कूल, कालेज, विश्वविद्यालयों में होने वाली गतिविधियां।

d`f'k ,oa i'kqikyu : खेती एवं पशुपालन संबंधी।

1-2-6 lekpkj ladyu ds egRoi.kZ midj.k

समाचारों का संकलन एवं प्रस्तुतिकरण सही तरीके से तभी हो सकता है, जब संवादाताओं के पास समाचार संकलन के महत्वूपर्ण उपकरण मौजूद हो। एक समय था जब संवाददाताओं के लिए शॉर्ट हैंड अर्थात शीघ्र लिखने की कला का ज्ञान होना अनिवार्य था, सूचना क्रांति ने उपकरणों के प्रयोग में भी नई क्रांति ला दी है, जिसका सर्वाधिक लाभ मीडिया कर्मी या संवाददाता ले रहे हैं। तकनीकी विशेषज्ञ नहीं होने के बावजूद वे समाचारों का संकलन आधुनिक उपकरणों के माध्यम से कर रहे है। इसे देखते हुए पत्रकारिता के छात्रों को यह जानना नितांत आवश्यक हो गया है कि वे कौन कौन से उपकरण हैं, जिनका प्रयोग उन्हें आने वाले समय में करना होगा। पत्रकारिता के छात्र यदि

अध्ययन के दौरान ही इन उपकरणों के प्रयोग का व्यावहारिक प्रशिक्षण ले कर उनमें निपुणता हासिल कर लें, तो उनके लिए मीडिया के क्षेत्र में कार्य करना आसान होगा।

समाचार संकलन के उपकरणों को दो भागों प्रिंट मीडिया और इलैक्ट्रानिक मीडिया में विभाजित कर अच्छी तरह समझा जा सकता है।

fi:V ehfM;k % प्रिंट मीडिया अर्थात समाचार पत्र, साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र पत्रिकाओं के लिए संवाददाताओं को परपम्परागत उपकरण पेन और कांपी के अतिरिक्त निम्नलिखित उपकरणों की आवश्यकता पडती है।

मोबाइल
डिजीटल कैमरा
पॉकेट टेपरिकार्डर
डायरी
स्वयं का वाहन
महत्वपूर्ण फोन नम्बर और मोबाइल नम्बर

by:DVªkfud ehfM;k : इलेक्ट्रानिक मीडिया के लिए आवश्यकता होती है

मोबाइल
कैमरा मैन
लाइव वेन
लैपटॉप कम्प्यूटर
माइक
कम्प्यूटर
डायरी या नोट बुक
महत्वपूर्ण फोन एवं मोबाइल नम्बर

प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया के अधिकांश उपकरणों में समानता होने के बावजूद कुछ भिन्नताएं हैं। इसके विपरीत समाचारों के संकलन का कार्य दोनों में एक जैसा ही है। कुछेक अवसर ऐसे होते हैं जहां पर प्रिंट मीडिया के लिए संवादों को रिकार्ड किया जाना अनिवार्य नहीं है, लेकिन इलेक्ट्रानिक मीडिया में संवादों की रिकार्डिंग और फिल्मांकन के बिना संवाददाता के लिए स्टोरी फाइल करना मुश्किल है।

1-2-7 lekpkj ladyu dh lko/kkfu;k

संपादक, समाचार संपादक, उपसंपादक की तरह ही एक संवाददाता को समाचारों का संकलन करते समय मानवीय मनोविज्ञान तथा पाठकों की रूचियों का पारखी होना चाहिए। समाचारों का संकलन करते समय कई बार ऐसी परिस्थितियां पैदा हो जाती है, जिस दौरान संवाददाता के लिए समाचार संकलन करना कठिन ही नहीं दुभर हो जाता है। इसलिए संवाददाताओं को समय–समय पर संपादकों द्वारा हिदायतें भी दी जाती रहती हैं। समाचार संकलन के दौरान संवाददाताओं को निम्नलिखित सावधानियां बरतनी चाहिए।

1. सुनी सुनाई बातों पर समाचारों का संकलन नहीं करे।
2. धरना, प्रदर्शन, दुर्धटना, प्रेस कांफ्रेंस इत्यादि आयोजन स्थलों पर संवाददाता स्वयं जाए।
3. आयोजन स्थल पर उसका व्यवहार मित्रवत होना चाहिए, न कि धौंस दिखाए।

4. प्रत्येक जानकारी को डायरी में नोट करे, जिससे कि समाचार लिखते समय कोई महत्वपूर्ण जानकारी नहीं छूट जाए।
5. समाचार पत्र की प्रतिष्ठा व गरिमा बनी रहे। इसके लिए सदैव सजग रहे।
6. आचारण मित्रवत हो तथा कोई ऐसा कार्य न कर दे, जिससे कि समाचार प्राप्त करने में उसे कठिनाईयों का सामना करना पडे।
7. धैर्य और साहस का परिचय देते हुए उपयुक्त समय की तलाश कर संबंधित व्यक्ति से पूछताछ करें, उदहरण स्वरूप, किसी दुर्धटाना में किसी व्यक्ति की मौत हो गई हो या किसी की हत्या कर दी गई, वहां पहुंचते ही ऐसे प्रश्नों की बौछार न शुरू कर दे, जिससे वहां उपस्थित परिजनों को परेशानी होने लगे।

1.3 lkj

lekpkj fdls dgrs gS\

समाचार का शाब्दिक अर्थ सम्यक अथवा समान आचार, व्यवहार और आचारण से है। समाचार का संधि विच्छेद होता है सम जोड़ आचार अर्थात् सम्यक आचार।
समाचार को किसी एक परिभाषा में बांध कर नहीं रखा जा सकता हैं। समाचार को अंग्रेजी में न्यूज कहते हैं। इसकी अनेक परिभाषाएं हैं। जैसे पाठक जिसे जानना चाहे, वही समाचार है।
समाचार वह है जिसे प्रस्तुत करने में पत्रकार को सबसे अधिक संतोष हो, समाचार घटनाओं का विवरण है, घटना स्वयं में समाचार नहीं है, समाचार गतिशील साहित्य है।

lekpkj ladyu ds {ks= जिला प्रशासन, राजनीति, जिला पुलिस, कृषि व पशुपालन, मानवीय रूचि, संस्कृति इत्यादि।

lekpkj ladyu ds egRoiw.kZ midj.k समाचार संकलन से लेकर प्रस्तुतीकरण में लगातार कम होती समय अवधि को देखते हुए, इससे जुड़े उपकरणों की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। समाचार संकलन के निम्नलिखित महत्वपूर्ण उपकरण है, जैसे मोबाइल, कम्प्यूटर, डायरी, डिजिटल कैमरा इत्यादि।

1-4 fof'k"V 'kCnkoyh

chV % समाचार संकलन के लिए संवाददाता के कार्यक्षेत्रों को बीट कहते हैं।

MsV ykbu % समाचार पत्रों में समाचार के साथ–साथ डेट लाइन को भी प्रकाशित किया जाता है, जबकि इलैक्ट्रानिक मीडिया के समाचारों में समाचार के अंत में कहा जाता है। डेट लाइन से यह आसानी से पाठक को या दर्शक को पता चल जाता है कि यह समाचार किस स्थान से लिखा गया है या प्रसारित किया गया है।

1-5 iz'u ,oa leL;k,a

1. समाचार संकलन किसे कहते हैं. आधुनिक पत्रकारिता में इसकी चुनौतियों की विवेचना करें?
2. एक संवाददाता को समाचारों का संकलन किस प्रकार करना चाहिए? उस दौरान बरती जाने वाली प्रमुख सावधानियों का विस्तार पूर्वक उल्लेख करें?.
3. पत्रकारिता में समाचार संकलन के महत्व पर विस्तार से प्रकाश डाले?
4. समाचार क्या है? समाचार की परिभाषा जाने बिना समाचार का संकलन संभव है या नहीं? यदि संभव है या नहीं है तो इसकी विवेचना करें।
5. समाचार संकलन के क्षेत्र व उपकरण कौन–कौन से है? इसकी महत्ता का विस्तारपूर्वक वर्णन करें।
6. समाचारों का संकलन करते समय सावधानी जरूरी है या नहीं इस बारे में अपने विचार पांच सौ शब्दों में लिखें।
7. निम्नलिखित में से किन्ही दो पर टिप्पणी लिखें

क समाचार किसे कहते हैं?
ख समचार लेखन की तकनीक
ग समाचार संकलन के क्षेत्र
घ समाचार संकलन के उपकरण

1-6 lnHk iLrd

d- liknu dyk lthoHkkukor

[k- fonk fjikfVx jke “kj.k tkkh

x- Nk;kokn;xhu lkfgfR;d i=dkfjrk Mk- je kpUn f=ikBh

?k- ehfM;k ,M lklk;Vh ohj okyk vxoky

M- 0;kolkf;d i=dkfjrk ,e-Hkh-dkeFk

Block – A   Unit –II

Lesson 2

Lkekpkj ys[ku ds fl)kar] dk;Z vkSj ftEesnkjh

ys[kd % Jh v:.k dqekj   iqujh{kd % Jh fefgj jatu ik=

<kkapk

2.0 mn~ns';

2.1 ikB ifjp;

2.2 fo’k; oLrq iLrqfrdj.k

2.2.1 lekpkj ys[ku dh ifjHkk’kk

2.2.2 lekpkj ys[ku ds rF;

2.2.3 lekpkj ys[ku ds fl)kar

2.2.4 lekpkj ys[ku esa laoknnkrk ds dk;Z

2.2.5 lekpkj ys[ku esa laoknnkrk dh ftEesnkjh

2.2.6 lekpkj ys[ku dh vk/kqfud rduhd

2.2.7 lekpkj ys[ku dh lko/kkfu;ka

2.3 lkj

2.4 fof”k’V “kCnkoyh

2.5 vkdyu iz”ukoyh

2.6 lanHkZ iqLrdsa

2.0 mn~ns'; % इस अध्याय को पढकर पत्रकारिता के छात्र समाचार लेखन के सिद्धांत, कार्य और जिम्मेदारी के निम्नलिखित पहलुओं को विस्तार पूर्वक जान जाएंगे और उन्हें जानने व समझने में आसानी होगी।

2.1 ikB ifjp; % किसी भी घटनाक्रम को समाचार बनाने के लिए उसे तकनिकी रुप से लिखने की आवश्यकता होती है। इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थियों को पता चल जाएगा कि साधरण रुप से लिखी गई कहानी और समाचार में क्या अंतर होता है। इस पाठ की मदद से

विद्यार्थियों को यह भी पता चलेगा कि एक संवाददाता को समाचार लिखते समय किन–किन बातों का ध्यान रखना पडता है।

2.2 fo'k; oLr| i:Lr|frdj.k

2.2.1 समाचार लेखन की परिभाषा

2.2.2 समाचार लेखन के तथ्य

2.2.3 समाचार लेखन के सिद्धांत

2.2.4 समाचार लेखन में संवाददाता के कार्य

2.2.5 समाचार लेखन में संवाददाता की जिम्मेदारी

2.2.6 समाचार लेखन की आधुनिक तकनीक

2.2.7 समाचार लेखन की सावधानियां

2.2.1 lekpkj y:[ku dh ifjHkk'kk

समाचार संकलन के दौरान प्राप्त तथ्यों की समय के साथ प्रस्तुति ही समाचार लेखन है। जन–जीवन की गतिशीलता और सक्रियता समाचार में प्रतिबिंबित होती है। समाज में जो कुछ हो रहा है, उससे अवगत कराना या उसके बारे में लिखे जाने के कारण ही समाचार को सामाजिक चेतना का दर्पण कहा जाता है। मूल्यों के नियामक के रूप में भी समाचार को प्रतिष्ठित किया जाता है। इस कारण यह जरूरी है कि इसके लेखन में सूझ–बूझ और कौशल का पुट हो। समाचार का समाज और जनमत निर्माण पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह अनिवार्य हो गया है कि इसके लेखन में वस्तुनिष्ठता हो। समचार लेखन को कुछ लोग इतिहास लेखन भी कहते हैं, लेकिन वास्तव में यह जल्दी–जल्दी में लिखा गया इतिहास है। प्रमाणिकता और विश्वसनीयता इसके मूल बिंदु है, क्योंकि संवाददाता ने जिस घटना को देखा या समझा है, उसका सूक्ष्म परिक्षण और विश्लेषण के आधार पर जिन तथ्यों को प्राप्त कर उसे सजीव अभिव्यक्त किया है, वही समाचार लेखन हैं। इसके आधार पर समाचार लेखन की परिभाषा इस प्रकार दी जाती है। समाचार को पहचानकर उसका तथ्यपरक, सारगर्भित एवं समग्र प्रस्तुति ही समाचार लेखन है। धटना प्रसंग के घटित होने या सम्मेलन, कार्यक्रम अथवा समारोह की पूर्व औपचारिक सूचना के संबंध में यथासंभव तटस्थ और तथ्यात्मक जानकारी को एक विशिष्ट शैली में लिपिबद्ध करने की कला और कौशल को समाचार लेखन कहा जाता है।

2.2.2 lekpkj y:[ku d: rF; % किसी भी समाचार में तथ्य का होना जितना महत्वपूर्ण है उतना ही महत्वपूर्ण है इन तथ्यों को संवाददाता द्वारा समाचार लेखन में समाहित करना। समाचार लिखते समय संवाददाता को निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना जरूरी है।

fo'k; oLr| % किसी भी समाचार को तथ्य के बिना नहीं लिखा जा सकता है। तथ्य के बिना लिखा गया समचार न केवल अधूरा है, बल्कि अंधेरे में तीर चलाने के बराबर है। इसलिए समाचार लिखते समय तथ्य के रूप में आमुख अर्थात इंट्रो की जानकारी होना जरूरी है। इससे पूर्व

संवाददाता को विषय वस्तु की जानकारी होना न केवल जरूरी है, बल्कि अनिवार्य है। बिना विषय वस्तु की जानकारी के समाचार लेखन की प्रक्रिया को शुरू नहीं किया जा सकता है। विषय वस्तु का निर्धारण विभिन्न स्रोतों से प्राप्त धटना के तथ्यों को एकत्रित किया जाता है। उक्त आधार पर ही विषय वस्तु का निर्धारण किया जाता है। इसके साथ–साथ इसमें इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है कि उक्त घटना या विषय वस्तु को किसी दूसरे के चश्मा से न देखा जाए।

Lo:Ik % समचार लेखन में इसका स्वरूप भी महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि बिना स्वरूप निर्धारण के एक अच्छा समाचार नहीं लिखा जा सकता है। समचार पत्रों और पत्रिकाओं में बकायदा समाचार का स्वरूप क्या हो इस पर विशेष ध्यान दिये जाना लगा है, इसके तहत समाचारों का आकार से लेकर तथ्यों पर विशेष ध्यान दिया जाता है। स्वरूप कैसा हो इसका निर्धारण समाचार के विषय पर भी निर्भर करता है अर्थात यदि फीचर, भेंटवार्ता, विश्लेषण या रिपोर्टताज लिखा जा रहा है तो उसका स्वरूप भी अलग होगा और उसमें तथ्य भी अलग अलग होंगे।

2.2.3 lekpkj y[ku d fl)kr

समाचार लेखन की महत्ता और गरिमा बरकरार रहे, इसके लिए जरूरी है कि संवाददाता को निम्नलिखित सिद्धांतों या नियमों का पालन करे।

- oLrqfu'Brk
- lkekftd eY;
- dkuuh O;o/kku
- n k dh lqj{kk
- fu'i{krk
- tu:fp

oLrqfu'Brk % उसी समाचार को सर्वश्रेष्ठ माना गया है जो सत्यं, शिवम् और सुंदरम् हो। समाचार सत्य से अवगत कराता है। इसके लिए जरूरी है कि संवाददाता सदैव सत्य की खोज करे। इसे ध्यान में रखकर ही संवाददाता सदैव तथ्य से सत्य की खोज में जुटा रहता है। घटना का तथ्यों के आधार पर विश्लेषण और विवेचन ही वस्तुनिष्ठता है। इसलिए संवाददाता को सलाह दी गई है कि वह अपने पूर्वाग्रह, विद्वेष, व्यक्तिगत संबध, अपना विचार और आग्रह इत्यादि को छोड़कर ही समाचार का लेखन करे। उसी समाचार को विश्वसनीय माना जाता है, जिसमें सभी पक्षों का सम्यक संतुलन बनाया गया हो, यही कारण है कि वस्तुनिष्ठता को समाचार लेखन का मूल सिद्धांत कहा गया है।

lkekftd eY; : समाचार समाज का दर्पण होता है। इसलिए यह अपेक्षा की जाती है कि समाचारों में सामाजिक मूल्यों और मर्यादा को बनाए रखा जाए। ईमानदारी, सहिष्णुता, सदाचार, कर्तव्यनिष्ठता, परोपकार, स्नेह, सौजन्य, सह–अस्तित्व, आत्मनियंत्रण, अहिंसा, सत्यनिष्ठा इत्यादि समाजिक मूल्य और मर्यादाएं हैं। भ्रष्टाचार से संबंधित समाचारों को इसलिए प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है, जिससे कि समाज में इस प्रकार की प्रवृति को बढ़ावा नहीं मिले। समााज में आज भी ईमानदारी को सर्वश्रेष्ठ स्थान है। इसे देखते हुए संवाददाता को चाहिए कि यदि इस प्रकार के उदाहरण सामने आए तो उसे भी प्रकाशित करने से परहेज न करे। अपराध या हिंसा से संबंधित समाचारों को इसलिए प्रकाशित किया जाता है, जिससे कि समाज को इस बारे में पता चले और

वह अपराधिक प्रवृति के लोगों से सावधान रहे। इसकी महत्ता को देखते हुए ही कहा जाता है कि यह संवददाता का मार्गदर्शन करता है, वही संवददाता इसके माध्यम से समाज को समय–समय पर सामाजिक मूल्यों की गिरवाट के प्रति सजग और सचेत भी करता है।

dkuuh 0;o/kku % भारतीय संविधान की धारा 19–1ए में भारत के प्रत्येक नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतं़त्रता का अधिकार प्राप्त है। भारत में भी पत्रकार या पत्रकाारिता को अलग से कोई अधिकार नहीं है। इस कारण अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार के तहत ही समाचार पत्रों का प्रकाशन किया जाता है। पत्रकार को आलोचना का अधिकार है, लेकिन उसे एक सीमा में मर्यादित होकर। ऐसा नहीं करने पर वह सजा का भागीदार भी हो सकता है। इसे देखते हुए समाचार लेखन करते समय संवददाता को इन बातों से बचना चाहिए, जो आगे चलकर कानूनी व्यवधान उत्पन्न कर दे। संवाददाता को इससे बचने के लिए किसी व्यक्ति की मानहानि, न्यायालय की अवमानना, शासकीय गुप्त बात अधिनियम, भारतीय प्रतिलिप्याधिकार अधिनियम, भारतीय दंड संहिता, संसदीय विशेषाधिकार इत्यादि कानूनों का ज्ञान होने के साथ–साथ उसका पालन करना चाहिए।

n k lj{kk : देश की एकता और अखंडता को अक्षुण बनाये रखने में पत्रकारिता की बहुत बड़ी भूमिका होती है। अंतर्राष्ट्रीय विषयों में राष्ट्र की सुरक्षा के तार कहीं न कहीं पत्रकारिता से अवश्य जुडे रहते हैं। इस कारण समाचार लिखते समय संवददाता को इसके प्रति हमेशा सजग रहना चाहिए कि कहीं उसकी थोडी सी असावधानी से राष्ट्र की सुरक्षा से संबंधित जानकारी सार्वजनिक न हो जाए। विशेषकर युद्ध के दिनों में या आंतरिक कलह की स्थितियों में ऐसे किसी प्रकार की समाचार का लेखन नहीं करना चाहिए, जिससे कि सैनिकों और उनके परिजनों का मनोबल टूट जाए। उस समय में समाचार लेखन पर पाबंदी के सिद्धांत का पालन करना सभी संवाददातओं के लिए अपरिहार्य होता है।

fu'i{krk : समाचार संकलन से लेकर लेखन तक में संवाददाता के लिए निष्पक्षता का पालन करना अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा नहीं करने पर समाचारों की विश्वसनीयता समाज से समाप्त हो जायेगी। समाज हित में पक्ष और विपक्ष दोनों को समान महत्व देना चाहिए, क्योंकि ऐसा नहीं होने पर सत्यता के दबने की संभावना बढ़ जाती है। यही कारण है कि पत्रकारिता को लोकत्रंत का चौथा स्तंभ कहा गया है।

tu:fp % संवाददाता के समक्ष जनरूचि की पहचान करके उसे प्रस्तुत करना एक कठिन चुनौती होती है। विशेषकर अश्लीलता, अनैतिकता और अकर्तव्य के प्रति लोगों को जागरूक करना भी संवाददाता को चाहिए। अर्थात ऐसे विषय जो समाज की रूचि के होते हैं, लेकिन उससे समाज में विकृति आती है। उसे रोकने के प्रति संवाददाता को सजग रहना चाहिए। इस विषय में संवाददाता की विशेष भूमिका होती है। इसलिए कई बार देश में सांस्कृतिक हमला हो रहा है कहते हुए मीडिया से रोकने की मांग भी की जाती है।

2.2.4 lekpkj y[ku e loknnkrk d dk;

पत्रकारिता के जन्मकाल से ही शासन ने इस पर अंकुश लगाने की चेष्टा शुरू कर दी थी, लेकिन पत्रकारिता का विकास दिन–ब–दिन तीव्र गति से होता गया और इसकी आवाज बंद होने की बजाय मुखर और प्रखर होती चली गई है। पत्रकार सत्य को समाज के सम्मुख रखकर अपने दायित्वों का निर्वहण करता है, इस कारण समचार संकलन से लेकर लेखन कार्य तक संवाददाता

की जिम्मेदारी पहले से काफी अधिक बढ गई है। विगत कुछ दशक से पीत पत्रकारिता के बदलते प्रचलन ने संवाददाता को कटधरे में ला खड़ा कर दिया है। और तो और मोबाइल फोन के जरिए अश्लील फोटो खींचने और फिर उसे अश्लीलता के साथ पड़ोसी की घटनाओं ने पत्रकारिता के अर्थ पर प्रश्न चिन्ह लगा दिया है। संवाददाता के कार्य की महत्ता को रेखांकित करते हुए कहा गया है कि अकुशल संवाददाता के हाथ में समाचार डायनामाइट के समान विस्फोटक हो सकती है। इससे समाज को भारी नुकसान हो जाता है। इसीलिए कहा गया है कि एक कुशल संवाददाता समाचार को रोकता तो नहीं है, लेकिन वह उसे इस प्रकार प्रस्तुत करता है जिससे कोई गलतफहमी पैदा नहीं होती है। कुशल संवाददाता ऐसी परिस्थितियों में दोनों पक्षों का मत प्राप्त करके ही समाचार को संतुलित बनाने का प्रयास करता है। समाचार संकलन करने की गति में जो परिवर्तन आया है। उसे देखते हुए एक संवाददाता में गुप्तचर, मनोवैज्ञानिक और वकील के गुण होने चाहिए। संवाददाता की सबसे बडी पूंजी और जिम्मेदारी उसकी समाज के प्रति विश्वासपात्र होना है, क्योंकि जब तक संवाददाता में विश्वसनीयता नहीं होगी तब तक कोई भी सूत्र उसे समाचार देना तो दूर उससे बात करने से भी हिचकेगा। यह बात सभी स्तर के स्त्रोतों के साथ लागू होती है, क्योंकि समाचार के संपर्क सूत्र छोटा हो या बड़ा अधिकारी या फिर राजनीतिज्ञ वह कभी भी नहीं चाहेगा कि उसके बारे में लोगों या अपने अधिनस्थ कर्मचारियों को पता चले कि अमुक समाचार उसी ने प्रकाशित करवाया होगा।

2.2.5 lekpkj ys[ku esa laoknnkrk dh ftEesnkjh

lekpkj ys[ku esa laoknnkrk dh ftEesnkjh dks fuEufyf[kr fo'k;ksa esa ckaVdj vPNh rjg le>k tk ldrk gS-

- lekt ds izfr
- i=dkfjrk ds izfr
- laLFkku ds izfr

lekt ds izfr % पत्रकारिता का मूल उद्देश्य समाज के प्रति ही है। वर्तमान में भले ही पत्रकारिता मिशन से बदल कर प्रोफेशन हो गई है, लेकिन अभी भी इसका मूल उद्देश्य बरकार है। यही कारण है कि प्रत्येक समाचारों का संकलन करते समय उसके सामाजिक सरोकार को ध्यान में रखा जाता है। इसी के चलते कहा गया है कि विश्व में पत्रकारिता का जन्म मूल रूप से सामाजिक दायित्वों के निर्वहण के लिए हुआ है। यहां उल्लेखनीय है कि 1766 में ईस्ट इंडिया कंपनी के एक कर्मचारी विलियम बोल्टस ने कलकत्ता में कलकत्ता के काउंसिल हाउस पर कंपनी की गोपनीय तथ्य समाचार के रूप में एक पोस्टर की शक्ल में चिपकायी थी। इसका मूल उद्देश्य समाजिक सरोकार ही था। यही घटना भारत में पत्रकारिता का जन्म जाता माना जाता है। 1780 में ईस्ट इंडिया के एक अन्य कर्मचारी जेम्स आगस्टस हिस्की ने एक समाचार पत्र कलकता जनरल ऐडवरटाइजर प्रकाशित किया था। समाचार पत्र चार पृष्ठों का था। समाचार प्रकाशित करने के कारण जेम्स आगस्टस हिक्की को सजा भुगतनी पड़ी। उक्त घटना से स्पष्ट हो गया कि सामाजिक दायित्वों की पूर्ति के लिए ही पत्रकारिता का भारत में प्रदुर्भाव हुआ। साथ ही यह भी उल्लेखित हो गया कि सामाजिक सरोकार जैसे विषय को उठाने वाले पत्रकारों को सजा भी भुगतने के लिए तैयार रहना होगा, क्योंकि कभी भी किसी समय ऐसा हो सकता है, इसका दूरगामी प्रभाव भारत में स्वत्रंतत्रा आंदोलन के दौरान दिखाई दिया। स्वत्रंतत्रा आंदोलन के दौरान पत्रकारिता ने घोषित रूप अंग्रेजों के खिलाफ समाज को जागृत करने का कार्य किया, वहीं जहां–जहां जरुरत हुई अघोषित रूप से आंदोलन संचालित करने का भी कार्य किया, उसके बाद से ही पत्रकारिता का स्वरूप लोक कल्यण और लोकहित में परिवर्तित हो गया। नई संचार क्रांति ने भारत की स्वत्रंतत्रा

के बाद पत्रकारिता के स्वरूप को भले ही बदल दिया है, लेकिन अभी वह अपने मूल उद्देश्य समाज के प्रति कायम है, इसी का परिणाम है कि प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने समय समय पर स्टिंग आपरेशन शुरू कर एक नई पत्रकारिता को जन्म दिया है। उक्त पत्रकारिता को लेकर जहां समाज में उसे प्रशंसा मिली है, वहीं कुछेक वर्ग इसका विरोध भी कर रहा है। जो कुछ भी हो इससे यह स्पष्ट हो गया है कि समाचार संकलन करते समय एक पत्रकार की पहली जिम्मेदारी समाज के प्रति हो जाती है.। समाज के प्रति उत्तरदात्यिव को निभाने के लिए निम्नलिखित विषयों पर समाचारों का प्रकाशन किया जा सकता है।

- समाज का स्वस्थ और ज्ञानवर्धक मनोरंजन।
- समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भष्टाचार का पर्दाफाश।
- मानवीय गुणों का विकास।
- समाज की ऐसी घटनाओं को प्रकाशित करना जिससे सामाजिक बुराईयों पर अंकुश लगे।
- . राष्ट्रीय चेतना को जागृत करना।
- पाठकों की अभिरूचि का ध्यान रखना।
- समाज और सरकार के मध्य एक कड़ी का काम करना।
- समाज के घटित घटनाओं की सत्यता के बारे में अवगत करना।
- सामाजिक विद्वेष और सांप्रदायिक दंगे को रोकना।
- शोषित और पीड़ितों की आवाज को उठाना।
- सामाजिक और जन समस्याओं के समाधान से संबंधित।
- सामाजिक मूल्य और मर्यादाओं को अक्षुण बनाए रखना।
- सामाजिक अंधविश्वासों को दूर करना।

i=dkfjrk d: ifr ½ आधुनिक युग में पत्रकारिता का स्वरूप परिवर्तित हो गया हो, लेकिन उसकी मूल आत्म अभी भी किसी न किसी रूप में कायम है, अर्थात पत्रकारिता व्यवसाय होने के बावजूद उसमें मिशन के मूल तत्व कायम है, क्योंकि बिना मिशन के समाचारों का संकलन कर पाना किसी पत्रकार के लिए संभव नहीं है। जब तक पत्रकार में अपने कार्य को एक मिशन के रूप में नहीं लेगा तब उसके लिए समाचारों संकलन करना न केवल मुश्किल होगा, बल्कि दुर्भर भी होगा।

इस बात को एक उदाहरण के रूप में समझा जा सकता है। किसी सरकारी या गैर सरकारी दफतर में कार्य करने की शैली टरकाउ होती है, जबकि समाचार संकलन में इस प्रवृति को नहीं अपनाया जा सकता है, अर्थात एक संवाददाता या पत्रकार को किसी भी समाचार का संकलन चाहे वह घटनात्मक हो या नहीं उसे एक निश्चित समय सीमा के अंदर करना होता है। ऐसा नहीं करने पर न केवल समाचार की उपयोगिता समाप्त हो जाती है, बल्कि ऐसी प्रवृति रखने वाले पत्रकार भी अपने प्रोफेशन में अधिक समय तक टिक नहीं पाता है। ऐसे में यह जरूरी हो गया है कि पत्रकार समाचारों का संकलन करते समय सामाजिक दात्यिवों का ख्याल रखते हुए पत्रकारिता के आदशों को भी ध्यान में रखे, तभी तो कहा गया है कि सेवाव्रती संस्कार पत्रकारिता का प्राणतत्व है और सत्यान्वेषण पत्रकारिता का युगधर्म. पत्रकारिता का मूल उददेश्य केवल अभिव्यक्ति मात्र नहीं, मर्यादित अभिव्यक्ति और उसका संप्रसारण करना भी है।

पत्रकारिता के प्रति दायित्व को समझते हुए समाचारों का संकलन करते समय पत्रकार को चाहिए कि वह निम्नलिखित तथ्यों का विशेष ध्यान रखे।

- lfpr djukA
- f kf{kr djukA
- eukj!tu o Kkuo/ku djukA
- tuer r!;kj djukA
- ikBdk dh :fp dk /;ku e j[kukA
- lkekftd fodfr;k dk nj djukA
- lkekftd eY; vkj mldk ekinM dk cuk, j[kukA
- ykd tkxfr ykukA
- lekt dk fn kk funi k nukA
- tu thou dk fu;kedA

- lfpr djuk % समाचार संकलन सूचनाओं को प्रेषित करने की प्रक्रिया है। पत्रकारिता के बढते क्षेत्र के कारण ही अभिजात्य वर्ग का सूचनाओं पर से एकाधिकार समाप्त हो गया है। सूचना जितनी सही होगी उस समाचार पत्र या अन्य मीडिया की विश्वसनीयता पाठकों के बीच उतनी ही अधिक होगी। ऐसे में यह जरूरी हो गया है कि संवाददाता इनफोर्मेटिक समाचार देते समय पर्याप्त सावधानी बरते।

- f kf{kr djuk : समाचारों के संकलन के पीछे पत्रकारिता एक महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज को शिक्षित करना भी है, यही कारण है कि कई समाचार शैक्षिक गतिविधियों से जुड़ा होता है। इतना ही नहीं नवीनतम शोध, घटनाएं, राजनीतिक सामाजिक उथल–पुथल से संबंधित घटनाओं का विस्तार से भी विवेचना कर पाठक को इन सब के बारे में शिक्षित किया जाता है।
- eukj!tu djuk % समाचारों के माध्यम से पाठकों का मनोरंजन करने का भी प्रयास किया जाता है। पाठकों के मनोरंजन के लिए गीत, संगीत, नृत्य, नाटक, सिनेमा और सांस्कृतिक गतिविधियां प्रकाशित की जाती है।. पाठकों के मनोरंजन का विशेष ध्यान रखते हुए प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने तो मनोरंजन के लिए अलग–अलग समय और स्थान भी निर्धारित कर दिया है।

- tuer r!;kj djuk % समाचारों का संकलन कई बार जनमत तैयार करने के लिए भी किया जाता है। जनमत तैयार करने के लिए सामाजिक मूल्य, वर्ग विशेष, घटना विशेष का भावनात्मक व तार्किक विश्लेषण कर जनमत तैयार करने के साथ–साथ उसे प्रभावित करने का भी प्रयास किया जाता है।

- ikBdk dh :fp dk /;ku j[kuk % समाचारों के संकलन से लेकर प्रस्तुतीकरण में पाठकों की रूचि का भी विशेष ध्यान रखा जाता है, क्योंकि जब तक समाचारों के प्रति पाठकों की रूचि नहीं होगी तब तक उस समाचार का लेखन करने का कोई लाभ नहीं है। पाठकों की रूचि का ध्यान देने के लिए इन दिनों समाचार पत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया द्वारा विशेष प्रयास किये जा रहे हैं। इसके समाचार पत्रों में पाठकों के पत्र लेखन प्रक्रिया का भी विस्तार किया गया है। समाचार पत्रों द्वारा पाठकों की रूचि का ध्यान रखने के

लिए पाठक पैनल बनाए जा रहे हैं, वहीं इलेक्ट्रानिक मीडिया में पाठक या श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं का जीवंत प्रसारण किया जाने लगा है।

- **lekftd fodfr;k dk nj djuk %** कई बार ऐसे समाचार आते हैं, जो सामाजिक कुरीतियों से जुडे हुए होते हैं। ऐसे में समाचार सकंलन करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि इन समाचारों के प्रकाशन से समाज में सामाजिक विकृतियों को प्रोत्साहन मिलने की बजाए उसे दूर करने के लिए सार्थक प्रयास किये जाएं। सामाजिक विकृति के तहत दहेज प्रथा, छूआछूत, बाल–विवाह, महिला उत्पीडन, बाल अपराध, मद्यपान, आतंकवाद, वैश्यावृति जैसे विषय आते हैं।

- **lekftd eY; vkj ekinM dk cuk, j[kuk :** मानव समाज के बीच समता भाव, बड़ों के प्रति आदर, अतिथियों का सम्मान, छोटों के प्रति स्नेह बनाए रखने के भी प्रयास समाचारों के माध्यम से किया जाना चाहिए। पत्रकारिता का अन्य उद्देश्यों में सामाजिक मूल्य और उसके मापदंड को बनाए रखना भी शामिल है।

- **ykd tkxfr ykuk %** समाचार संकलन करते समय इन पहलुओं का भी ध्यान रखें, जिससे कि मनुष्य में सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना जागृत हो। समाचारों के माध्यम से जन सामान्य में व्याप्त अंधविश्वास, रूढिवादी परंपरा और वैचारिक पिछडापन जैसी मान्यताओं को ध्वस्त करने के भी प्रयास होने चाहिए, क्योंकि इससे लोगों में वैचारिक चेतना आती है।

- **lekt dk fn kk&funi k nuk :** पत्रकारिता समाज का दर्पण है। ऐसे में धटनाओं का तथ्यात्मक विश्लेषण कर समाज का मार्गदर्शन करना चाहिए। कई बार समाज में ऐसी घटना घट जाती है, जिससे लगने लगता है कि समाज पथ विहीन और पथ भ्रष्ट हो गया है, इस प्रकार के हालत होने पर समाचारों का संकलन करते समय उन पहलुओं को भी उजागर करने का प्रयास किया जाना चाहिए, जिससे समाचार केवल सूचनात्मक न होकर समाज के लिए पथ प्रदर्शक का भी काम करें।

- **tu thou dk fu;ked :** देश में इन दिनों बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, महंगाई, शैक्षणिक अराजकता, अपराध इत्यादि की समस्या लगातार बढती जा रही है। इसके चलते जनजवीन में सर्जनात्मक की बजाए विध्वंसात्मक प्रवृति बढी है। ऐसे में समचारों का संकलन करने का लक्ष्य जन जीवन में सर्जनात्मकता पैदा करना होना चाहिए।

- **lLFkku d ifr %** पत्रकार किसी भी संस्थान चाहे वह छोटा या बडा हो उसका दायित्व बनता है कि वह अपने संस्थान के प्रति ईमानदारी से कार्य करें. क्योंकि उसके द्वारा किया गए कार्य से संस्थान की प्रतिष्ठा बढेगी या उसमें गिरावट आएगी। ऐसे में यह जरूरी हो गया है कि पत्रकार अपना कार्य न केवल लग्न से करें, बल्कि अपना उत्तरदायित्व समझ कर भी करे। ऐसा करने से संस्थान के साथ साथ उसकी भी प्रगति होगी।

2.2.6 lekpkj ys[ku dh vk/kfud rduhd

उपग्रह क्रांति का असर समाचार लेखन की प्रक्रिया पर भी पडा है। समाचार लेखन की आधुनिक तकनीक ने पत्रकारों का कार्य आसान कर दिया है। एक समय था जब दूरवर्ती क्षेत्रों से समाचार को भेजने में कई दिन लग जाते थे, लेकिन अब पलक झपकते ही समचार को एक से दूसरे स्थान पर संप्रेषित कर दिया जाता है। समाचार लिखने में इन दिनों कंप्यूटर और फैक्स तकनीक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है।.

dl;Vj % यह एक ऐसी आधुनिक तकनीक है, जिसने न केवल समचार लेखन की प्रक्रिया को आसान कर दिया है, बल्कि समाचारों के संप्रेषण की प्रक्रिया को भी सरल कर दिया है। इसी तकनीक का परिणाम है कि जिस समाचार को लिखने में एक संवाददाता को घंटों समय लग जाता था, उसी समाचार को लिखने में अब अधिक समय नहीं लगता है। कंप्यूटर तकनीक का प्रयोग समाचार लेखन में यहां तक पहुंच गया है कि एक पत्रकार कंप्यूटर के बिना अपने को कलम विहीन समझने लगता है।

2.2.7 lekpkj ys[ku dh lko/kkfu;k

वैसे तो पत्रकारों को हर कदम पर सावधानियां बरतने के लिए सर्तक रहना पडता है, लेकिन सबसे अधिक उसे समाचारों का लेखन करते समय सावधानी बरतने की जरूरत पडती है। समाचार लेखन करने में कोई चूक हो गई तो अगले दिन पाठकों के आगे किरकिरी का सामना या उपहास का पात्र बनना पड़ सकता है। इतना ही नहीं कानूनी उलझन में या मानहानि के मुकद्दमें में भी फंस सकते हैं। इसे देखते हुए समाचार लेखन करते समय निम्नलिखित सावधानियों को अवश्य अपनाएं।

- इंट्रो या आमुख का ध्यान रखें।
- समाचार की प्रासंगिता।
- व्यक्तिगत हित से परहेज।
- समाचार लेखन में व्यक्तिगत रंजिश न निकालें।
- कानूनी पहलु का भी ध्यान रखें।
- विवादास्पद समाचार होने पर दोनों पक्षों के बयान को समान तरजीह दें।
- प्रेस लॉ के नियमों अर्थात उनकी हिदायतों का पालन करें।
- लेखन में गलतियां कम से कम हों और व्याकरण की दृष्टि से सही हो इसका भी ध्यान रखें।
- घटना क्रम का उल्लेख करते समय उसकी प्रमाणिकता की जांच कर लें।
- यदि किसी तथ्य को लेकर संशय हो तो उसके बारे में अपने साथियों या विषय विशेषज्ञ से चर्चा कर लें।
- भ्रष्टाचार से संबंधित समाचार लेखन बिना सबूत न करें।

2.3 lkj

lekpkj ys[ku fdls dgrs gS % समाचार संकलन के दौर प्राप्त तथ्यों की मम्यक अभिव्यक्ति ही समाचार लेखन है। समाज में जो कुछ भी हो रहा है उससे अवगत करना या उसके बारे में लिखे जाने के कारण ही समाचार को सामाजिक चेतना का दर्पण कहा जाता है।

समाचार को पहचानकर उसका तथ्यपरक,सारगर्भित एवं समग्र प्रस्तुति ही समाचार लेखन है. घटना प्रसंग के घटित होने या सम्मेलन, कार्यक्रम अथवा समारोह की पूर्व औपचारिक सूचना के

संबंधमें यथा संभव तटस्थ और तथ्यात्मक जानकारी को एक विशिष्ट शैली में लिपिबध करने की कला और कौशल को समाचार लेखन करते हैं।

lekpkj y[ku e lko/kfu;k %

- इंट्रो या आमुख का ध्यान रखें।
- समाचार की प्रासंगिता।
- व्यक्तिगत हित से परहेज।
- समाचार लेखन में व्यक्तिगत रंजिश न निकालें।
- कानूनी पहलु का भी ध्यान रखें।
- विवादास्पद समाचार होने पर दोनों पक्षों के बयान को समान तरजीह दें।
- प्रेस लॉ के नियमों अर्थात उनकी हिदायतों का पालन करें।
- लेखन में गलतियां कम से कम हों और व्याकरण की दृष्टि से सही हो इसका भी ध्यान रखें।
- घटना क्रम का उल्लेख करते समय उसकी प्रमाणिकता की जांच कर लें।
- यदि किसी तथ्य को लेकर संशय हो तो उसके बारे में अपने साथियों या विषय विशेषज्ञ से चर्चा कर लें।
- भ्रष्टाचार से संबंधित समाचार लेखन बिना सबूत न करें।

lekpkj y[ku d fl)kr :

- वस्तुनिष्ठता
- समाजिक मूल्य
- कानूनी व्यवधान
- देश की सुरक्षा
- निष्पक्षता
- जनरूचि

lekpkj y[ku e lokn nkrk dh ftEeokjh

- समाज के प्रति
- पत्रकारिता के प्रति और संस्थान के प्रति

2.4 fofk'V "kCnkoyh

tuer % जनमत से अभिप्राय यहां पर किसी विषय को लेकर समाज के मध्य एक राय निर्मित करना है।

ykd tkxfr % समाजिक कुरीतियों को लेकर समाज में जागृत करना ही लोकजागृति है।

2.5 vkdyu i= ukoyh

1 समाचार लेखन किसे कहते हैं? समाचार लेखन की महत्ता को वर्तमान परिपेक्ष्य में विवेचना करें?
2 समाचार लेखन के लिए किन तत्वों की जरूत होती है? तत्व के बिना समाचार लेखन संभव है कि नहीं उदाहरण के साथ बताएं।
3 समाचार लिखते समय एक संवाददाता को सावधानी बरतनी चाहिए या नहीं? यदि नहीं तो क्यों, यदि हां तो उन सावधानियों का उल्लेख करें।
4 समाचार लेखन में संवाददाता के कार्य और जिम्मेदारी की विवेचना करें।
5 समाचार लेखन के सिद्धांत क्या हैं?
6 निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त नोट लिखें

d. समाचार लेखन की परिभाषा
[k- समाचार लेखन की सावधानी
x. समाचार लेखन के तथ्य
?k- समाचार लेखन के आधुनिक तकनीक

2.6 lanHk iqLrd

d. व्यावसायिक पत्रकारिता एम.भी कामथ
[k. हिंदी पत्रकारिता अरूण भगत
x- पत्र और पत्रकार कमल दीक्षित
?k- संपादन कला संजीव भनावत
M. हिंदी पत्रकारिता का इतिहास वेद प्रताव वैदिक

नोट ....
....
....
....
....

Block – B Unit - I

Lesson 3

lekpkj ladyu ds rduhd vkSj lekpkj ds rRo

ys[kd % Jh v:.kk k dqekj iqujh{kd % Jh fefgj jatu ik=

<kapk

3.0 mn~ns';
3.1 ikB ifjp;
3.2 fo'k; oLrq iLrqfrdj.k
3.2.1 lekpkj ladyu dh rduhd
3.2.2 lekpkj ds rRo
3.3 lkj
3.4 fof'k"V 'kCnkoyh
3.5 vkdyu iz'ukoyh
3.6 lanHkZ iqLrdsa

3.0 mn~ns';

इस अध्याय का उद्‌देश्य पत्रकारिता के छात्रों को यह बताना कि समाचार संकलन किस प्रकार होता है और समाचार के मुख्य तत्व क्या होते हैं जिनके आधार पर ही समाचारों का संकलन व गठन होता है। अध्याय में दिए गए समाचार के मुख्य तत्वों को ध्यान में रखकर यदि काम किया जाए तो कभी भी संवाददाता को समाचार की कमी नहीं खलेगी।

3.1 ikB ifjp;

समाचारों के संकलन के लिए किन–किन तरीकों का इस्तेमाल करना और किन–किन तत्वों के आधार पर समाचार लिखना इस पाठ का महत्वपूर्ण भाग है। तत्वों के आधार पर ही समाचार की पहचान होती है। तत्वों की बहुलता के कारण समाचार का महत्व बढता है। तत्व शब्द का अर्थ

होता है– यथार्थता, वस्तुतिस्थिति या असलियत। संसार में उपलब्ध सारी विषय वस्तुओं का अस्तित्व उसके तत्व के कारण ही है। इन तत्वों के करण ही समाचार सारगर्भित और विश्वसनीय बनता है। जिस समाचार में जितना अधिक तत्व होगा उसकी विश्वसनीयता उतनी ही अधिक होगी। विश्वसनीयता होने के कारण उसकी पढनीयता भी अधिक होगी। समाचार को पढनीय बनाने के लिए संवाददाता को चाहिए कि वे समाचार में प्रयुक्त होने वाले तत्वों का अच्छी तरह अध्ययन कर ले।

3.2 fo’k; oLrq iLrqfrdj.k

3.2.1 समाचार संकलन की तकनीक
3.2.2 समाचार के तत्व

3.2.1 lekpkj ladyu dh rduhd % समाचारों के संकलन के लिए संवाददाता महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। संवाददाता को समाचार एकत्र करने के लिए दिन–रात मेहनत करनी होती है, संवाददाता को समाचारों के लिए गिद्ध से भी पैनी निगाह और कुत्ते की तरह समाचारों को सूंघने की क्षमता होना अति अनिवार्य भी है। समाचार संकलन कहने को तो एक छोटा सा शब्द है लेकिन इसको करने के लिए संवाददाता हर समय उद्धत रहता है और रहे भी क्यों न समाचार पत्रों का सारा दारोमदार ही समाचारों व संवाददाता पर रहता है। यह कारण भी है कि समाचार संकलन के लिए संवाददाता को ही सभी जगह जाना व पहचाना जाता है न कि उपसंपादकों व संपादकों को। समाचार संकलन के लिए संवाददाता को कूटनीति का प्रयोग भी करना पड़ता है। समाचार संकलन के लिए वैसे तो अनेक विद्याएं है लेकिन वर्तमान में एक विद्या है स्ट्रींग आप्रेशन जो कि बहुत ही खतरे का काम होती है। समाचार संकलन के लिए कई समाचार एजैंसीयां भी काम करती रहती हैं जो कि समाचार पत्रों को व टीवी के चैनलों को समाचार बेचने का काम भी करती हैं लेकिन समाचार संकलन के लिए मुख्य रोल तो संवाददाता ही निभाता है। समाचार संकलन की तकनीकें मुख्यतः इस प्रकार से हैं।

राजनीतिक दलों द्वारा ब्यूरो में भेजी गईं प्रैस विज्ञपत्तियां, विभिन्न कार्यक्रमों की प्रैस विज्ञपत्तियां।

विभिन्न संस्थाओं द्वारा उनकी गतिविधियों की सूचनाएं भी लिखित रूप में ब्यूरो कार्यालय में भेजी जाती हैं।

संवाददाता को किसी भी घटित होने वाली घटना की सूचना मिलते ही गंतव्य की ओर रवाना होना जैसे कि सड़क हादसा, आग लगना, भीड़ का आक्रामक होना, पुलिस का लाठीचार्ज, बलात्कार मामले में अस्पताल जाना, किसी नेता का अचानक उसके निवास स्थान पर आना, विभागिय छापों की जानकारी के लिए अफसरों से मिलना, या पुलिस द्वारा पकड़े गए अपराधियों की सूचना मिलने पर थाने में जाना इत्यादि शामिल है।
संवाददाता उपरोक्त परिस्थितियों के अलावा भी नियमित रूप से होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी अपने पास संभालकर रख लेता है और नियमित रूप से कोर्ट, पुलिस थाने, व अन्य वरिष्ठ अधिकारियों से संबंध साधे रखता है। इन जगहों पर से संवाददाता को समाचार मिलने की संभावना बहुत ज्यादा रहती है।

संवाददाता समाचार संकलन के लिए स्वंय तो सभी सरकारी विभागों पर नजर रखता ही है कई बार वह अपने विश्वसनीय सूत्र भी तैयार करता है जो कि महत्वपूर्ण समाचारों का भण्डार माने जाते हैं जिन्हें हम स्त्रोत कहते हैं। यह स्त्रोत उसी विभाग में काम करने वाला एक सफाई कर्मचारी से लेकर एक चपड़ासी या क्लर्क भी हो सकता है। कई बार संस्थान के काफी बड़े होने की स्थिति में वहां के आला अधिकारी भी एक दूसरे को नीचा दिखाने की फिराक में समाचार देने की गलतियां कर बैठते हैं। ऐसी परिस्थितियों में संवाददाता को स्त्रोत के हितों का पूरा ध्यान रखते हुए महत्वपूर्ण तथ्यों को समेट लेना चाहिए यदि हो सके तो सबूत भी संभालकर अपने पास रखने चाहिए, जिससे की निकट भविष्य में संवाददाता को किसी प्रकार की परेशानी का सामना न करना पड़े।

कई बार संवाददाता को विशेष स्टोरी करनी पड़ती हैं, जिनके लिए उसे संबंधित विभाग में अपनी पहचान गुप्त रखकर काम करवाने के लिए जाना पड़ता है तथा वहां होने वाली घटनाओं को चोरी–छिपे देखकर संकलन करना पड़ता है। इसका आधुनिक रूप स्ट्रींग आप्रेशन के रूप में सामने आया है। इन आप्रेशनों के परिणाम आप्रेशन n;k/ku, आप्रेशन ekr d lknkxj रहे हैं जिनमें दिखाया गया कि किस तरह से सांसद जनता की बात को संसद में रखने के लिए रिश्वत लेते हैं और किस तरह से भगवान समझने जाने वाले डाक्टर चंद रूपयों की खतिर कन्या भ्रूण हत्याओं को अंजाम देते हैं। इन आप्रेशनों के परिणाम स्वरूप समाज में जागृति आती है। इन आप्रेशनों को करने वाले संवाददाता को कई तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन यदि वह इस प्रकार के खतरे मोल लेता है तो उसकी पदोन्नति की संभावनाएं बहुत ज्यादा रहती हैं।

इनके अलावा समाचार संस्थाओं को यदि अन्य समाचारों की आवश्यकता होती है जो उनसे किसी कारणवश छूट गए हैं या फिर संवाददाता की अनउपलब्धता के कारण रह गए हैं तो संस्था इस प्रकार के मुख्य समाचारों को एजैंसियों से भी खरीद लेती है।

3.2.2 lekpkj ds rRo % मानव रूचि की विविधता और व्यापकताा के कारण समाचार के तत्वों में परिवर्तन और विस्तार भी होता रहता है। देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप इसमें भी परिवर्तन संभव है। वरिष्ठ पत्राकार प्रेमनाथ चतुर्वेदी ने समाचार के तत्वों की व्याख्या करते हुए अपनी पुस्तक समाचार संपादन में समाचार के 26 तत्व गिनाए हैं, जबकि माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के सेवानिवृत प्रोफेसर कमल दीक्षित ने अपनी पुस्तक समाचार संपादन में समाचार के 37 तत्व बताए हैं। पत्रकारिता अध्ययन की संस्था थॉमसन फाउंडेशन के अध्ययन दल ने समाचार के 20 तत्व बताएं है।
देश ,काल और परिस्थितियों के अनुरूप जिस प्रकार मानव की रूचि में बदलाव होता जाएगा। वैसे–वैसे उमसें व्यापकता और विविधता आती जाएगी तथा उसी के अनुरूप समाचार के तत्वों में बदलाव आता जाएगा। इन्ही परिस्थितियों को ध्यान में रखकर समाचार के तत्वों का विश्लेषण करने पर लेखक ने पाया है कि वर्तमान सामाजिक, राजनीति, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवश में समाचार के निम्मलिखित तत्व हो सकते हैं।

1 राजनतिक, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन

2 भूकंप, महामारी, बाढ और सूखा जैसी प्राकृतिक आपदाएं

3 अपराध की श्रेणी में चोरी, डकैती, लूटपाट और अपहरण

4 विख्यात व्यक्ति जैसे : कला, साहित्य, राजनीति, विज्ञान, खेल, समाज सेवा व अन्य

5 मानवीय संवेदनाएं : दया, प्रेम, करूणा, ईष्या, धृणा

6 स्वहित : रोजगार, व्यवसाय, अध्ययन

7 धनः दान, दुरूपयोग ,नाजायज, संग्रह

8 धर्म ,संप्रदाय, पंथ, उंच–नीच, भेद भाव ,धर्मांतरण

9 मनोरंजन : संगीत, गीत, नाटक और सिनेमा

10 मौसम :तापमान, वर्षा, आद्रता

11 हास्य–व्यंग, चेतना का विस्तार

12 काम–वासना, अवैध–संबंध, वेश्यावृति

13 कृषि : खाद्यान्न संकट, बहुलता

14 संघर्ष : सामाजिक, राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, सीमा और दंगा

15 विजय, अथवा पराजय की मनोदशा

16 मेला, व्रत और त्यौहार

17 सम्मेलन, गोष्ठी, सभा

18 सामाजिक संस्कार : जन्म, मृत्यु और विवाह।

19 उपेक्षा, अपमान, निरादर

20 पर्यावरण : जल, वायु भूमि, ध्वनि

21 स्वास्थ्य : रोग निवारण, चिकित्सा पद्धति

22 विज्ञान, खोज, आविष्कार

23 अल्पसंख्यक, शिक्षा, रीति–रिवाज

24 रहस्य : रोमांच, गोपनीयता और भेद

25 वीरपूजा, खुशामद प्रशंसा, सम्मान, गौरव

26 यश, अपयश और सुयश

27 सुरक्षा : राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय और साामाजिक

28 विशिष्टता : व्यक्ति, स्थान और पद

29 साहस, वीरता, पराक्रम

30 उपलब्धि, ख्याति, लोकप्रियता

31 बंधुत्व, अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय, प्रादेशिक और जातिय

32 कुकृत्य, चारित्रिक, आपराधिक और नैतिक

33 सभ्यता, संस्कृति, सामाजिक मूल्य

34 विकास, साामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक

35 ऐतिहासिक स्थान, तीर्थ स्थान

36 सामाजिक न्यास

37 बौद्धिक संपदा

38 सूचना प्रौद्योगिकी

39 वन्य प्राणी संरक्षण

40 पुलिस प्रशासन

41 दुर्धटना, हादसा

42 समस्याएं

43 भ्रष्टाचार

44 न्यायालय

45 सरकारी नीति

46 आतंकवाद

47 लोकतं्त्र

48 चुनाव

49 बजट

50 दलित

51 आत्म हत्या

52 महिला उत्पीडन

53 मानवाधिकार

3.3 lkj

संवाददाता को समाचार एकत्र करने के लिए दिन–रात मेहनत करनी होती है, संवाददाता को समाचारों के लिए गिद्ध से भी पैनी निगाह और कुत्ते की तरह समाचारों को सूंघने की क्षमता होना अति अनिवार्य भी है।

संवाददाता के लिए समाचार का स्त्रोत संबंधित विभाग में काम करने वाला एक सफाई कर्मचारी से लेकर एक चपड़ासी या क्लर्क भी हो सकता है। कई बार संस्थान के काफी बड़े होने की स्थिति में वहां के आला अधिकारी भी एक दूसरे को नीचा दिखाने की फिराक में समाचार देने की गलतियां कर बैठते हैं।

समाचार के तत्व समाचार संकलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन तत्वों के आधार पर भी सभी प्रकार के समाचारों का संकलन किया जा सकता है। मानव रूचि की विविधता और व्यापकताा के कारण समाचार के तत्वों में परिवर्तन और विस्तार भी होता रहता है। देश, काल और परिस्थितियों के अनुरूप इसमें भी परिवर्तन संभव है।

वरिष्ठ पत्राकार प्रेमनाथ चतुर्वेदी ने समाचार के तत्वों की व्याख्या करते हुए अपनी पुस्तक समाचार संपादन में समाचार के 26 तत्व गिनाए हैं, जबकि माखन लाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता विश्वविद्यालय भोपाल के सेवानिवृत प्रोफेसर कमल दीक्षित ने अपनी पुस्तक समाचार संपादन में समाचार के 37 तत्व बताए हैं। पत्रकारिता अध्ययन की संस्था थॉमसन फाउंडेशन के अध्ययन दल ने समाचार के 20 तत्व बताएं है।

3.4 fof k'V "kCnkoyh

LVhx vkijs'ku % कई बार आपराधिक, रिश्वतखोरी व अन्य क्राइम के मामलों का पर्दाफाश करने के लिए संवाददाता को टीम बनाकर छोटे कैमरा व अन्य उपकरणों की मदद से नाटकीय घटनाक्रम रचाना पड़ता है। इस घटनाक्रम को बहुत ही ज्यादा अनुभवी संवाददाताओं की टीम करती है तथा यह सब सोची समझी योजना के तहत होता है।

इसमें संबंधित बारदात के सभी मुख्य सबूतों को एकत्र कर उनका भंड़ा फोड़ किया जाता है। यह एक रिस्की काम होता है। बिना सोचे समझे किए जाने पर इसमें जान जाने का खतरा भी बना रहता है।

3.5 vkdyu i ukoyh

1. समाचार संकलन के बारे में विस्तार पूर्वक लिखें।
2. समाचार संकलन के लिए संवाददाता की भूमिका पर प्रकाश डालें।
3. समाचारों के गठन के लिए किन्ही बीस तत्वों का उदाहरण सहित वर्णन करें।
4. समाचारों के लिए संवाददाता के साथ स्त्रोत की क्या भूमिका रहती है? वर्णन करें।

3.6 lnHk iLrd

d- i= i=dkj vkj i=dkfjrk   jktUn “kdj HkVV

[k- i=dkfjrk d ey fl)kr   dUg;k vxukuh

x- lekpkj liknu   ieukFk proh

?k- lekpkj liknu   ek[kuyky proh

Block – B Unit – II

Lesson 4

lekpkj d L=kr] idkj vkj leL;k,

y[kd % Jh v:.k k dekj iujh{kd % Jh fefgj jtu ik=

<kpk

4.0 mnn ;

4.1 ikB ifjp;

4.2 fo'k; oLr iLrfrdj.k

4.2.1 lekpkj d L=kr dku&dku l gkr g

4.2.2 lekpkj d L=kr fdru idkj d gkr g

4.2.3 lekpkj d fy, L=kr dl cuk,

4.2.4 lekpkj d L=kr cuku e fdu leL;kvk dk lkeuk djuk iMrk g

4.2.5 lepkj ldyu d fy, L=kr dh mi;kfxrk

4.2.6 lekpkj d L=kr d lkFk lokfnnkrk dk 0;ogkj fdl idkj dk gk

4.2.7 cgrj lekpkj ikIr dju d fy, L=kr dk dl if kf{kr dj-

4.3 lkj

4.4 fof k'V "kCnkoyh

4.5 vkdyu i ukoyh

4.6 lnHk iLrd

4.0 mnn ;

इस अध्याय को पढकर पत्रकारिता के छात्र समाचार के स्त्रोत, प्रकार और समस्याओं के विभिन्न पहलुओं के बारे में विस्तारपूर्वक जान जाएंगे। उन्हें निम्नलिखित विषयों के बारे में जानने और समझने में आसानी होगी। पत्रकारिता के छात्रों को किस प्रकार से समाचारों के लिए स्त्रोतों को तैयार करना चाहिए और किस प्रकार के व्यवहार आम जनमानस व स्त्रोत से करना चाहिए, यह सब इस अध्याय में बताया गया है।

4.1 ikB ifjp;

जब आप सुबह समाचार पत्र पढते हैं या फिर किसी न्यूज चैनल को देखने पर ऐसा लगता है कि पूरे विश्व में समाचार की बाढ आ गई है या फिर समाचार की कमी नहीं है, बस सिर्फ पढते जाओ या फिर सुनते जाओ। यह सब संभव हुआ समाचार के शीघ्र संकलन के कारण। समचार संकलन में स्त्रोत की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यदि पत्रकार के पास स्त्रोत नहीं होगा, तो उसे समचार संकलन में भारी कठिनाईयों का सामना करना पड़ेगा, शायद इसी तथ्य को ध्यान में रखकर कहा गया है कि जिस पत्रकार के पास सबसे अधिक स्त्रोत हैं, वही पत्रकार आज की पत्राकारिता में सफल है। इसीलिए कहा गया है कि पत्रकार कितना भी वरिष्ठ क्यों न हो गया हो, उसे सदैव समाचार के लिए अपने स्त्रोत बढ़ाते रहने चाहिए। क्योंकि कई बार ऐसा देखने में आया है कि स्त्रोत नहीं होने के कारण वरिष्ठ पत्राकारों को कनिष्ठ पत्राकारों से मात खानी पडती है। इसकी गंभीरता को देखते हुए अब कई समाचार पत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया ने LVhxj रखने की जगह प्रमुख स्थानों पर स्त्रोत रखने शुरू कर दिए हैं। यहां पर स्त्रोत का अभिप्राय उस व्यक्ति से है जो किसी घटना की सूचना संबंधित समाचार पत्रो, इलेक्ट्रानिक मीडिया को देने से हैं। क्योंकि कई बार ऐसा देखा गया है कि जब तक घटना की सूचना मिलती है, तब तक उसके संकलन में देर हो गई होती है। विशेषकर इलेक्ट्रानिक मीडिया में समाचार का संकलन करते समय।

4.2 fo’k; oLrq iLrqfrdj.k

4.2.1 समाचार के स्त्रोत कौन–कौन से होते हैं?
4.2.2 समाचार के स्त्रोत कितने प्रकार के होते हैं?
4.2.3 समाचार के लिए स्त्रोत कैसे बनाएं?
4.2.4 समाचार के स्त्रोत बनाने में किन समस्याओं का सामना करना पडता है?
4.2.5 समचार संकलन के लिए स्त्रोत की उपयोगिता?
4.2.6 समाचार के स्त्रोत के साथ संवाददाता का व्यवहार किस प्रकार का हो?
4.2.7 बेहतर समाचार प्राप्त करने के लिए स्त्रोत को कैसे प्रशिक्षित करें?

4.2.1 lekpkj ds L=kr &

समाचारों में संवददाता द्वारा कई बार विश्वसनीय सूत्रों का हवाला देते हुए समाचार दिया जाता है, तो कई बार अधिकृत सूत्रों के अनुसार। यहां तक की कई समाचारों में सूत्रों का स्पष्ट उल्लेख भी किया होता है। यह सब क्यों संवाददाता द्वारा किया जाता है कि जानकारी प्राप्त करने से पूर्व पत्रकारिता के छात्रों के लिए यह जानना अनिवार्य है कि समाचार के स्त्रोत क्या हैं। समाचार के स्त्रोत को मुख्य रूप से तीन भाग में विभाजित कर उसका अध्ययन किया जा सकता है।

4.2.2 lekpkj ds L=kr ds izdkj &

- प्रत्याषित स्त्रोत
- अप्रत्याषित स्त्रोत

- पूर्वानुमानित स्त्रोत

iR;kf'kr L=kr ¼ समाचार प्राप्त करने का प्रमुख औजार प्रत्याषित स्त्रोत हैं। प्रत्याषित स्त्रोत के माध्यम से संवाददाता को इस बात की जानकारी आसानी से मिल जाती है कि आज उसे शहर में क्या कुछ होने वाला है। प्रत्याषित स्त्रोत कौन–कौन से हो सकते हैं, कि इसकी जानकारी संवाददाता को होनी चाहिए। शहर में किसी प्रकार के आयोजन, धरना, जुलूस, प्रदर्शन, कार्यशाला , सेमिनार, कवि–गाष्ठी, धार्मिक आयोजन जैसे सतसंग, प्रवचन, खेल प्रतियोगिता, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की सूचना निर्धारित समय से पहले मिल जाती हैं। शहर में होने वाली अपराधिक धटनाओं की सूचना भी संवददाता को प्रत्यााषित स्त्रोत के माध्यम अर्थात थाने और सरकारी अस्पताल से प्राप्त हो जाती है। इसके अतिरिक्त सरकारी कार्यालयों जैसे जिला उपायुक्त, जिला पुलिस अधीक्षक, शैक्षणिक संस्थानों, नगर पालिका, नगर निगम, जिला परिषद, बिजली कार्यालय, लोकसभा, विधान सभा को भी प्रत्याषित स्त्रोत की श्रेणी में रख्ाा जाता हैं। इसके अतिरिक्त अदालती सुनवाई और फैसले, चुनाव कार्यालय, विभिन्न राजनैतिक दलों के कार्यालय, स्टेडियम, रेलवे स्टेशन, बस अड्डा, सहित राजनेता के दौरे भी इसी श्रेणी में आते हैं।

प्रत्याषित स्त्रोत में महत्वपूर्ण स्थान व्यक्ति विशेष का भी होता है, जिसके माध्यम से संवाददाता को समाचार से संबंधित जानकारी मिलती है। व्यक्ति विशेष के लिए संवाददाता को अपने कार्यक्षेत्र के अनुरूप ऐसे स्त्रोतों की पहचान कर उससे लगातार संपर्क बनाये रखना चाहिए। कलेंडर और डायरी भी प्रत्याशित स्त्रोत की ही श्रेणी में आते हैं, क्योंकि इसके माध्यम से संवाददाता को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दिवसों की जानकारी मिल जाती है। इसके आधार पर संवाददाता महापुरूषों की जयंतियों, से लेकर खेल दिवस किसी तिथि को मनाया जाएगा कि जानकारी मिल जाती हैं। कई बार यह भी देखने में आया है कि महत्वपूर्ण तिथियों की जानकारी संवाददाता को होती है, लेकिन संबंधित राजनीति दल या संस्था को नहीं होती है। ऐसी स्थिति में संवाददाता को रोचक समाचार लिखने का अवसर मिल जाता है। कुछ समय पूर्व ऐसा ही हुआ था, जब एक विश्वविद्यालय प्रशासन पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय चरण सिंह की जयंती ही मनाना भूल गया। और तो और एक जिले में कांग्रेस के नेता भी पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी की भी जयंती मनाना भूल गए।

viR;kf'kr L=kr : कई बार संवाददाता को प्रत्याषित स्त्राोत की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण जानकारी मिल जाती है। इसके लिए संवाददाता का कार्यकौशल काम आता है, क्योंकि जब तक अप्रत्याषित स्त्रोत को यह विश्वास नहीं होगा कि जो जानकारी संवाददाता को उपलब्ध करा रहा है उसके बारे में संवाददाता किसी को नहीं बतायेगा। कई बार यह भी देखने को आया है कि प्रत्याषित स्त्रोत विशेषकर भ्रष्टाचार, घोटाला या अनियमितता से संबंधितत समाचार देने के लिए वह अप्रत्याषित स्त्रोत के रूप में कार्य करता है।

इसे देखते हुए यह कहा गया है कि संवददाता को कुत्ते की तरह समाचार सूंधने के प्रति संवदेनशील होना चाहिए। कारण यह बताया गया है कि जब उसमें समचार सूंघने की संवदेनशीलता नहीं होगी, तब तक संवाददाता अप्रत्याषित स्त्रोत द्वारा दिए गए समाचार की खोज नहीं कर सकता है। समाचार कार्यालय में आने वाले प्रेस विज्ञप्ति भी कई बार अप्रत्याषित स्त्रोत का कार्य करते हैं। जैसे किसी छात्र संगठन ने एक विज्ञप्ति दी, जिसमें बताया गया है कि छात्रों ने अपनी समस्याओं के बारे में विस्तार से चर्चा की है इसे दूर कराने के लिए छात्राों का एक प्रतिनिधिमंडल शीध्र ही कुलपति या प्राचार्य से मिलेगा यदि उस विज्ञप्ति को ध्यान पूर्वक पढा जाए तो प्रशासन की कई खामियों की जानकारी मिल सकती है। उस जानकारी के आधार पर संवाददाता काम करते हुए सकारात्मक और नकारात्मक स्टोरी फाइल कर सकता है।

आम तौर पर कई घटनाएं ऐसी घट जाती हैं। जिनका समय पर पता लगना या लगाना संवाददाता के लिए मुश्किल होता है। जैसे आग लगना, डकैती, रेल, बस और हवाई जहाज की दुर्धटनाएं हैं, जिसका अनुमान लगाना असंभव होता हैं। ऐसे में अप्रत्याषित स्त्राोत ही संवाददाता के

मददगार साबित होते हैं। इन परिस्थितियों से निपटने के लिए संवाददाता को अपने स्त्रोत के प्रति सदैव सजग होने के साथ–साथ उन्हें भी सजग रखना होता है, क्योंकि कई बार यह भी देखने को आया है कि अप्रत्याषित स्त्रोत को उसकी जानकारी होती है, लेकिन वह इसलिए उसकी सूचना संवाददाता को नहीं दे पाता है कि उसे यह नहीं मालूम होता कि यह जानकारी समाचार का रूप ले सकती है। संवाददाता के साथ भी एक बार ऐसा हीं हुआ, लेकिन संवाददाता ने अप्रत्याषित स्त्रोत द्वारा दी गई जानकारी की छानबीन की और उसके आधार पर समाचार प्रकाषित किया। कुछ वर्श पूर्व हरियाणा कृषि विष्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में दीक्षांत भाषण देने के लिए तत्कालीन गृह मंत्री लालकृष्ण आडवाणी आने वाले थे। हकृवि प्रशासन ने इस अवसर को देखते हुए आडवाणी से मानद उपाधि डीलिट देने की पेशकश की, जिसे आडवाणी ने नम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया था। इस घटना की जानकारी संवाददाता को अप्रत्याषित स्त्रोत के माध्यम से ही प्राप्त हुई। अप्रत्याषित स्त्रोत विश्वविद्यालय का एक वरिष्ठ अधिकारी था। इसलिए संवाददाता को समाचार देने में परेशानी नहीं हुई। जब समाचार दूसरे दिन प्रकाशित हुआ और दीक्षांत भाषण देने से पूर्व आडवाणी ने उक्त घटना का विवरण देते हुए मानद उपाधि लेने से इंकार किया। इन्ही तथ्यों को ध्यान में रखकर पत्राकारों को सलाह दी जाती है कि वह स्त्रोत के लिए वह बड़े अधिकारियों के साथ–साथ चपरासी तक को भी बनाए।

iokZuekfur L=kr : इस प्रकार के स्त्रोतों की पहचान के लिए संवाददाता का अनुभव काम आता है। दीर्घ अवधि तक कार्य करने के बाद संवाददाता को यह लगने लगता है कि यदि विषय पर कार्य किया जाए तो उसे महत्वपूर्ण समाचार या स्टोरी प्राप्त हो सकती है। अपराध से जुड़े संवाददाता को अपराधिक गतिविधियों की जानकारी पुराने आंकडों के आधार पर मिल जाती है। जैसे विगत कुछ वर्षों से अक्टूबर के दूसरे पखवाडों में ही चोरी की क्यों धटनाएं हो रही हैं, या फिर एक ही स्थान पर बार–बार दुर्धटनाएं क्यों होती हैं।

इसी प्रकार स्वास्थ्य से संबंधित संवाददाता अपने अनुभव के आधार पर अस्पताल में डारिया के कुछ रोगियों को देखने के बाद इस बात का पता आसानी से लगा लेता है कि शहर या किस इलाके में डायरिया का प्रकोप फैल गया हैं। इसके साथ साथ गंदी बस्तियों की समस्याओं की ओर प्रशासन का ध्यान पूर्वानुमानित स्त्रोत के माध्यम से आकृष्ट किया जा सकता है। ग्लोबलाइजेशन के कारण जिस प्रकार क्षेत्रीय समाचारों को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाने लगा है। वैसी स्थिति में पूर्वानुमानित स्त्रोत की भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है।

यहां तक समाचार पत्रों की प्रसार में भी पूर्वानुमानित स्त्रोत महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करने लगा है, क्योंकि जैसे ही पूर्वानुमान के आधार पर संवाददाता उस क्षेत्र की समस्याओं को समाचार पत्रों में प्रमुखता से उठाया जाता है, वैसे ही वह समाचार पत्र उस क्षेत्र में लोकप्रिय हो जाता है। इसे देखते हुए विषेशकर हिंदी के समाचार पत्रों के संपादकों और प्रबंधकों द्वारा संवाददाताओं से पूर्वानुमानित स्त्रोत के आधार पर अधिक से अधिक समाचार लाने के निर्देश दिये जाते हैं। विषेशकर पूर्वानुमानित स्त्रोत का उपयोग कर स्थानीय स्तर की समस्याओं को रेख्ाांकित किया जाता है।

इसके माध्यम से बिजली और पानी की समस्या, समय पर बिजली या पानी का बिल नहीं मिलने से होने वाली आम उपभोक्ता की समस्याओं के साथ साथ किसानों की अनाज मंडी में होने वाली असुविधाओं के बारे में पता लगाकर समाचार को प्रकाशित किया जा सकता है। यहां तक की बीमार उद्योग की समस्याओं को भी आधार बनाकर लिखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त मौसम से जुड़ी सूचनाओं को भी प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है। कई बार यह देखने में आया है कि सरकार को बिजली और पानी से लगातार घाटा हो रहा है,उस स्थिति में मूल्य वृद्धि की संभावना या फिर सरकारी दावों की पोल खोली जा सकती है। इस प्रकार की स्त्रोतों की पहचान एक या एक से अधिक बीट में लंबे समय तक कार्य करने के बाद ही संवाददाता को होती है। इसे देखते हुए समचार पत्रों में यह कोशिश की जाती है कि संवाददाता एक ही बीट में अधिक समय तक

कार्य करे, जिससे कि उसके अनुभव का लाभ संवाददाता को पूर्वानुमानित स्त्रोत के रूप में मिले और पत्रों को एक समाचार के रूप में।

4.2.3 lekpkj d fy, L=kr dl cuk,

पत्राकारिता में लंबे समय तक सफल बने रहने के लिए पत्रकार को स्त्रोत बनाने की प्रक्रिया में महारथ हासिल होनी चाहिए और स्त्रोत के कारण होने वाली समस्याओं से निपटने में सक्षम भी। यदि आपने स्त्रोत बना लिया, लेकिन उससे होने वाली समस्याओं को दूर करने में आप सक्षम नहीं है तो ऐसी स्थिति में कोई भी स्त्रोत आपका स्थायी नहीं होगा। जब स्त्रोत स्थायी नहीं होगा, तब समाचार का संकलन करना संवददाता के लिए कार्य करना पहाड़ पर चढने के बराबर होगा। संवाददाता को स्त्रोत बनाने या उससे संपर्क करते समय बहुत ही सजग और कौशल से कार्य करना पडता है। यदि किसी कारणवश पहली भेंट में स्त्रोत को यह लग गया कि संवाददाता विश्वसनीय नहीं है। ऐसी स्थिति में संवददाता के लिए स्त्रोत बनाना मुश्किल कार्य हो जाता है। इसीलिए यह कहा गया है कि संवाददाता को व्यवहार कुशल और शीघ्र मित्र बनाने वाला होना चाहिए। विषम परिस्थितियों में भी वह अपनों की खोज कर उसे बनाने में माहिर होना चाहिए। साथ ही वह हमेशा इस बात का ध्यान रखे कि बोलचाल की भाषा मे ऐसे शब्दों को प्रयोग नहीं कर दें, जिससे कि उसका स्त्रोत नाराज हो जाए।

स्त्रोत बनाने से पूर्व संवाददाता के लिए यह समझना जरूरी है कि जिसे वह स्त्रोत बना रहा है वह विश्वसनीय है या नहीं। यदि उसकी विश्वसनीयता नहीं है तो संवाददाता को इस प्रकार के स्त्रोत बनाने से अपने आप को परहेज करना चााहिए।

संवाददाता को अपनी बीट के अनुसार स्त्रोत की पहले खोज करनी चााहिए। अर्थात यदि वह अपराध संबंधित समचार का संकलन करता है, ऐसी स्थिति में उसके लिए कौन–कौन विश्वसनीय और उपयाोगी स्त्रोत हो सकते हैं की एक सूचि तैयार कर लेनी चाहिए। साथ ही उसे इस तथ्य की भी जानकारी होनी चाहिए कि उसके क्षेत्र में कितने थाना और पुलिस चौकी हैं। पुलिस चौकी और थाना प्रभारी कौन–कौन है इसका ज्ञान होना भी आवश्यक हैं। इसके अतिरिक्त उप पुलिस अधीक्षक, जिला पुलिस अधीक्षक से मिलकर संवाददाता को उन्हें अपना स्त्राोत बनाना चाहिए। संवाददाता को इस बात के लिए सदैव सजग रहना चाहिए कि किसी भी स्थिति में स्त्रोत आपके लिए परेशानी का सबब न बने, क्योंकि कई बार ऐसा देखने को मिला है कि स्त्रोत को जब इस बात का आभास या यूं कहें कि उसे विश्वास हो जाता है कि संवाददाता को जो जानकारी देगा उसके आधार पर वह स्टोरी फाइल करेगा।

ऐसी स्थितियों का लाभ उठाने की कोशिश करते हुए वह बिना सबूत के स्टोरी का क्लू बता देता है। यदि संवाददाता इन चीजों की या फिर कहें कि तथ्यों की छानबीन किये बिना यदि स्टोरी फाइल करता है तो उसे परेशानी का सामना करना पड सकता है। प्रायः इस प्रकार की कोशिशें भ्रष्टाचार, घोटाला या फिर किसी को परेशान करने के उद्देश्य से स्त्रोत द्वारा किया जाता है। इसे स्थिति से निपटने का सबसे आसान तरीका है कि इस प्रकार की स्टोरी करते समय तथ्यों और सबूतों के प्रति अधिक से अधिक सजग रहें।

यदि स्त्रोत किसी मामले की जानकारी देने के साथ–साथ सबूत दिखा देता है, लेकिन वह देने से इंकार करता है। तब संवाददाता को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। संवाददाता की यह कोशिश होनी चाहिए कि वह संबंधित सबूत में किसी पत्र व्यवहार का प्रयोग किया गया है तो उसकी संख्या को स्त्रोत को बिना बताए नोट कर ले।

स्त्रोत का सामना संवाददाता को प्रतिदिन करना पडता है। इसे ध्यान में रखते हुए संवाददाता का यह प्रयास होना चाहिए कि वह अपनी कार्य कुशलता से स्त्रोत के संपर्क में सदैव बना रहे। इसके लिए यह जरूरी नहीं है कि वह प्रतिदिन स्त्रोत से मिले ही, बल्कि उससे टेलीफोन या

मोबाइल के माध्यम से भी संपर्क कर उससे जुडे होने का परिचय देता रहे। कुछ अवसर ऐसे भी आते हैं जब किसी घटना या स्टोरी के लिए एक ही स्त्रोत से कार्य नहीं चलता है। उस स्थिति से निपटने के लिए संवददाता को चाहिए कि स्त्रोत के बीच से ही नए स्त्रोत की तलाश करें, क्योंकि ऐसा करने से उसका कार्य आसान होने की संभावना रहती है। स्त्रोत से समाचार निकालने की प्रक्रिया इतनी अधिक संवेदनशील और जटिल है,कि इसे मनौवैज्ञानिक कार्य कहा जाता है। पूरी प्रक्रिया को समझने के लिए इसे पांच भागों में बांटना होगा।

- सर्वप्रथम संवाददाता का मित्रवत व्यवहार।
- स्त्रोत से समाचार के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी बातचीत।
- स्त्रोत को समाचार देने के प्रति प्रेरित करना।
- स्त्रोत के मनोविज्ञान से अच्छी तरह अवगत होना।
- स्त्रोत को बिना परेशानी में डाले सूचना प्राप्त करना।

4.2.4 L=kr cukuk esa leL;k,a

समचारों का संकलन करते समय कई बार यह देखा गया है कि स्त्रोत संवाददाता के लिए परेशानी उत्पन्न कर देते हैं। ऐसी स्थिति आने पर संवाददाता को धैर्य का परिचय देना चाहिए, क्योंकि उसके द्वारा प्रगट किये गए व्यवहार से वह सदा के लिए अपना एक अव्छा और भरोसेमंद स्त्रोत खो सकता है।

इसके लिए यह आवश्यक है कि संवाददाता को स्त्रोत की मजबूरी या अन्य कारण को समझे तथा उसे अनावश्यक रूप से परेशाान नहीं करे। इस प्रकार की स्थिति न आए इसके लिए सदैव संवाददता को सजग रहना पड़ता है। स्त्रोत से होने वाली प्रमुख समस्याएं हैं।

L=kr dh gj ckr ;k izR;sd LVksjh dks ugha Qkby djuk : प्रायः यह देखने में आया है कि जब स्त्रोत द्वारा दी गई जानकारी के आधार पर कुछ स्टोरी संवाददाता द्वारा नहीं लिखी जाती है। उस स्थिति में स्त्रोत संवाददता से जी चुराने की कोशिश करता है। इस प्रकार की स्थिति आने पर संवाददता को स्त्रोत को वास्तविक स्थिति से अवगत करा देना चाहिए, जिससे कि उसके मन में उसके प्रति कोई दुराग्रह की भावना न पैदा हो जाए।

mlds ckjs esa ;fn udkjkRed lekpkj izdkf'kr gksuk % कई बार यह होता है कि संवाददाता के नहीं चाहते हुए भी उसे अपने स्त्रोत के खिलाफ समाचार लिखना पडता है। स्त्रोत के खिलाफ समाचार प्रकाशित होने पर यह स्वभाविक है कि स्त्रोत संवाददाता से नाराज होगा। ऐसी स्थिति आने पर उसके साथ पूरी सहानुभूति रखते हुए अपनी स्थिाति स्पष्ट करना चाहिए तथा हर संभव सहायता देनी चाहिए।

L=kr dh vkdka{kk ds vuqdwy lekpkj ugha izdkf'kr gksuk % स्त्रोत की कई बार हार्दिक इच्छा होती है कि उसके द्वारा दिए गए समचार को प्रमुखता से प्रकाशित किया जाए, लेकिन कुछेक ऐसे भी अवसर आते हैं। जब ऐसा करना संवाददाता के लिए संभव नहीं होता है।

L=kr ds fgrksa dk Hkh /;ku j[kuk % यदि स्त्रोत के हितों की अनदेखी जानबूझकर संवाददाता द्वारा कर दी जाती है। ऐसी स्थिति का पता चलने के बाद स्त्रोत की ओर से तीव्र प्रतिक्रिया होती है, जिसमें समचार देने या उसकी सूचना देने में वह अपनी असमर्थथता व्यक्त करता है। संवाददाता

के समझ ऐसी स्थिति आने पर इसका कारण जानने तथा उसे दूर करने का प्रयास करना वाहिए। ऐसा करके संवाददाता स्त्रोत की ओर से होनेवाली समस्याओं से छुटकारा पा सकता है।

4.2.5 lepkj ladyu ds fy, L=ksr dh mi;ksfxrk

समाचार संकलन के लिए संवाददाता के पास स्त्रोत रूपी बहुत बड़ा हथियार होता है। कई बार जिन समाचारों की आप कल्पना भी नहीं कर सकते उस तरह के समाचार आप को किसी भी बड़ी संस्था का या सरकारी अस्पताल का एक छोटा सा चपरासी दे सकता है। संवाददाता को चाहिए की उसे अपने स्त्रोत पर विश्वास होना चाहिए और स्त्रोत को संवाददाता पर।

यहां पर यह जानना अति आवश्यक है कि संवाददाता का स्त्रोत एक चपरासी, सफाई करने वाले से लेकर एक एम.एल.ए. तक हो सकता है या फिर कोई राजपत्रित अधिकारी तक हो सकता है। तो आप समझ गए होंगे कि संवाददाता के लिए समाचार संकलन में स्त्रोत की क्या उपयोगिता या भूमिका हो सकती है।

4.2.6 L=ksr ds izfr laoknnkrk dk O;ogkj

संवाददाता को सदैव अपने स्त्रोत के प्रति सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि स्त्रोत के प्रति बरती गई थोडी से उदासीनता या लापरवाही संवाददाता के लिए परेशानी का सबब बन सकती है। ऐसे में संवाददाता को चाहिए कि कम से कम प्रत्यक्ष स्त्रोत के साथ सदैव मित्रवत व्यवाहर रखे। अपने स्त्रोत को इस बात का एहसास कराता रहे कि उसका संबंध सिर्फ खबरों को लेकर नहीं है, वह उसका एक अच्छा मित्र भी है, जो दुख के समय में भी उसके साथ है।

इसीलिए कहा गया है कि जिस संवाददाता को अपने स्त्रोतों के साथ तालमेल बिठाना आ गया उसे कभी भी, यहां तक कि विपरीत परिस्थितियों में भी समाचार प्राप्त करने में कठिनाई नहीं होगी। एक संवाददाता का अपने स्त्रोत के प्रति व्यहार कैसा हो इस बारे में स्त्रोत बनाने की प्रक्रिया और समस्याएं संबंधित पाठ को पढकर आसनी समझा जा सकता है। उक्त दोनों पाठ का उल्लेख पूर्व में किया जा चुका है।

4.2.7 L=ksr dks izf'kf{kr D;ksa djsa

समाचार प्राप्ति के लिए स्त्रोत होना ही पर्याप्त नहीं होता है, क्योंकि जब तक आपके स्त्रोत को यह पता नहीं होगा कि आपकी रूचि किस प्रकार के समाचारों को प्राप्त करने में है या यों कहें कि कौन की घटना समाचार का रूप ले सकती है तब तक आपकों अपने स्त्रोत से समाचार नहीं प्राप्त होगा़ यहां इस बात का विशेष ध्यान रखें कि स्त्रोत अपने हितों के अनुरूप ही कई बार आपकों समाचार बता सकता है या उस बारे में सूचित कर सकता है।

वर्तमान दौर में समाचारों की प्रस्तुति और जिलावार संस्करण की लोकप्रियता ने संवाददाताओं को अप्रत्यक्ष रूप से मजबूर कर दिया है कि वह अपने अपने स्त्रोतों को समाचार क्या है के बारे में अवगत करा कर रखें. ऐसा न होने पर उसे कई बार प्रतिद्वंदी समाचार पत्रों के संवाददाताओं से समाचार संकलन में पिछड़ना पड सकता है।

4.3 lkj

lekpkj d L=kr fdru i dkj d gkr g% समाचार के स्त्रोत के तीन प्रकार के होते हैं. प्रत्याशित, अप्रत्याशित और पूर्वनुमानित स्त्रोत।

L=kr cuku dh ifd;k e egRoi.k rF; %

- समाचार के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी स्त्रोत से चर्चा करें
- स्त्रोत के साथ मित्रवत व्यवहार रखें
- समाचार देने या बताने के लिए प्रेरित करते रहें
- स्त्रोत के मनोविज्ञान से अवगत रहें
- स्त्रोत को बिना परेशानी में डाले सूचना प्राप्त करना

4.3 fof k'V “kCnkoyh

L=kr % समाचार प्राप्त करने का प्रमुख औजार। स्त्रोत के बिना समाचार प्राप्त करना असंभव जैसा है। स्त्रोत को तीन भागों में बांटा जा सकता है।

- प्रत्याषित स्त्रोत
- अप्रत्याषित स्त्रोत
- पूर्वानुमानित स्त्रोत

4.5 vkdyu i ukoyh

1- समाचार के स्त्रोत कितने प्रकार के होते है? समाचारों में स्त्रोत की उपयोगिता की विवेचना करें।

2- समाचार प्राप्त करने के लिए आप स्त्रोत कैसे बनाएंगे? इस बारे में 500 शब्दों में वर्णन करें।

3- स्त्रोत के प्रति संवाददाता का व्यवहार कैसा होना चाहिए? इस बारे में अपना मत तर्क के आधार पर प्रस्तुत करें।

4 एक संवाददता को स्त्रोत बनाने में किस प्रकार की समस्याओं का सामना करना पडता है? इस बारे में विस्तार से बताएं।

5 समाचार संकलन में स्त्रोत की उपयोगिता और उसके महत्व की विवेचना करें।

6 समाचार प्राप्ति के लिए स्त्रोत को प्रशिक्षित करना कहां उचित है? अपना तर्क पक्ष या विपक्ष में प्रस्तुत करें.

7 निम्नलिखित विषयों पर संक्षिप्त नोट लिखें

क. समाचार के तत्व

ख. प्रत्याशित स्त्रोत

ग. स्त्रोत बनाने की प्रक्रिया

घ. स्त्रोत के प्रति व्यवहार

4.6 lnHk iLrd

laiknu dyk latho Hkukor
fganh i=dkfjrk v:.k Hkxr
0;kolkf;d i=dkfjrk ,e-Hkh-dkeFk
i= vkSj i=dkj izkQslj dey nhf{kr
fons'k fjiksfVZax izkQslj jke "kj.k tks'kh

ukS ---

Block -C Unit – I

Lesson 5

loknnkrk ds xq.k] dk;Z vkSj nkf;Ro

ys[kd % Jh v:.kk dqekj iqujh{kd % Jh fefgj jatu ik=

<kapk

5.0 mn~ns';
5.1 ikB ifjp;
5.2 fo'k; oLrq izLrqfrdj.k
5.2.1 loknnkrk ds xq.k
5.2.2 loknnkrk ds dk;Z
5.2.3 loknnkrk ds nkf;Ro
5.3 lkj
5.4 fof'k"V 'kCnkoyh
5.5 vkdyu iz'ukoyh
5.6 lanHkZ iqLrdsa

5.0 mn~ns';

इस पाठ का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को यह बताना कि एक संवाददाता में क्या–क्या गुण होने चाहिए, संवाददाता को क्या कार्य करने चाहिए और क्या नहीं इसके अलावा एक अच्छे संवाददाता के समाज और संबंधित संस्था के प्रति क्या दायित्व होने चाहिए। संवाददाता किस प्रकार से कार्य करे कि वह समाज, संस्था और स्वंय के प्रति अपने उत्तरदायित्व को अच्छी प्रकार से निभा सके।

5.1 ikB ifjp;

संवाददाता की लेखनी में यह ताकत होती है कि वह समाज में रहने वाले लोगों की अवधारणा को बदलने में सक्षम होता है। संवाददाता के लिखे हुए समाचारों को पढने के बाद समाज के लोग किसी भी बात पर विश्वास करने को तैयार हो जाते है। इस बात को ध्यान में रखते हुए संवाददाता को कार्य करना चाहिए।

इन सब बातों के बावजूद उसे यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि वह जो कुछ भी करने जा रहा है उसका असर उसकी संस्था और उस पर भी पडेगा। यदि इन बातों को वह ध्यान में रखता है तो उसके कुछ निर्धारित कार्य, गुण व दायित्व बनते हैं जिन्हें इस पाठ के माध्यम से तैयार होने वाले भावी संवाददाताओं को बताने का प्रयास किया गया है।

5.2 fo’k; oLr| iLr|frdj.k

5.2.1 संवाददाता के गुण

5.2.2 संवाददाता के कार्य

5.2.3 संवाददाता के दायित्व

संवाददता किसी भी समाचार पत्र या इलेक्ट्रानिक मीडिया का आधार स्तंभ होता है। उसके बिना समाचार पत्र अधूरा है, क्योंकि जिसे वह पाठकों के बीच परोसता है उसे लाने का कार्य संवाददाता ही करता है। संवाददाता के महत्व और उत्तरादायित्व को देखते ही इसके बारे में कहा गया है कि इसे सर्व गुण सपंन्न होना चाहिए। लार्ड नार्थ क्लिप ने संवाददाता के बारे में कहा है कि संवददाता अखबार लिखता है और उपसंपादक उसे बनाताा है।

संवाददाता न केवल समाचारों का संकलन करता है, अपितु वह इसे लिखता भी है। इसके कार्य को देखते हुए संवाददाता को नारद भी कहा गया है। संवाददाता संवाद शब्द से बना है। इसका शाब्दिक अर्थ सामचार भेजने वाला अथवा बताने वाला होता है। अंग्रेजी में इसे रिपोर्टर और उर्दु में इसे खबरनबीस भी कहा जाता है। लोकतंत्र का चौथा स्तंभ होने के नाते इसका कार्य लोककल्याण और लोकहित के लिए समाचारों का संकलन और लेखन करना भी होता है। प्रत्येक संवाददता को समाचार कुत्ते की तरह सूंघना आना चाहिए, क्योंकि कई बार समाचार के लिए यह प्रवृति ही काम आती है। सूचना क्रांति ने पत्रकारिता को गतिमान बना दिया है, वहीं इस क्षेत्र में प्रशिक्षित युवाओं के प्रवेश ने संवाददाता की प्रतिस्पर्धा को बढा दिया है।

एक जमाना था जब संवाददाता की योग्यता के लिए किसी एक विषय की विषेशता पर्याप्त हुआ करती था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। संवाददाता से अपेक्षा की जाती है कि उसे हर विषय के बारे में विषेशता नहीं हो, लेकिन इतनी जानकारी जरूर हो कि संपादक को उसे समझाने में परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। विषेशकर मीडिया में इन दिनों खोजी रिपोर्ट के प्रचलन ने संवाददाता को जासूस जैसा बना दिया है। जो सदैव किसी न किसी खोजी रिपोर्ट के लिए जासूस की तरह कार्य करता रहता है।

इसके अतिरिक्त अदालतों की खबरों का संकलन करते हुए उसे एक वकील की तरह सभी पहलुओं का ध्यान रखना पड़ता है, जिससे कि उसकी रिपोर्ट कमजोर न हो जाए। दूसरे शब्दों में छात्र सिर्फ छात्र जीवन में परीक्षा देता है, वह भी एक निश्चित अवधि के बाद, लेकिन संवाददातता को प्रत्येक दिन परीक्षा देनी होती है और उसे परिणाम भी कुछ ही घंटों में मिल जाता है। संवाददाता की महत्ता, समाचार पत्र और समाज के प्रति उत्तरदायित्व को देखते हुए उसके पास निम्नलिखित गुण का होना अनिवार्य है।

5.2.1 laoknnkrk ds xq.k

- समाचार का ज्ञान
- समय की पाबंदी
- सर्वगुण संपन्न
- घुमक्कड़
- जिज्ञासु प्रवृति
- निर्भयता
- पूर्वानुमान

lekpkj dk Kku % एक अच्छे संवाददाता होने के लिए पहली योग्यता होती है कि उसे समाचार क्या है? का पर्याप्त ज्ञान हो। समाचार और विज्ञापन में अंतर समझने की परख होनी चाहिए। किस समाचार की पठनीयता अधिक होगी इसका भी ज्ञान होना जरूरी है। समाचार प्राप्त करने का कौशल भी आना चाहिए, नही ंतो उसे समाचार प्राप्त करने में दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा।

le; dh ikcanh % समय पर धटना स्थल या निर्धारित स्थल पर पहुंचने की प्रतिबद्धता का होना अनिवार्य है। क्योंकि यदि संवाददाता में समय पर काम करने की प्रवृति नहीं होगी तो इस बात की पूरी संभावना रहेगी कि वह समारोह के समाप्त होने के बाद वहां पर पहुंचे। समय की पांबदी नहीं होने से समाचारों के छूटने की संभावना अधिक रहेगी। इसके अतिरिक्त समय पर समाचार नहीं लिखकर देने के कारण वह प्रकाशित नहीं हो पायेगा। ऐसा होने पर उस समाचार की उपयोगिता समाप्त हो जाएगी।

loZ xq.k laiUu % पत्रकारिता के क्षेत्र में सफल होने के लिए संवाददाता को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह समाचार का वाहक है न की उत्पादक। ऐसी स्थिति में विषेशता से अधिक उसके लिए सर्व गुण का संपन्न होना अधिक जरूरी है। तभी तो कहा गया है कि संवाददाता भले ही विद्वान, साहित्यकार, लेखक और विषेशज्ञ न हो, लेकिन उसे थोड़ा–थोडा ही सही सभी विषयों की जानकारी होनी चाहिए। यदि वह

हिन्दी की पत्रकारिता से जुड़ा है तो अंग्रेजी का भी ज्ञान तथा यदि वह अंग्रेजी की पत्रकारिता से जुड़ा है तो हिन्दी का भी ज्ञान होना जरूरी है।

/keDdM % किसी भी स्तर का संवाददाता हो उसे धुमक्कड़ प्रवृति का होना चाहिए। जब तक उसमें धुमक्कड प्रवृति नहीं होगी, संवाददाता समाचार संकलन के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना पसंद नहीं करेगा। संवाददाता जब एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाएगा ही नहीं, तो उस स्थिति में उसे समाचार कहां से मिलेगा।

ftKklq iofr % एक अच्छा संवाददाता वही हो सकता है, जिसमें किसी भी विषय की जानकारी की जिज्ञासा बनी रहती है। उक्त जिज्ञासा के आधार पर वह सदैव कुछ न कुछ खोज–बीन करता रहता है। जिज्ञासु प्रवृति ही संवाददाता को घटना की तह तक जाने के लिए प्रेरित करता है और सझम बनाता है। यहां तक की नए तथ्यों की तलाश कर वह समाचार की गुणवत्ता को बढ़ा देता है।

fuHkZ;rk % निर्भयता के साथ–साथ जोखिम उठाने की क्षमता संवाददाता की अपरिहार्य योग्यता है। कई बार ऐसा देखने में आया है कि संवाददाता समाचार प्राप्त करने के लिए अपनी जान जोखिम में डाल देता है। इतना ही सत्य पर आधारित विशेषकर भ्रष्टाचार से जुड़े समाचार को प्रकाशित करने पर संवाददाता को जान से मारने की धमकी भी मिला करती है। ऐसे में संवाददाता को निर्भयता का परिचय देते हुए समाचार का लेखन करना चाहिए।

iokZuqeku % किसी घटना क्रम के बारे में पूर्वानुमान लगाने की क्षमता भी संवाददाता के पास होनी चाहिए। संवाददाता के पास यह एक ऐसी योग्ता होती है, जिसके आधार पर वह वर्तमान और भविष्य का सटीक आंकलन कर लेता है।

संवाददाता के पास उपर्युक्त गुणों के अतिरिक्त सत्य निष्ठा, अधिक कार्य करने की क्षमता, धैर्य, व्यवहार कुशल, व्यक्तित्व की मुखरता, सत्य परायाणता, कल्पनाशीलता, वस्तुनिष्ठता और सर्जनात्मक कौशल भी होना चाहिए।

5.2.2 laoknnkrk ds dk;Z

संवाददाता का सबसे प्रमुख कार्य है समचार का संकलन करना। इसके लिए संवाददाता को अनेक कार्य करने होते हैं। इस क्रम में उसे तथ्यों का संकलन करने के साथ–साथ घटना प्रसंग में सत्य की खोज भी करना होता है। संवाददाता के लेखन से पाठक की जिज्ञासाओं की पूर्ति होती है। पाठक अपने आस पड़ोस, देश समाज और विदेश की गतिविधियों से अवगत हो पाता है। देश–विदेश में फैले हजारों संवाददाता के संवाद संकलन और लेखन से समाचार पत्रों के लिए कच्ची सामग्री तैयार होती है। जो मूलतः सर्जनात्मक कार्य है। संवाददाता घटना प्रसंग का अवलोकन, निरीक्षण और परीक्षण भी करता है। वह घटना की गहराई में जाकर उसे समझता है। प्रत्येक पक्ष को देखता है और उसका सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत करता है। संवाददाता जैसा महसूस करता है वह वैसा ही रेखांकित भी करता है। नेताओं के बयान को वह अक्षरसः लिखने

की जगह उसका आश्य भी स्पष्ट करने की कोशिश करता है। संवाददाता के प्रमुख कार्य को निम्मलिखित प्रकार से समझा जा सकता है।

- समाचार संकलन के लिए उसे नियमित रूप से अपने सूत्रों से मिलना होता है।
- घटना प्रसंग का निरीक्षण और परीक्षण करना।
- घटना की रोचक और सजीव प्रस्तुति।
- विवाद की स्थिति में पक्ष और विपक्ष को समान महत्व देना।
- निर्भयतापूर्वक सत्य को उजागर करना।
- समाचार, फीचर अथवा साक्षात्कार की निर्धारित शैली में लेखन करता है।
- संवाददाता अपने संबंधों, पूर्वग्रहों और राग द्वेश से दूर रहना।

5.2.3 l oknnkrk d nkf;Ro

[khpk u dekuk dk u ryokj fudky]
tc rki epdkfcy gk rk v[kckj fudkykA

उपरोक्त पंक्ति देश के स्वतंत्र होने से पूर्व समाचार पत्रों की महत्ता और संवाददाता के दायित्व का निर्धारित करके लिखी गई थी। संवाददाता का कार्य दायित्व से ओत–प्रोत है। यदि उसने एक भूल कर समाज को प्रभावित करता है, क्योंकि थोड़ी असावधानी कहीं पर दंगा भड़का सकती है, समाज में तनाव पैदा कर सकती है। यहां तक की किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा मिनटों में धूमिल हो सकती है।

संवाददता के दायित्व को रेखांकित करते हुए भारत के पूर्व राष्ट्रपति वी.वी. गिरी ने लिखा है। मेरी यह दृढ़ मान्यता है कि जनता में चेतना जागृति लाना और परिवर्तन के मार्ग खोलना प्रेस का कर्त्वय है। मुझे यह देखकर निराशा होती है कि हमारे समाचार पत्र राजनीति और राजनीतिक कार्यक्रमों को अनावश्यक महत्व देते हैं। आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में जो भारी बदलाव हो रहे हैं उनका विशेष रूप से प्रकाशन होना चाहिए। इस ओर अधिक सचेत रहकर प्रेस जनता को सहभागी बनाकर उन परिवर्तनों की गति तेज और सहज कर देता है। उस शक्ति का हितकर प्रयोग किया जाए तो उन्हें जनमानस का साधुवाद भी प्राप्त होगा।

वर्तमान में देश के राष्ट्रपति महामहिम डा. कलाम ने भी अपनी पुस्तक में मीडिया के बारे में अलग से टिप्पणी करते हुए संवाददाताओं से अपने दायित्व के प्रति सजग रहने के लिए कहा है।

संवाददाता का उत्तरदायित्व देश की एकता, अखंड़ता, राष्ट्रीय सुरक्षा और स्वाभिमान की रक्षा करना भी है। इस दृष्टि से संवाददाता मानवतावादी होते हुए भी सबसे पहले राष्ट्रवादी है। उसके समाचार लेखन से किसी भी तरह राष्ट्रवाद का अहित नहीं होना चाहिए। पडोसी राष्ट्रों से युद्ध, कूटनीति और सामरिक शक्ति को ध्यान में रखते हुए

प़त्रकारों को संयम बरतना चाहिए। ऐसा लेखन बिल्कुल नहीं होना चाहिए, जिससे सेना का मनोबल टूटे। पत्रकारों का उत्तरदायित्व लोकहित और लोककल्याण से जुडा है। वह भगवान शिव की तरह विषपानी है। वह समाज के चतुर्दिक विकास के लिए प्रतिबद्ध होता है। समाजसेवा के व्रत के कारण पत्रकार अथवा संवाददाता का महत्व समाज में अधिक होता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है कि आज का अधिकतर पत्रकार सुविधा भोगी हो गया है। संपादक अपने अधीन काम करने वाले पत्रकारों के शोषण का एक त़ंत्र बनकर सिमट गया है। संवाददाता प्रायः अभिव्यक्ति की स्वत़ंत्रता का प्रतीक होता है। वह पीड़ित प्रभावित और दबे कुचले जनता की आवाज को बुलंद करता है। इसलिए उसपर किसी बाहरी त़ंत्र का नियंत्रण नहीं होना चाहिए।

वह राष्ट्र के प्रति अपने उत्तरदाायित्व को समझता है। इसलिए राष्ट्रहित में उस पर किसी प्रकार का अंकुश नहीं लगाना चाहिए। यह महात्मा गांधी के निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट है। समाचार पत्रों का संचालन सेवा भाव से ही होना चाहिए। समाचार पत्र एक भारी शक्ति है। जिस प्रकार निरंकुष जल प्रवाह पृथ्वी के कई भागों को डुबा देता है और फसल को नष्ट भ्रष्ट कर देता है। उसी प्रकार निरंकुश पत्रकार की कलम की धार भी सत्यानाश कर देती है। उस पर अंकुश यदि बाहरी हो तो वह इस निरंकुशता से भी अधिक जहरीला होता है।

अतः लाभदायक तो अंदर का ही अंकुश हो सकता है। आज की पत्रकारिता जन जीवन में देशभक्ति, एकता और अखंडता की भावना भरने की जगह भाषा के नाम पर अलगाववाद ? धर्म और संप्रदाय के नाम भेद भाव तथा क्षेत्रवाद का विष वमन कर रहा है। पत्रकार अपने उत्तरदायित्व से विमुख हो रहा है। वह स्वार्थी और सुविधाभोगी होता जा रहा है। आपातकालीन के दौरान कई पत्रकारों का आचरण लज्जास्पद था। देश और समाज के मार्गदर्शन के उत्तरदायित्व का निर्वहण वह नहीं कर रहा है।

विकासशील देशों में पत्रकार और संवाददता का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। भारत के संबंध में विकास पत्रकारिता काफी अधिक है। उससे राष्ट्र को गति मिलती है। वरिष्ठ पत्रकार और लेखक आचार्य लक्ष्मीनारायण गर्दे के अनुसार पत्रकार की दृष्टि व्यापक होनी चाहिए। सभी कुछ खुली आंखों, किंतु तटस्थ भाव से देखना चाहिए। मंगलभावना से सुंदर समाज और सशक्त राष्ट्रनिर्माण के लिए अपने विचारों का विनियोग करना चाहिए।

पत्राकार समाज का न्यासी होता है। वह बिना लाभ लोभ के, किसी बाहरी तंत्रा से प्रभावित हुए बगैर सत्य को उजागर करता है। मानव जाति के हित के लिए पत्रकार वह सबकुछ करता है, जो उसे करना चाहिए। इस दृष्टि से पत्रकारिता विशुद्ध समाज सेवा का काम है। पत्रकार का उत्तरदायित्व परिवर्तनों को रेखांकित करना है। समाज की विकास प्रक्रिया में वह अपना बौाद्धिक योगदान देता है।

5.3 lkj

lоknnkrk d: fof k'V x|.k

- समाचार का ज्ञान
- समय की पाबंदी
- सर्वगुण संपन्न
- घुमक्कड़
- जिज्ञासु प्रवृति
- निर्भयता
- पूर्वानुमान

loknnkrk ds dk;l

- समाचार संकलन के लिए उसे नियमित रूप से अपने सूत्रों से मिलना होता है।
- घटना प्रसंग का निरीक्षण और परीक्षण करना।
- घटना की रोचक और सजीव प्रस्तुति।
- विवाद की स्थिति में पक्ष और विपक्ष को समान महत्व देना।
- निर्भयतापूर्वक सत्य को उजागर करना।
- समाचार, फीचर अथवा साक्षात्कार की निर्धारित शैली में लेखन करता है।
- संवाददाता अपने संबंधों, पूर्वग्रहों और राग द्वेश से दूर रहना।

5.4 fof k’V “kCnkoyh

ftKkl| iofr % एक अच्छा संवाददाता वही हो सकता है, जिसमें किसी भी विषय की जानकारी की जिज्ञासा बनी रहती है। उक्त जिज्ञासा के आधार पर वह सदैव कुछ न कुछ खोज–बीन करता रहता है।

5.5 vkdyu i' ukoyh

1- एक कुशल संवाददाता में क्या–क्या गुण होने चाहिए?
2. संवाददाता के कार्यो की विवेचना अपने शब्दों में कीजिए।
3. संवाददाता के दायित्व क्या–क्या होते हैं और किस के प्रति?
4. आपके अनुसार भारत की आजादी से पहले के संवाददाता और आज के संवाददाता में क्या अन्तर है?
5. संवाददाता के गुणों में यदि एक या दो गुण कम हों तो उसका काम चल सकता है या नहीं?

5.6 lanHkZ iqLrdsa

d- laiknu dyk latho Hkukor
[k- fganh i=dkfjrk v:.k Hkxr
x- 0;kolkf;d i=dkfjrk ,e-Hkh-dkeFk
?k- i= vkSj i=dkj izksQslj dey nhf{kr
M- fons k fjiksfVaZx izksQslj jke “kj.k tks kh

Block – C   Unit – II

Lesson 6

laoknnkrkvksa ds izdkj

ys[kd % Jh v:.kks k dqekj   iqujh{kd % Jh fefgj
jatu ik=

<u><kapk</u>

6.0 mnns ;

6.1 ikB ifjp;

6.2 fo'k; oLrq izLrqfrdj.k

- 6.2.1 fo ks'k laoknnkrk
- 6.2.2 jktuhfr laoknnkrk%
- 6.2.3 jksfeax fjiksVZj %
- 6.2.4 eq[; laoknnkrk%
- 6.2.5 ofj'B laoknnkrk %
- 6.2.6 laoknnkrk
- 6.2.7 [ksy laoknnkrk
- 6.2.8 okf.kT; laoknnkrk
- 6.2.9 va kdkfyd laoknnkrk

6.3 lkj

6.4 fof k'V "kCnkoyh

6.5 vkadyu iz ukoyh

6.6 lanHkZ iqLrdsa

6.0 mnn ; % समाचार पत्रों में संवाददाताओं का महत्वपूर्ण स्थान होता है। समाचार को इक्कट्ठा करने के लिए संवाददाताओं की आवश्यकता होती है। समाचार भी विभिन्न प्रकार के होते हैं। भिन्न–भिन्न प्रकार के समाचारों के लिए विभिन्न संवाददाताओं की आवश्यकता होती है। संवाददाताओं को उनकी रुचि के अनुसार या परिस्थितयों के अनुसार क्षेत्र बांट दिए जाते हैं। इन बांटे गए क्षेत्रों को संवाददाताओं की बीट कहा जाता है।

प्रत्येक संवाददाता को अपनी–अपनी बीट से समाचार इक्ट्टठे करके ब्यूरो कार्यालय में लाकर टाईप करके देने होते हैं। पहले के समय में समाचारों को हाथ से लिखकर देना होता था, लेकिन कम्प्यूटर के आने के बाद से समाचारों को टाईप करके देने का कार्य भी संवाददाता का ही होता है। इस पाठ का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थियों को यह पता चले कि संवाददाता किस प्रकार से अलग–अलग तरह के समाचारों को इक्कट्ठा करते है।

6.1 ikB ifjp;

संवाददाताओं में विशेष संवाददाता तथा सहसंवाददाता का प्रचलन समाप्त होता जा रहा है, इसके पीछे यह कारण है कि समाचारों को तेजी से इक्ट्टठा करना व अलग–अलग तरह के सभी समाचारों पर पकड़ होना। यह सब कार्य एक ही संवाददाता से नहीं किए जा सकते। अलग–अलग तरह के समाचारों के लिए संवाददाताओं की रूचियों का भी ध्यान रखा जाता है, जिससे की उस बीट में बेहतर समाचार प्राप्त किए जा सकें।

इसी को ध्यान में रखते हुए संवाददाताओं को अलग बीट जैसे अपराध, शिक्षा स्कूल, कालेज, व्यापार व राजनीति दी जाती हैं।

समय के साथ–साथ समाचार पत्रों में संवाददाताओं की श्रेणी में भी तेजी से परिवर्तन किया जा रहा है। कई समाचार पत्रों ने क्षेत्र विशेष की मांग के अनुसार रोमिंग संवाददाता का अलग से पद सृजित किया है। इसके अतिरिक्त कई समाचार पत्रों ने संवददाताओं को क्रेडिट लाइन देने की जगह ब्यूरो या संबधित समाचार का न्यूज देना शुरू कर दिया है। इन परिवर्तनों के बावजूद संवाददातओं की श्रेणी निम्न प्रकार है।

6.2 fo'k; oLr| iLrfrdj.k

6.2.1 विशेष संवाददाता
6.2.2 राजनीति संवाददाताः
6.2.3 रोमिंग रिपोर्टर :
6.2.4 मुख्य संवाददाताः
6.2.5 वरिष्ठ संवाददाता :
6.2.6 संवाददाता
6.2.7 खेल संवाददाता
6.2.8 वाणिज्य संवाददाता

6.2.9 अंशकालिक संवाददाता

6.2.1 fo k’k l oknnkrk : समाचार पत्रों में धीर–धीरे विशेष संवाददाता रखने की प्रवति समाप्त होती जा रही है। अधिकांश समाचार पत्रों में विशेष संवाददाता का स्थान समाचार संपादक या संपादकों ने लिया है। पहले भी विशेष संवाददाता को समाचार संपादक या संपादक के समकक्ष ही माना जाता था। विशेष संवाददाता द्वारा समाचार का लेखन किसी खास मौके या विशेष खबर के लिए किया जाता है।

6.2.2 jktuhfr l oknnkrk : प्रायः सभी समाचार पत्रों में राजनीतिक संवाददता होते हैं। विशेषकर राजनीतिक संवाददताओं की नियुक्ति राज्यों की राजधानी या देश की राजधानी दिल्ली के लिए किया जाता है। इनका कार्य राजनीतिक समाचारों का संकलन से लेकर विश्लेषण करना तक होता है। इसके अतिरिक्त अब समाचार पत्रों के प्रबंधकों ने समाचार पत्र जहां से प्रकाशित होता है। वहां पर भी राजनतिक संवाददाताओं को रखना प्रारंभ कर दिया है।

6.2.3 jkfex fjikVj % इन दिनों समाचार पत्रों ने क्षेत्र विशेष की धटनाओं पर विशेष समाचार देने के लिए मुख्यालयों में रोमिंग रिपोर्टर रखना प्रारंभ किया है। उसका कार्य मुख्य रूप से समाचार पत्र के प्रकाशन क्षेत्रों के आसपास के जिलों में होने वाली प्रमुख धटनाओं की कवरेज करना या बड़ी राजनीतिक आम सभा या दुर्धटना होने की स्थिति में घटना स्थल पर जाकर समाचार का संकलन करने से संबंधित प्रमुख कार्य हैं।

6.2.4 e[; l oknnkrk % मुख्य संवाददताओं को ब्यूरो प्रमुख भी कहा जाता है। समाचार पत्रों के जिलावार संस्करण प्रकाशित होने के कारण अब प्रत्येक जिलों में समाचार पत्रों द्वारा मुख्य संवाददाता या ब्यूरों प्रमुख की नियुक्ति की जाती है। उसका कार्य समाचार संकलन के अतिरिक्त अपनी टीम का संचालन करना है। पहले मुख्य संवाददाता समाचार पत्रों के प्रकाशन स्थल या राज्य के राजधानियों में ही हुआ करते थे।

6.2.5 ofj’B l oknnkrk % वरिष्ठ संवाददाता को सह ब्यूरो प्रमुख भी कहा जाता है। वह मुख्य संवाददाता की अनुपस्थिति में मुख्य संवाददाता की हैसियत से कार्य करता है। इसके अतिरिक्त नगर की प्रमुख घटनाओं के समाचार संकलन की जिम्मेवारी भी उसी की होती है।

6.2.6 l oknnkrk % संवाददाता भी समाचार पत्र में पूर्ण कालिक संवाददाता होता है। उसका कार्य संबंधित स्थान विशेष पर निर्भर करता है। कई स्थानों पर एक से अधिक संवाददाता होते हैं। उन्हें अलग–अलग बीट चार्ट के आधार पर कार्य करना होता है। जैसे शिक्षा, अपराध व अन्य।

6.2.7 [ky l oknnkrk % खेल से संबंधित पाठकों की संख्या को देखते हुए समाचार पत्र हो या इलेक्ट्रानिक मीडिया सभी को अलग से खेल से जुड़े समाचार के लिए स्थान देना होता है। इसे देखते हुए खेल संवाददाताओं की नियुक्ति की जाती है। खेल संवाददाता का कार्य खेल से जुडी सभी प्रकार के समाचारों का संकलन करना होता है। जिस प्रकार जिला स्तर पर खेल की

गतिविधियां अधिक होने लगी है। इसे देखते हुए जहां पर खेल संवाददाता नहीं है, वहां पर खेल समाचारों के लिए एक संवददाता को अलग से जिम्मेदारी दी जाती है।

6.2.8 okf.kT; laoknnkrk % यह जरूरी नहीं है कि सभी संवाददाता को वाणिज्य से संबंधित जानकारी हो। वाणिज्य संबंधी गतिविधियां समाचार पत्रों की आय का एक प्रमुख स्त्रोत है। इसे ध्यान में रखते हुए समाचार पत्रों के मुख्यालयों और वाणिज्यिक स्थलों पर वाणिज्य संवाददाता की नियुक्ति की जाती है। वाणिज्य संवाददाता कार्य वाणिज्य से जुडी समाचारों के अतिरिक्त विज्ञापन विभाग द्वारा लाए गए विज्ञापन उत्पादों के बारे में विस्तार से पाठकों को बताना।

6.2.9 va'kdkfyd laoknnkrk % समाचार पत्रों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में या सब डिवीजन स्तर पर इस प्रकार के अंशकालिक संवाददाता रखे जाते हैं। जिन्हें समाचार प्रकाशन के आधार पर उनका भुगताान किया जाता है। इसके अतिरिक्त उन्हें समाचार भेजने तथा अन्य खर्चे के लिए प्रतिमाह कुछ मानदेय भी दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों में संवददाताओं की इतनी श्रेणियां है कि उन्हें 34 श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है। क्योंकि हर संवाददता एक ही प्रकार का कार्य नहीं करता है। उसे अलग–अलग विषयों पर कार्य करने होते हैं। दूसरी ओर वेतन आयोग ने पत्राारों को निम्मलिखित श्रेणियाों में विभिाजित किया है। प्रथम श्रेणी में विषेश संवाददाता को, दूसरे वर्ग में मुख्य संवाददाता, तृतीय वर्ग में वरिष्ठ संवाददाता और चौथे वर्ग में रिपोर्टर या संवाददाता को रखा गया है।

6.3 lkj

- विशेष संवाददाता
- राजनीति संवाददाताः
- रोमिंग रिपोर्टर :
- मुख्य संवाददाताः
- वरिष्ठ संवाददाता :
- संवाददाता
- खेल संवाददाता
- वाणिज्य संवाददाता
- अंशकालिक संवाददाता

6.4 fof'k"V 'kCnkoyh

va'kdkfyd laoknnkrk ;k LVªhxj % दूर–दराज के इलाकों के लिए समाचार संस्था संवाददाताओं को नियुक्त करती है, संवाददाता अधिकतर उसी जगह का निवासी होता है। यह

संवाददाता उस इलाके की सारी खबरें टाईप करके मॉडम के प्रयोग से संबंधित कार्यालय तक पहुंचा देता है। इन्हीं पहुंचायी गई खबरों के आधार पर संस्था उसको भुगतान करती है। अंग्रेजी में इसे LVhxj कहते हैं।

6.5 vkdyu i ukoyh

1- बीट क्या होती है? किन्हीं दो प्रकार की बीटों का निर्धारण स्वंय करके उनके समाचारों के दो–दो उदाहरण दें।
2. संवाददाता कितने प्रकार के होते हैं? किन्ही छहः प्रकार के संवाददाताओं के बारे में विस्तार विस्तारपूर्वक लिखें।
3. यदि आपको अपराध बीट दे दी जाए तो अपने गृह जिले से संबंधित चार अपराध के समाचार लिखें।
4. राजनीति संवाददाता की कार्य शैली पर पांच सौ शब्दों में प्रकाश डालें।
5. संवाददाता व अंशकालिक संवाददाता में अन्तर स्पष्ट करें।

6.6 l nHk iLrd

d- l iknu dyk l tho Hkkukor

[k- fon k fjikfVx jke "kj.k tk kh

x- Nk;kokn;xhu lkfgfR;d i=dkfjrk Mk- je kpUn f=ikBh

?k- ehfM;k ,M lklk;Vh ohj okyk vxoky

Block – D Unit I
Lesson 7

vijk/k lekpkj] vnkyrh lekpkj] j{kk] jktuhfr] okf.kT; vkSj 0;kikj] [ksy lekpkj

ys[kd % Jh v:.kk dqekj iqujh{kd % Jh fefgj jatu ik=

<u><kapk</u>

7.0 mn~ns';
7.1 ikB ifjp;
7.2 fo’k; oLrq iLrqfrdj.k
7.2.1 vijk/k lekpkj dh ifjHkk’kk
7.2.2 vijk/k lekpkj ds izdkj
7.2.3 vijk/k lekpkj ds dqN uewus
7.2.4 vnkyr lekpkj fdls dgrs gSa
7.2.5 vnkyr lekpkj dh lko/kkfu;ka
7.2.6 vnkyr lekpkj ds dqN uewus
7.2.7 j{kk lekpkj fdls dgrs gSa
7.2.8 j{kk lekpkj ladyu esa /;ku j[kus ;ksX; rF;
7.2.9 jktuhfr lekpkj fdls dgrs gSa
7.2.10 jktuhfrd lekpkj ds dqN mnkgj.k
7.2.11 okf.kT; vkSj 0;kikj lekpkj fdls dgrs gSa
7.2.12 okf.kT; vkSj 0;kikj lekpkj ds pqfuank mnkgj.k
7.2.13 [ksy lekpkj dh ifjHkk’kk
7.2.14 [ksy lekpkj ds fo’k;
7.2.15 [ksy lekpkj ds pqfuank mgkgj.k
7.3 lkj
7.4 fof'k’V “kCnkoyh
7.5 vkdyu iz'ukoyh

7.6 lnHk iLrd

7.0 mnn ;

इस अध्याय को पढकर पत्रकारिता के छात्र समाचार संकलन के निम्नलिखित विषयों के बारे में विस्तारपूर्वक जान जाएंगे और जानने व समझने में आसानी होगी।

7.1 ikB ifjp;

पत्रकारिता के विद्यार्थियों को समाचारों के प्रकार जैसे कि अपराध, राजनीति, खेल व वाणिज्य समाचारों के बारे में तकनीकि ज्ञान व उन्हें लिखते समय बरतने वाली सावधानियों के बारे में अवगत करवाने का प्रयास किया गया है। इस पाठ को पढ़ने के बाद विद्यार्थियों को यह ज्ञान तो अवश्य हो जाएगा कि समाचारों को लिखते समय किन–किन सावधानियों व तकनीकों का ख्याल रखना होगा। इस पाठ के बीच–बीच में समाचारों के प्रकार के उदाहरण भी दिए गए हैं जिनको भली–भांति पढ़ने के बाद विद्यार्थियों को स्वयं भी इसी तरह के समाचार लिख कर देखने चाहिए व उन्हें प्रतिदिन समाचार पत्रों में प्रकाशित होने वाली खबरों पर कक्षा में चर्चा करनी चाहिए। इस प्रकार के प्रतिदिन के अभ्यास से छात्रों की आने वाले समय के लिए ठीक प्रकार से तैयारी हो सकेगी।

7.2 fo'k; oLr iLrfrdj.k

7.2.1 अपराध समाचार की परिभाषा
7.2.2 अपराध समाचार के प्रकार
7.2.3 अपराध समाचार के कुछ नमूने
7.2.4 अदालत समाचार किसे कहते हैं
7.2.5 अदालत समाचार की सावधानियां
7.2.6 अदालत समाचार के कुछ नमूने
7.2.7 रक्षा समाचार किसे कहते हैं
7.2.8 रक्षा समाचार संकलन में ध्यान रखने योग्य तथ्य
7.2.9 राजनीति समाचार किसे कहते हैं
7.2.10 राजनीतिक समाचार के कुछ उदाहरण
7.2.11 वाणिज्य और व्यापार समाचार किसे कहते हैं
7.2.12 वाणिज्य और व्यापार समाचार के चुनिंदे उदाहरण
7.2.13 खेल समाचार की परिभाषा
7.2.14 खेल समाचार के विषय
7.2.15 खेल समाचार के चुनिंदे उहाहरण

7.2.1 vijk/k lekpkj dh ifjHkk'kk % कानून में जिन अपराधों का उल्लेख किया गया है वे ही अपराध समाचार होते हैं। लेकिन इसमें एक ध्यान देने योग्य बात यह है कि सभी अपराध की बातें समाचार में प्रकाशित करने लायक नहीं होती है। इनमें कई ऐसे समाचार होते हैं, जिनमें जानते हुए भी नामों का उल्लेख या पहचान छिपा दी जाती है। विशेषकर बलात्कार से संबंधित समाचार में पीडित महिता या लडकी का नाम नहीं प्रकााशित किया जाता है। अपराध के समाचारों को प्रमुख स्त्रोत संवाददाता के लिए पुलिस होती है, लेकिन कई बार यह देखने में आया है कि छोटे से लेकर बडे अपराधों का स्त्रोत प्रत्यक्षदर्शी या अन्य विभागों का या फिर आपका कोई जानकार होता है। इस कारण यह है कि डकैती, चोरी, लूटपाट की धटनाओं में देखा गया है कि इस बारे में संवाददाता को सूचना पहले मिल जाती है और पुलिस को बाद में। यह सब संवाददाता के संपर्क सूत्र पर निर्भर करता है। इसके अतिरिक्त कुछ अपराधी ऐसे भी होते है, जो नगर में दहशत फैलाने के लिए वारदात से पूर्व या उसके बाद उसकी सूचना संवाददाता तक पहुंचा देते हैं। वर्तमान में जिस प्रकार अपराधिक धटनाओं की संख्या बढी है और इस मामले में पुलिस द्वारा छिपाने की प्रवृति बढ़ी है। उस कारण संवाददाता के लिए अपराध से संबंधितत समचारों का संकलन करना एक चुनौती का कार्य बन गया है। कुछ स्थानों पर यह भी देखा गया है कि जिला पुलिस अधीक्षक द्वारा थानों को यह भी निर्देष दे दिया जाता है कि वे किसी भी अपराध के बारे में जानकारी बिना उनकी अनुमति के किसी भी संवाददाता को नहीं दें। ऐसी स्थिति में अपराध संबंधी समाचार का संकलन के लिए संवाददतता को अपने व्यवहार कुशलता का प्रदर्शन करते हुए अपने मजबूत व विश्वासी सूत्रों की मदद लेनी पडती है। इन सब के बावजूद अपराध संबंधी समाचारों को विश्वसनीय और अधिकृत बनाने के लिए पुलिस का आधार बनाना जरूरी है। अर्थात यदि नगर में कोई बडी अपराधिक घटना जैसे किसी की हत्या, डकैती, चोरी या अपहरण या फिर फिरौती मांगने की घटना हुई है तो इन मामलों में पुलिस की ओर से आधिकारिक पुष्टि का होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त संवाददाता को यह भी बताना होता है कि पुलिस ने उस मामले में कौन सी धारा के तहत कार्रवाई कर रही है। यदि संवाददता को इन अपराधों की पुष्ट जानकारी है और पुलिस द्वारा पुष्टि नहीं की जा रही है। ऐसी स्थिति में संवाददाता पूरे घटनाक्रम का विवरण देते हुए यह लिख सकता है कि पुलिस ने उक्त धटना के बारे में पुष्टि नहीं की है।

अपराध संबंधी समाचार के लिए संवाददाता को प्रतिदिन पुलिस चौकी, थानों, जिला पुलिस अधीक्षक कार्यालय से सजीव संपर्क बनाकर रखना होता है। इसके लिए यह अनिवार्य नहीं है कि संवाददाता हमेशा थाने में ही या पुलिस चौकी में बैठा रहे। संवाददाता को इसके लिए सिलसिलेवार तरीके से थानों से संपर्क स्थापित करना पडता है। थानों में थाना प्रभारी और मुंशी के साथ संवाददाता का जीवंत संपर्क होना अनिवार्य है। ऐसा नहीं होने पर यह देखा गया है कि बडे अपराध होने पर उससे संबंधित समाचार का संकलन करने में संवाददता को परेशानी का सामना करना पडता है। इतना ही नहीं यदि संवाददाता को विभिन्न्न अपराधों के लिए भारतीय दंड संहिता का प्रयोग किया जाता है की जाानकारी होना भी अनिवार्य है, क्योंकि ऐसा नहीं होने पर उसे कई बार इस बात की जानकारी नहीं मिल पायेगी कि पुलिस किसी घटना किस धारा के तहत कार्रवाई कर रही है। मानो के नगर में कोई बडी डकैती की धटना हुई है और पुलिस इस मामले में चोरी का प्रयोग कर रही है तो यह घटना में संवाददाता के लिए समाचार होता है। अपराध के समाचारों की बढ़ती चुनौती को देखते हुए ही अपराध संवाददाता को यह सलाह और हिदायत दी जाती है कि वह धटना स्थल पर एक बार जरूर जाए। यदि उसके मन में कोई शंका रह रही हो तो उसके लिए पुनःधटना स्थल पर जाना जरूरी है तो वहां जाने के लिए आलस न करें। क्योंकि धटना स्थल पर जाने के बाद संवाददाता को प्रत्यक्षदर्शियों और अन्य लोगों से कई प्रकार की जानकारी प्राप्त होती है, जिसकी जानकारी पुलिस से भी नहीं मिल सकती थी। पाठकों में अपराध से संबंधित समाचारों के प्रति जिज्ञास प्रवृति ने समाचार पत्रों को अपराधिक समाचार प्रमुखता से प्रकाशित करने पर विवश

कर दिया है। ऐसे में अपराध संवाददाता के लिए यह अनिवार्य हो गया है कि उसका संपर्क पुलिस में बडे अधिकारियों से लेकर चौकीदार तक हो।

7.2.2 vijk/k lekpkj ds izdkj % अपराध समाचारों को निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकृत कर उनके बारे में अच्छी तरह समझा जा सकता है.

- gR;k
- pksjh
- cykRdkj
- os ;kofr
- ekjihV ,oa vU;

gR;k % हत्या संबंधी समाचार अपराध समाचार में प्रमुखता की सूची में पहले स्थान पर आता है। हत्या किसी भी हो एक बड़ी घटना के रूप देखा जाता है। यदि हत्या किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति की हो गई है, तो उस स्थिति में उसका महत्व समाचार पत्र के लिए और अधिक बढ जाता है। हत्या संबंधी समचार में संवाददाता के लिए सबसे बडी चुनौती होती है यह जानना होता है कि हत्या किसकी की गई है तथा हत्या की वजह क्या थी। यदि वजह का पता तत्काल नहीं चले तो इससे समाचार लेखन में कोई विशेष परेशानी संवाददाता को नहीं होती है, लेकिन हत्या किसकी गई है। यह जब तक पता नहीं चले तब तक संवाददाता को इस प्रयास में लगा रहना चाहिए कि उसे यह पता चल जाए कि हत्या किसकी की गई है। हत्या संबंधी समाचार का संकलन करते समय निम्नलिखित तथ्यों का ध्यान रखना जरूरी है।

1 मृतक व्यक्ति कौन है। उसकी आयु कितनी है। वह कहां का रहने वाला है तथा हत्या के समय वह कहां था या कहां से आ रहा था। पहचान नहीं होने की स्थिति में हो सके तो उसके रंग रूप और उसकी अवस्था आदि का विवरण समाचार में संवाददाता को देना चाहिए।
2 हत्या कब और किस समय की गई थी। हत्या से पूर्व मृतक ने प्रतिरोध या वचाव किया था या नहीं।
3 हत्यारे का पता चला है या नहीं। उसका सुराग लगाने में पुलिस को सफलता मिली है या नहीं।
4 हत्या कैसे की गई है। अर्थात गोली मार कर, छुरा घोंपकर या किसी अन्य प्रकार से।
5 हत्या करने की वजह क्या हो सकती है। हत्या किस इरादे से की गई या मारपीट के दौरान हो गई है।
6 पुलिस ने इस मामले में अब तक क्या कार्रवाई की है। पुलिस ने इस मामले में किसी को गिरफ्तार किया है या नहीं। किसी को शंका के आधार पर पूछताछ के लिए हिरासत में लिया है या नहीं।
7 हत्यारे ने घटना स्थल पर कोई ऐसा निशान छोडा है, जिसके आधार पर पुलिस आगे की जांच शुरू कर सके।
8 यदि पुलिस ने मामला दर्ज किया है, तो हत्यारे पर कौन–कौन से आरोप लगाये गए है। गिरफ्तार किए गए व्यक्ति को अदालत में पेश किया गया है या नहीं। यदि पेश किया गया है तो अदालत ने क्या आदेश दिए है।
9 पुलिस ने क्या अदालत से गिरफतार किये गए व्यक्ति को पुलिस रिमांड पर देने की मांग की है।
10 उक्त धटना से संबंधित कोई असामान्य पहलु।

lko/kkuh % हत्या संबंधी समाचार लिखते समय संवाददता को निम्नलिखित तथ्यों पर सवाधानी बरतनी चाहिए।

1 यह कभी भी नहीं लिखना चाहिए कि राम ने श्याम की गोली मार कर हत्या कर दी है। जब तक की पुलिस की ओर इसे बारे में प्राथमिकी न दर्ज कर दी जाए। इसके बावजूद भी संवाददता को लिखना चाहिए कि श्याम की गोली मार कर हत्या कर दी गई है। इस मामले में पुलिस ने राम के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया है।

2 संवाददाता की ओर यह प्रयास होना चाहिए कि कोई ऐसी बात न लिख दे, जिससे कि कल पुलिस उसे गवाह रूप में प्रस्तुत होने के लिए कहे। क्योंकि पुलिस मामलों में अपनी सफलता पर पर्दा डालने के लिए इस प्रकार के हथकंडे भी अपनाती है।

pkjh % चोरी की घटना मामूली होते हुए भी कई बार अपराध जगत की बडी धटना बन जाती है। यहां तक समचारों पत्रों के स्थानीय संस्करणों में चोरी की धटनाओं को भी लीड बनाया जाता है। यह निर्भर करता है कि चोरी कहां पर और कितनी बड़ी चोरी हुई है। यदि किसी बैंक या एटीएम में चोरी का प्रयास या फिर किसी बड़े शोरूम में चोरी का प्रयास जैसी धटना भी प्रमुखता से प्रकाशित की जाती है। इन दिनों में विशेषकर दुकानों में चोरी होने के दूसरे कारण भी सामने आने लगे है। जैसे बीमा कंपनियों से धन प्राप्त करने के लिए दुकान में चोरी को प्रचारित करना आादि शामिल है। इसे देखते हुए अपराध संबंधी समाचारों में चोरी से संबंधित समाचार ने अपना स्थान बना लिया है। चोरी से संबंधित समाचारों का संकलन करते समय संवाददाता को निम्नलिखित बातों पर प्रमुखता से ध्यान देना चाहिए।

1 चोरी कहां, कब, किस स्थान पर और किसके यहां पर हुई है।
2 चोर का चोरी करने का तरीका कौन सा था।
3 पुलिस इस मामामले में क्या कर रही है।
4 पुलिस ने यदि खोजी कुत्ते का उपयोग किया है, कुत्ते की गतिविधियों को भी प्रकाशित किया जा सकता है।
5 चोरी की धटनाओं का तुलनात्मक विश्लेषण कर भी एक समाचार बनाया जा सकता है। इस प्रकार के समाचारों के लिए थाने में दर्ज आंकडों का होना अनिवार्य है।
6 पुलिस ने यदि प्रशंसनीय कार्य किया है या लापरवाही तो उसे लिखने में संकोच नहीं करना चाहिए।

lko/kkuh : 1 चोरी संबंधी समचार को लिखते हुए कभी भी तथ्यों को बढा चढाकर नहीं लिखना चाहिए। अर्थात पुलिस ने जितने समानों का विवरण दर्ज किया है, उतना ही उल्लेख करना चाहिए।

2 कई बार यह देखने में आया है कि चोरी से प्रभावित व्यक्ति समाचार देने से डरता है। उस स्थिति में संवादाता को अपनी व्यवाहर कुशलता का परिचय देते हुए उसे समझाना चाहिए कि समाचार का प्रकाशित होना उसके हित में है न की बुरा।

3 चोरी के मामलों में हत्या मामले की तरह ही अपराधी को महिमामंडित नहीं करना चाहिए।

Mdsrh % अपराध से संबंधी समाचारों में डकैती से संबंधी समाचारों को भी प्रमुखता दी जाती है। क्योंकि प्रायः डकैती की धटना इक्का–दुक्का देखने को मिलती है। इन दिनों में घरों की तुलना में अब बैंकों या अन्य स्थानों पर जहां पर पैसे का लेन देने अधिक होता है। वहां पर देखने या सुनने को मिलती है। डकैती से संबंधी समाचारों में आम आदमी की डकैत से मुठभेड या पुलिस की भी मुठभेड़ होने की धटना को दूसरे तरह से लिखना चाहिए। जिन लोगों ने इसे रोकने का कार्य किया है उस कार्य को अलग से प्रकाशित करना चाहिए। डकैती से संबंधी समाचारों में भी संवाददाताओं

को चोरी से संबंधित जो हिदायतें दी गई है। उसका पालन करते हुए समाचार के छह ककारों की खोज करनी चाहिए। यदि उक्त वारदात के बाद पुलिस ने नाकाबंदी की है या अन्य कोई टीमों का गठन किया है तो उस बारे में समाचार में उल्लेख किया जाना चाहिए।

cykRdkj ;k j:i : बलात्कार को अंग्रेजी में रेप कहते हैं। अपराध जगत की यह घटना समाज में सबसे धृणित माना जाता है। इस कारण इस प्रकार के समाचार बहुत ही संवदेनशील और नाजुक होते हैं। इसलिए इस प्रकार के समाचारों का संकलन लेकर लिखते समय संवाददाता को हमेशा सजग और तत्पर रहना चाहिए। क्योंकि थोडी सी गलती या लापरवाही से किसी लडकी या महिला की जिंदगी तबाह हो सकती है, आरोपी व्यक्ति की प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है। यह भी देखने में आया है कि इस प्रकार के समाचारों में संवाददातओं पर मानहानि के मामले अदालत में दायर कर दिए जाते हैं।

संवाददाता को यह भी ध्यान में रखना होगा कि महिला या लडकी के साथ धेडखानी की धटना बलात्कार नहीं हो सकती है। बलात्कार से संबंधी समाचारों का लेखन करते समय निम्मलिखित सावधानी बरतनी चाहिए।

1 बलात्कार की शिकार महिला या लडकी का नाम समाचार में नहीं लिखें।

2 ऐसा कुछ भी नहीं लिखें जिससे कि उसकी पहचान समाज में हो जाए।

3 पुलिस द्वारा मामला दर्ज करने के बाद भी तब तक बलाात्कार की शिकार महिला या लडकी का नाम देना चाहिए जब तक इस मामले में पुलिस प्रार्थना न करे।

4 बलात्कार की धटना को बढा–चढाकर समाचार पत्र में नहीं लिखना चाहिए, क्योंकि इसका समाज में बुरा प्रभाव पडता है।

5 कुछ मामले एसे भी देखने में आए हैं जब लडकी या महिला द्वारा किसी व्यक्ति को फंसाने के लिए इस प्रकार के आरोप लगाये जाते हैं। इसलिए बलाात्कार संबंधी समाचार लिखने से पूर्व सरकारी अस्पताल में चिकित्सक से इस बात की पुष्टि कर लेनी चाहिए कि मेडिकल रिपोर्ट में क्या कहा गया है। क्योंकि बलात्कार संबंधी मामला आने के बाद पीड़ित महिला या लड़की का मेडिकल परीक्षण किया जाता है।

6 यदि अदालतत ने किसी व्यक्ति को बलात्कार के मामले में निर्दोष साबित किया है उसे भी प्रकाशित करना चाहिए।

7 बलात्कार की शिकार महिला या लडकी का फोटो भी नहीं प्रकाािशत करना चाहिए, क्योंकि फोटो के प्रकाशित होने पर संबंधित महिला की मानसिक स्थिति पर बुरा प्रभाव पडता है। साथ ही वह इस मामले में संवादाता पर मानहानि का मुकदमा भी दर्ज कर सकती है।

o ;kofRr % बलात्कार से संबंधित समाचारों के विपरीत वेश्यावृत्ति से संबंधी समाचारों में नामों के प्रयोग पर विशेष प्रतिबंध नहीं है। लेकिन इस प्रकार की गतिविधियों में नाबालिग लडकी हो तो उसका नाम नहीं देना चाहिए। इसके अतिरिक्त वेश्यावृत्ति में लगे लोगों के नाम, स्थान और पता देने में न तो कोई सामाजिक बुराई होती है और न ही कानूनी अड़चन। समाचार पत्रों को सिर्फ पुरूष या वयस्क महिलाएं ही पढती है। ऐसा मानकर इस प्रकार के समाचार का लेखन नहीं करना चाहिए, क्योंकि छोटे उम्र के बच्चों द्वारा भी समाचार पढ़े जाने की पूरी संभावना रहती है। अश्लील शब्दों के प्रयोग होने पर बच्चों के दिमाग पर बुरा प्रभाव पडता है। पुलिस ने इन मामलों की गतिविधियों को पकड़ने के लिए कहीं पर छापा मारा है तो उसे भी प्रकाशित किया जा सकता है। इन दिनों अब यह भी देखने में आया कि कालेज के छात्र–छात्राएं साइबर कैफे में अश्लील अवस्था में पाएं गए हैं। इस प्रकार के समाचारों को प्रकाशित करते समय छात्रााओं के नाम नहीं प्रकाशित करना चाहिए। अन्य अपराधिक समाचारों की तरह इसमें भी स्थानों और समय की जानकारी देनी चाहिए।

ekjihV % अपराध से संबंधित समाचारों की अन्य प्रमुख समाचरों में मारपीट और झगड़ा का भी स्थान है। इस प्रकार के समाचार में दो पक्षों या उससे अधिक पक्षों के प्रभावित होने की संभावना रहती है। इस कारण इस प्रकार के समाचारों के लिखते समय दोनों पक्षों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। क्योंकि ऐसा नहीं करने पर दूसरे पक्ष द्वारा संवाददाता पर पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर समाचार लिखने के आरोप लगाए जाने की संभावना रहती है। मारपीट या झगडे से संबंधित अधिकांश समाचारों की जानकारी संवाददाता को धटना स्थल या पुलिस स्टेशन की बजाए सरकारी अस्पतालों में मिलती है, क्योंकि इस प्रकार के मामलों के थाने में प्राथमिकी दर्ज कराने से पूर्व पीड़ित व्यक्ति के लिए मेडिकल रिपोर्ट करना जरूरी होता है। यह भी देखा गया है कि इस प्रकार के वारदात होने पर व्यक्ति इलाज के लिए सरकारी अस्पताल अवश्य जाता है। इसलिए दोनों पक्षों को बयान लेने में संवाददाता को आसानी होती है। मारपीट से संबंधित समाचारों को लिखने से पूर्व यह भी पता लगाना चाहिए कि पुलिस ने इस मामले में माामला दर्ज किया है या नहीं।
कई बार मारपीट और झगडे से संबंधित मामलों में रोचक समाचार भी मिलते है। जैसे एक पक्ष ने दूसरे पक्ष के किसी व्यक्ति की मूंछ उखाड ली या दांत तोड दी। कुछ मौकों पर यह भी देखा गया है कि कोई व्यक्ति दूसरे को फंसाने के लिए स्वयं चाकू मार ली हो या हाथ तोड ली हो। इसलिए संवददाता को चाहिए कि वह मारपीट या झगडे से संबंधित समाचारों के चयन को लेकर लेखन तक किसी भी तरह कोई लापरवाही नहीं बरते।
उपर्युक्त अपराधिक समाचारों के अतिरिक्त सांप्रदायिक दंगे, लूटपाट, आगजनी, ठगी, अपहरण, जान से मारने की धमकी इत्यादि माामले आते हैं। अपराध चाहे कितना भी छोटा हो। अपराध संवाददाता को कभी पुलिसिया नजर नहीं, बल्कि एक संवाददाता की नजर से उस अपराध को देखना चाहिए और उस बारे में सोचना चाहिए। तभी वह पुलिस से हटकर नई बात साामने लाने में सफल होगा। अपराधिक समाचारों में फालोअप का विशेष महत्व होता है, क्याोंकि उसके बाद क्या हुआ। इस बारे में पाठकों की जानने की इच्छा अन्य समाचारो की तुलना में अधिक होती है।

7.2.3 vijk/k lekpkj d dN ueu

pu >iVrk ;od dkc] ifCyd u /kuk
vxlu Hkou vku oky J)kyvk ij pkjk dh utj

fglkj]tkxj.k loknnkrk % धर्म लाभ लेने के लिए आए अग्रसेन भवन आने वाले श्रद्धालुओं पर जेबकतरों और चोरों की निगाहे हैं। पिछले कई दिनों से नकदी, मोबाइल व अन्य सामना गंवा रहे लोग भगवान के ध्यान के साथ ऐसे लोगों को भी ध्यान में रखने लगे हैं। ऐसी अनेक घटनाओं का खुलासा तब हुआ जब वीरवार को सांय साढ़े छह बजे एक युवक ने अग्रसेन भवन से पूजा पाठ कर लौट रही महिला के गले से सोने की चेन झपट ली। इस घटना के बाद युवक भागने लगा तो महिला ने शोर मचा दिया। ग्रीन स्क्वेयर मार्किट के पिछवाड़े में गर्ल्स सीनियर सेकैंडरी स्कूल के साथ लगती सडक पर लोगों ने युवक को काबू कर लिया। युवक ने घबराहट में चेन फेंक दी, परन्तु लोगों ने उसकी जमकर धुनाई की। इस बीच पुलिस को सूचना दी गई तथा मौके पर पहुंचे पुलिस की अपराध शाखा के जवान ने युवक को अपनी हिरासत में ले लिया। पूछताछ करने पर पाया कि प्रदीप नाम युवक रावलवास गांव का रहने वाला है तथा फिलहाल बस अड्डा के समीप अपने भाई के साथ रहता है।
इस आयोजन से पूर्व जिला प्रशासन से 15 से 20 पुलिसकर्मी तैनात करने के लिए आयोजकों ने निवेदन किया था, परंतु इतने बडे आयोजन में प्रतिदिन छह से सात हजार लोगों को इक्ट्टठा होने के बावजूद चंद पुलिसकर्मी ही सुरक्षा बनाए रखने के लिए मौजूद है। यहां आने वाले कई श्रद्धालुओं के मोबाइल फोन गायब हो चुके हैं। आज भीड़ के बीच महिला के गले से सोने की चेन

झपट कर फरार हो रहे युवक को काबू करने के बाद लोगों ने अपना गुस्सा निकालते हुए उसे जमकर पीटा तथा बाद में पुलिस के हवाले कर दिया।

उल्लेखनीय है कि सप्ताह भर पहले भी इसी परिसर से लोगों ने दो वाहन चोरी को काबू करके जमकर धुनाई की थी तथा बाद में पुलिस के सुपुर्द कर दिया था। बाद में पता चला कि दोनों पेशेवर वाहन चोर गिरोह के सदस्य थे। इसी प्रकार आज काबू किए गए युवक ने लोगों के सामने स्वीकार किया कि यह चेन झपट कर भागने में कामयाब नहीं हो सका, क्योंकि सामने भीड़ ने चारों ओर से घेर लिया था। बताया जाताा है कि उसके दो अन्य साथी मौक का फायदा उठाकर फरार हो गए, जबकि इस वारदात को अंजाम दते समय तीन युवकों ने महिला का पीछा करते समय हुए स्कूल के साथ लगती सड़क पर अंधेरे का फायदा उठाकर गले से चेन झपट ली थी। बाद में महिला को चेन वापिस कर दी गई तथा युवक को पुलिस थाने ले गई।

lHkkj% nfud tkxj.k 1 fnlcj

7.2.4 vnkyr lekpkj fdl dgr g

अपराधिक समाचारों की तरह अदालती समाचारों को भी समाचार पत्रों में प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है। अदालती समाचार में विशेष सावधानी बरतनी होती है, क्योंकि इससे संबंधित समाचारों में गलती होने पर मानहानि से अधिक अदालत की अवमानना का डर बना रहता है। इसलिए संवाादता के लिए यह जरूरी है कि उसे अदालती कार्रवाई से संबंधित विभिन्न पहलुओं का ज्ञान हो। अदलाती समाचारों की संवदेनशीलता को देखते हुए पहले समाचार पत्रों में वकीलों को यह जिम्मेदारी दे दी जाती थी।

कुछ दशकों से इसमें परिवर्तन आया है और अब दूसरे विषय के जानकार संवाददाता भी बडी आसानी से अदालती समाचारों का संकलन कर लेते है, बल्कि लेखन भी करते हैं। ममाला अदालत में पेश करने के बाद वह विचाराधीन हो जाता है। इस स्थिति में समाचार अदालत में हुई कार्रवाई के अनुसार ही लिखनी चाहिए।

7.2.5 vnkyr lepkj dh lko/kkfu;k

अदालती समाचार लिखने से पूर्व संवाददाता को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए।

1 मुकदमों की सुनवाई के दौरान समाचार को सनसनीखेज बनाकर नहीं प्रस्तुत करना चाहिए।

2 समाचार में वादी या प्रतिवादी में किसी एक के तरफ झुकाव प्रदर्शित नहीं होना चाहिए।

3 जब तक अदालत दोषी नहीं साबित कर दे, तब तक आरोपी ही लिखना चाहिए।

4 अदालत के निर्णय को सुनी सुनायी आधार पर नहीं लिखना चाहिए।

5 संदेह होने की स्थिति में दोनों पक्षों के वकील से बात कर लें। आवश्यकतानुसार समाचार संबंधित पक्ष के वकील के हवाले से भी दे सकते हैं। ऐसा करने पर समाचार की विश्वसनीयता के साथ–साथ गलत होने की संभावना नहीं रहती है।

6 यदि अदालत ने अपना निर्णय एक राय से नहीं दिया है। उस स्थिति में समाचार में यह अवश्य बताएं कि कौन–कौन से जज बहुमत निर्णय के साथ और कौन–कौन से उसके विपक्ष में थे।

7 हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के निर्णय को समाचार बनाते समय उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए, जैसा की निर्णय में सुनाया गया है।

8 समाचारों को ऐसा नहीं लिखें, जिसे न्यायपालिका के प्रति अवमानना के रूप में देखा जा सके।

7.2.6 vnkyr lekpkj d: d|N ueu:

ijh gbZ Hkkjrh dh xokgh
nkuks i{kks d gh viu nko

नई दिल्ली, विधि संवाददाता : नीतीश कटारा हत्याकांड की अहम गवाह भारती यादव की गवाही वीरवार को पूरी हो गई भारती की गवाही में किसका पक्ष मजबूत हुआ, इस पर अभियोजन पक्ष और बचाव पक्ष के अपने–अपने दावे हैं, मगर दो दिन में दर्ज हुए तीस पन्नों के बयान में भारती ने अभियोजन पक्ष के कई दावों को जरूर नकारा है। उनके वकील एससी भट्ट ने खुलासा किया कि इस मामले के अभियुक्त विकास और विशाल को भारती और नीतीश की दोस्ती की जानकारी नहीं थी। ऐसे में दोनों के रिश्ते को लेकर भाइयों की नाराजगी का सवाल ही नहीं उठता, साथ ही भा. द.स. की धारा 161 के तहत पुलिस को दिए बयान और नीतीश के साथ प्रेम संबंधों को भी भारती ने नकारा है। हालांकि विशेष सरकारी वकील मान रहे हैं कि भारती से जिरह के बाद अभियोजन पक्ष का मकसद पूरा हो गया है।

सूत्रों के अनुसार भारती ने नीतीश को लिखे पत्रों और उसके साथ फोटो खिंचवाने की बात तो मानी मगर कहा कि वह नीतीश को एक दोस्त की तरह मानती थी, प्रेमी की तरह नहीं अभियोजन पक्ष नीतीश के अपहरण के बाद भारती द्वारा नितिन कटारा को भेजे गए ई–मेल को मजबूत साक्ष्य मान रहा था पर भारती ने ई–मेल भेजे जाने से इंकार कर दिया, साथ ही भारती ने यह भी झुठला दिया कि उसने नीतीश को कोई घडी भेंट की थी। महत्वपूर्ण है कि नीतीश के शव से एक घडी पुलिस को मिली थी, सूत्र बताते हैं कि जिरह के दौरान जब अभियोजन पक्ष ने भारती से नीतीश से संबंधों के बारे में सवाल किया तो कहा कि यह उसका व्यक्तिगत मामला है। उसकी नीतीश से दोस्ती थी और शादी जैसी कोई बात नहीं थी। सूत्रों के अनुसार भारती कुछ सवालों पर भावुक भी हुई मगर बाद में उसने स्वयं को संभाल लिया। भारती ने कहा कि उसने नितिन कटारा और नीलम कटारा से हुई फोन पर बातचीत में यह नहीं कहा था कि उसने नीतीश को अपने भाईयों के साथ जाते देखा था या उसने फोन पर अपने भाईयों की कोई बात की थी। सूत्रों के अनुसार भारती ने माना कि उसने नीतीश को पत्र लिखे थे मगर दोस्ती के नाते। भारती ने बेशक अभियोजन पक्ष की कई दलीलों का समर्थन नहीं किया मगर विशेष सरकारी वकील बीएस जून का मानना है कि भारती की गवाही से मकसद पूरा हो गया। उन्होंने उम्मीद जताई कि यह केस मुकाम तक जरूर पहुंचेगां। जून ने कहा कि भारती की गवाही के पीछे मुख्यतः तीन मकसद थे. पहली बात भारती और नीतीश के रिश्ते को साबित करना था,. दूसरा भारती की 16 व 17 फरवरी की शादी की उस पार्टी में उपस्थिति साबित करना था जहां नीतीश भी आया था और भारती के भाई भी, तीसरा यह साबित करना था कि भारती का अपने परिवार से इस मुददे पर मनमुटाव था।

lkHkkj % nSfud tkxj.k 1 fnlacj 06

CBI demands death penalty
For Soren

New Delhi : The tis hazari court on Thursday postponded the verdict on the quantum of sentence on former union minister Shibu soren in the Shashinath jha muder case to Friday. CBI sought death penalty for the minister who had resigned after being proven guilty in the muder case. Soren–who complained to chest pain Wednesday-will be admitted to the All India Institute of Medical Sciences and will undergo angiography.

After being informed by the delhi police officials that the JMM chief was undergoing angiography test at AIIMS, additional sessions judge B.R.Kedia adjourned the hearing toll 2pm hours on Friday. The court was informed that the doctors at AIIMS were not in a position to allow soren to attend the proceedings.

Senior advocate R.R.Anand, who joined Soren’s counsel R.K. Naseem to argue on the point of sentence, requested the court to adjourn the hearing as Soren was admitted to preminer hospital after being taken into judical custody. CBI special prosecutor A.K.Singh, however, pleaded that notice be issued against the AIIMS director to clarify the position vis-à-vis Soren’s health. The court had on November 28 convicted Soren and four others of conspiring to abduct and kill his private secretary.

The times of India - 1 December 06.

7.2.7 j{kk lekpkj fdl dgr g

देश की सुरक्षा और सेना से संबंधित समाचारों की संख्या कम होती है, लेकिन आंतकवादी हमले या देश विदेश में युद्ध शुरू हो जाने पर उस स्थिति में इनसे संबंधित समचारों का महत्व बढ जाता है। ऐसी स्थिति में समाचार पत्रों द्वारा विशेषकर उन्हीं संवाददातओं को इस प्रकार के समाचारों का संकलन करने के लिए भेजा जाता है। जिन्हें रक्षा संबंधी विभिन्न पहलुओं की जानकारी हो। कई बार देश हित में या दुश्मनों को पकड़ने के लिए रक्षा विभाग की अनुरोध पर संबंधित समाचार को नहीं प्रकाशित करना होता है। प्रायः रक्षा विभाग में थल सेना, वायु सेना और नेवी से जुडी गतिविधियों को प्रकाशित किया जाता है। जैसे थल सेना दिवस पर सेना द्वारा किस प्रकार का आयोजन किया जा रहा है। इस प्रकार के समाचार जिला स्तर पर कम होते हैं। सेना द्वारा सैन्य सामानों की प्रदर्शनी, कारगिल में शहीद हुए सैनिकों के परिजनों का सम्मान। यहां पर संवाददाता के लिए ध्यान देने योग्य है कि सैन्य स्थलों के अंदर की गतिविधियों से संबधित समाचार का संकलन करने से पूर्व वहां के प्रमुख से अनुमति ले लें। अनुमति ले लेने पर समाचार संकलन में परेशानी नहीं होती है। इस प्रकार के समाचारों में विशेषकर जिससे सैनिकों के परिजनों पर विपरीत प्रभाव पडेगा से संवाददाता को बचना चाहिए, लेकिन सैनिकों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, उसे सैनिकों के हवाले से समाचार प्रकाशित करना चाहिए। साथ में संभव हो तो संबंधित अधिकारी के पक्ष में प्रकाशित करना चाहिए। रक्षा जैसे गंभीर विषय को देखते समय समय पर रक्षा विभाग द्वारा संवाददातओं के लिए विशेष प्रशिाक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। जिस संवाददाता को रक्षा से संबंधित समाचार संकलन करने में अभिरूचि हो उसे इन प्रशिक्षण शिविरों में भाग लेना चाहिए।

7.2.8 j{kk lekpkj e /;ku j[ku ;kX; rF;

रक्षा से संबंधित समाचारों का संकलन करते समय संवाददाता को निम्नलिखत तथ्यों का ध्यान रखना चाहिएः

- देश हित सर्वोपरी मानते हुए रक्षा संबंधी ऐसी जानकारी न प्रकाशित करें, जिससे देश की सुरक्षा को खतरा पहुंचे.
- सैन्य छावनी में समाचार संकलन के लिए तब तक प्रवेश न करें जब तक उक्त स्थान में प्रवेश करने और समाचार संकलन करने की अनुमति नहीं मिल जाए, ऐसा न करने पर कई बार आप मुश्किल में फंस सकते हैं.
- सैन्य गतिविधियों की फोटो खींचने और उसे प्रकाशित करने की भी सैन्य अधिकारियों से अनुमति ले लें.
- समय–समय पर रक्षा विभाग द्वारा रक्षा संबंधी समाचारों का संकलन करने के लिए प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया जाता है। यथा संभव इन शिविरों में भाग लेना चाहिए।
- इन दिनों सैन्य संबंधी भ्रष्टाचार समाचारों को प्रमुखता दी जाने लगी है। इस प्रकार के समाचार लिखते हुए संबंधित दस्तावेज और आधिकारिक पुष्टि को ध्यान में रखना चाहिए, इनके बिना इस तरह के समाचार लिखना खतरे से खाली नहीं होगा।

j{kk lekpkj dk mnkgj.k

tkMZu ds jktk us fd;k Nkouh dk nkSjk

HkkLdj U;wt] fglkj

अपनी दो दिवसीय भारत यात्रा के दौरान शनिवार को जार्डन के राजा अब्दुल्ला बिन अल हुसैन एवं जार्डन के रक्षा राज्य मंत्री पल्लम राजू ने हिसार सैनिक छावनी का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल में राजा के मुख्यसलाहकार एवं राजकुमार तेलाल बिन मोहम्मद, जार्डन में भारत के राजदूत और दयाकर, लाइट डेगुन रेजीमेंट के कैपटन राबर्ट वाइल्स वे सेकेंड लेफिटनेंट जेम्स काईल शामिल थे। ब्रिटिश आर्मी की लाइट डेगन रेजीमेंट से संबंधित सैनिक छावनी में स्किनर्स हार्स रेजीमेंट का अब्दुल्ला ने अपने प्रतिनिधिमंडल के साथ निरीक्षण किया। जार्डन के राजा एवं उसके साथ आए प्रतिनिधिमंडल की अगवानी स्किनर्स हार्स के कर्नल मेजर जनरल आरके लुंबा, 33 कचवित खंड के जरनल अफसल कमांडिंग मेजर जनरल खंड के जनरल अशोक शोरान और स्किनर्स हार्स के कमांडेंट कर्नल धीरज सेठ ने की। इस दौरान हिसार छावनी में जार्डन के राजा ने रेजीमेंटन गार्ड का निरीक्षण किया। स्किनर्स हार्स के कमांडेंट ने राजा को स्किनर्स हार्स एवं लाइट डेगून रेजीमेंट के इतिहास एवं गठजोड़ की जानकारी दी। इसके उपरांत महामहिम ने खुद डिवीजन के प्रशिक्षण क्षेत्र का दौरा किया और वहां पर यांत्रिक सशस्त्र सेना के युद्ध अभ्यास को देखा जो कि हैलीकाप्टर समाघात समर्पित था। यहां पर वे स्किनर्स हार्स रेजीमेंट की अफसर मेस में भोज में भी शामिल हुए।

iqjkru gS fLdulZ gklZ jsthesaV

स्किनर्स हार्स रेजीमेंट का गठन 23 फरवरी, 1803 में कर्नल जेम्स स्किनर सीबी ने हांसी में किया था। स्थापना के बाद शताब्दी से अधिक समय तक पलटन में घोडों का प्रयोग होता रहा. वर्ष 1939 में इस पलटन का यांत्रिकरण रावलपिंडी में किया गया और मोटर कैवलरी रेजीमेंट के नाम से जाने जानी लगी। स्थापना से अब तक पलटन ने ऐसे कारनामें किए जिससे पलटन का नाम भारतीय सेना के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं। रेजीमेंट ने वर्ष 1841 में हुए प्रथम अफगान युद्ध, वर्ष 1842 में हुए कंधार युद्ध, वर्ष 1859 में द्वितीय अफगान युद्ध, 1900 में बक्सर विद्रोह, वर्ष 1914 से 1919 के हुए उत्तरी पश्चिमी फ्रंटियर, 1919 में तृतीय अफगान युद्ध, दोनों विश्व युद्ध में अदम्य साहस का परिचय देते हुए उल्लेखनीय कार्य किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद पलटन ने वर्ष 1965 व

1971 में हुए भारत पाक युद्ध में अदम्य वीरता का परिचय दिया। आज पलटन के पास 19 युद्ध सम्मान प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है।

fglkj ls ijkuk lac/k gS vCnqYyk dk

जार्डन के राजा अब्दुल्ला बिन अल हुसैन को लाइट डेगून रेजीमेंट की कर्नल आफ चीफ की मानद उपाधि प्राप्त है और सैनिक छावनी की स्किनर्स हार्स रेजीमेंट का इससे पुराना संबंध है। दोनों पलटनों ने आपस में मिलकर वर्ष 1842 में अफगान युद्ध लड़ा और फिर प्रथम विश्व युद्ध तथा फ्रांस में भी इक्कट्ठे ही भाग लिया था। उसी समय से दोनों पलटनों के आपसी संबंध मजूबत एवं मधुर हो गए। वर्ष 1964 में पलटनों ने आपस में मान्यता प्रदान की। इसके बाद दोनों पलटन के प्रतिनिधि आपस में मिलते रहे हैं, जिससे आपस में घनिष्ठता और अधिक बढ़ी है।

lsuk ls ih,evks rd Hkz'Vkpkj ij f kdatk
Vhe cuk ?kkVkys esa tqVs Fks lSU; vQlj

ubZ fnYyh

सेना में मीट, दाल और शराब घोटालों के तार बहुत दूर तक फैले हुए थे. बड़े–बड़े सेना अधिकारी पूरी टीम बना कर लूट मचाने में जुटे थे। जनरल जे.जे.सिंह के सख्त आदेशों के बाद हुई कोर्ट आफ इन्क्वायरी में पूरे नेटवर्क का खुलासा होने के साथ ही कई और चेहरे बेनकाब हो गए है। दाल घोटाला सामने आने के बाद जिस मीट घोटाले के भी सामने आने का इंतजार किया जा रहा था उसकी जांच पूरी हो गई है। लद्दाख सेक्टर में फ्रोजन मीट के कांटेक्ट में बडे पैमाने पर घोटला हो रहा था। इसके सूत्रधार मेजर जनरल एस.के.दहिया थे जो कि अब ले.जनरल हो चुके हैं। उनका साथ दिया था ब्रिगेडियर डीवीएम बिश्नोई व तीन अधिकारियों ने. ले.जनरल दहिया ने अपना नाम फंसते ही हाई कोर्ट का दरवाजा खटखटा दिया है। यही काम ले.जनरल एस.के.साहनी ने किया है और कोर्ट ने उनके खिलाफ सेना की कार्रवाई पर रोक लगा दी है। दिलचस्प तथ्य यह है कि इन दोनों वरिष्ठ अधिकारियों के एक दूसरे पर आरोप प्रत्यारोप से ही दोनों के घोटालों का खुलासा हुआ था।

दाल घोटाले में अब लें.जनरल एस.के.साहनी के अलावा मेजर जरनल बीवीएस मंदेर, बिग्रेडियर एसके हांडा और बिग्रेडियर पी.एस. गिल के शामिल होने के भी सबूत सामने आए हैं। जबकि 6 माउंटेन डिवीजन के कमांडर रहे मेजर जनरल जी आई सिंह मुल्तानी के खिलाफ शराब घोटाले की जांच में सामने आया है कि इसमें भी बडे पैमाने पर आपसी मिलीभगत से भ्रष्टाचार किया जा रहा था। सेना की कैंटीन से सस्ती शराब के ट्रक बाजार में महंगी दाम पर बेचकर पैसा कमाया जा रहा था। इस घोटाले में ब्रिगेडियर डी.एस. ग्रेवाल, बिग्रेडियर इलगोवन, ब्रिगेडियर राजीव देवकर, ब्रिगेडियर आर.एस. राणा व सात और अधिकारी शामिल थे। इन नामों का खुलासा पहली दफा हुआ है। समझा जा सकता है कि जिस डिवीजन की सभी ब्रिग्रेडों के ब्रिगेडियर भी घोटाले में शामिल हो तो वहां भ्रष्टाचार किस स्तर तक फैला हुआ था। सैन्य अधिकारियों ने इन घोटालों के अलावा वित्तीय धांधलियों में भी अपने हाथ रंगे हैं। अब सेंट्रल कमान के कमांडर ने मेजर जनरल के.टी.जी. नांबियार के खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई और मेजर जरनल राना गोस्वामी व दो अन्य अधिकारियों के खिलाफ विभागीय कार्रवाई के आदेश दिए हैं। वैसे ले.जनरल एस.के.दहिया , मेजर जनरल नांबियार व राना गोस्वामी भी मजे से पदोन्नत होते रहे। फर्जी एनकाउंटर करने वाले ब्रिगेडियर एसएस राव के खिलाफ पश्चिमी कमान ने अनुशासनात्मक कार्रवाई के आदेश दिए हैं।

नौ सेना के कमांडर सीएस सिंह को अपने पद कें दुरूपयोग के आरोपों का दोषी पाते हुए छह महीने की जेल, 62500 रूपये का वित्तीय दंड दिया गया है। कामोडोर एनएमएस पंडित को झूठे दस्तावेज बनाने के आरोप सिद्ध होने के बाद 18 महीने की जेल की सेजा सुनाते हुए सेवा से बर्खास्त कर दिया गया है। इन्हें तीन लाख रूपये का वित्तीय दंड भी भरना होगा।

7.2.9 jktuhfrd lekpkj fdls dgrs gSa

समाचार पत्रों में सर्वाधिक समाचार राजनीति से जुडे होते हैं। भारत एक लोकत्रांतिक देश है। ऐसे में राजनीतिक समाचारों का महत्व पाठकों के बीच और अधिक बढ जाता है। शायद ही कोई ऐसा गांव या शहर होगा, जहां पर राजनीतिक गतिविधियां संचालित नहीं होती हो, और तो और राजनीतिक समाचारों में नमक मिर्च लगाकर प्रस्तुत करने की परंपरा भी रही है। हर राजनीतिज्ञ चाहता है कि उसकी गतिविधियों से संबंधित समाचारों को मीडिया में प्रमुखता मिले। यहां तक इसके लिए नेताओं द्वारा प्रेस विज्ञप्ति जारी करने से लेकर पत्रकारवार्ता आयोजित किये जाते हैं। इसके अतिरिक्त समाचार पत्रों में वरिष्ठ नेताओं के साक्षात्कार प्रकाशित करने की भी व्यवस्था होती है। कई बार संपदकों द्वारा व्यक्ति विशेष का सक्षात्कार करने का एसाइनमेंट दिया जाता है, तो कई बार ऐसा भी अवसर आता है जब अनायास ही किसी वरिष्ठ नेता से भेंट हो जाती है। उस स्थिति में संवाददाता को साक्षात्कार करने से परहेज नहीं करना चाहिए। राजनतिक समाचारों की महत्ता देखते हुए कई समाचार पत्रों में राजनतिक संवाददाता से लेकर राजनीतिक संपादक की नियुक्ति की जाती है। जिला स्तर पर राजनीतिक समाचार संकलन का कार्य वरिष्ठ संवाददाता को दिया जाता है, जबकि ग्रामीण या ब्लॉक स्तर पर यह कार्य स्ट्रींगर को ही करना पडता है। लेकिन जब कभी ग्रामीण या ब्लॉक स्तर पर राजनीति से संबंधित बड़े आयोजन अर्थात किसी बडे नेता की जनसभा, दौरा या पार्टी विशेष की बैठक होती है। उस स्थिति में समाचार का संकलन करने के लिए जिला मुख्यालय से, राज्य मुख्यालय से या फिर समाचार पत्र के मुख्यालय से संवाददाता को भेजा जाता है। राजनीतिक समाचारों का संकलन करते समय संवाददाता को बहुत ही संयम और बुद्धिमता का परिचय देना होता है। देखा गया है कि कुछ नेता ऐसे भी होते है, जो जानबूक्षकर पत्रकारों से बचना चाहते है। वहीं कईयों में संवाददाता को नीचा दिखाने की प्रवृति होती है। इस कारण यदि संवाददाता ने प्रश्न पूछते समय सावधानी नहीं बरती तो उसे परिहास का सामना भी करना पड़ सकता है। इन्हीं कारणाों को देखते हुए संवाददाताओं को सलाह दी जाती है कि जब वे राजनेताओं से बात करने के लिए जाएं तब वे पूरी तरह होम वर्क करके जाएं। यहां तक की उनकी पार्टी की गतिविधियों की भी पूरी जानकारी होनी चाहिए। राजनेताओं में अपने बयान से मुकरने की आदत भी होती है, और विवाद की स्थिति में संवाददाता पर तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर प्रस्तुत करने का आरोप भी लगाया जाता है। इस कारण संवाददाता को इन विषयों की समझ होनी चाहिए तथा संभव हो सके तो उनके द्वारा कहे गए बयान की रिकार्डिंग भी कर लेनी चाहिए। रिकार्डिंग नहीं होने की स्थिति में संवाददाता को अपने डायरी में उनके शब्दों को नोट करना चाहिए। इन दिनों राजनेताओं द्वारा दूसरे नेताओं पर भ्रष्टाचार से संबंधित आरोप लगाने की परिपाटी बढ रही है। पाठकों में भ्रष्टाचार से संबंधित समाचारों को पढ़ने की जिज्ञासा भी अधिक होती है। यहां तक की संपादकीय विभाग द्वारा भी संवादाताओं से इस प्रकार के समाचारों की मांग की जाती है।

jktuhfrd lekpkj dh lko/kkfu;ka

राजनीतिक समाचार की महत्ता को देखते हुए संवाददाता को निम्नलिखत सावधानी बरतनी चाहिए।
1 कौन सा नेता कितने महत्व का है, उसकी परख होनी चाहिए।
2 मुख्यमंत्री, प्रधान मंत्री की सभाओं के प्रति विशेष सर्तक रहना चाहिए।

3 नेताओं द्वारा दिये जा रहे बयान का ज्ञान होना जरूरी है।
4 भ्रष्टाचार संबंधी आरोप को, जिस नेता ने आरोप लगाया है उसी के नाम के हवाले से प्रकाशित करना चाहिए।
5 नेताओं के स्वभाव को ध्यान में रखते हुए प्रश्नों का कम तय करना चाहिए।

7.2.10 jktuhfrd lekpkj dk mnkgj.k%

Hkktik dh deku fQj jktukFk dk gkFk

नई दिल्ली, जागरण ब्यूरो

भाजपा अध्यक्ष की हैसियत से राजनाथ सिंह की पहली पारी भले ही धमाकेदार न रही हो, लेकिन उनकी दूसरी पारी का आगाज जोरदार था। पूरे ताम–झाम के साथ अगले तीन साल के लिए भाजपा की कमान संभालने के बाद उन्होंने नए कार्यकाल को पहले से ज्यादा चुनौतीपूर्ण करार दिया। शायद पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी से मिले पूर्ण सहयोग के वचन का ही असर था कि उन्होंने विचारधारा पर प्रतिबद्धता के बावजूद राजग के विस्तार का भी दावा किया।

बागडोर संभालने के बाद इस कार्यकाल को ज्यादा चुनौतीपूर्ण बताकर साफ कर दिया कि इस दफा उनके तेवर पहले से कुछ अलहदा होंग।. चुनौती से शायद उनका आशय भाजपा के वैचारिक धरातल को संध की अपेक्षाओं के मुताबिक बरकरार रखने के साथ ही राजग को मजबूत करना था। एक तरफ जहां उन्होंने दो टूक कहा कि मैं संध का स्वयंसेवक यह कहने में संकोच नही।. इसमें किसी को परेशानी भी नहीं होनी चाहिए।

दूसरी तरफ उन्होंने राजग को मजबूत करने का भी दावा किया और कहा कि आश्चर्य नहीं कि आने वाले दिनों में राजग के घटकों की संख्या बढ़े। इतना ही नहीं उन्होंने संगठन में कुछ फेरबदल के साथ ही उन्होंने संप्रग सरकार के खिलाफ भी आकामक अभियान चलाने के संकेत दिए। उन्होंने कहा कि आंतरिक सुरक्षा, आतंकवाद, महंगाई और मजहबी से आजिज जनता भाजपा की ओर देख रही है. तीन साल का पूर्णकालिक कार्यकाल मिलने पर उन्होंने पार्टी का आभार जताया, साथ ही कहा कि अटल आडवाणी के मार्गदर्शन, सहयोगियों के सहयोग और कार्यकर्ताओं के स्नेह के साथ मैं पार्टी का संचालन ईमानदारी से करने की कोशिश करूंगा। मुंबई में 11 माह पहले प्रतिकूल हालत में जब राजनाथ अध्यक्ष बने थे तो भी उन्होंने सबके साथ से ही आगे बढने की बात कही थी। उसके बाद से इस दफा भी शब्द भले ही उनके वही थे, लेकिन माहौल बिल्कुल बदला हुआ था।

पिछली बार जहां उनकी ताजपोशी लालकृष्ण आडवाणी की अध्यक्ष पद से विदाई की छाया में हुई थी, वहीं इस बार न सिर्फ माहौल बल्कि राजनाथ के हाव भाव में पूर्णकालिक कार्यभार की चमक साफ दिख रही थी। इससे पहले पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने एक बार फिर राजनाथ की पीठ पर हाथ रख दिया। वाजपेयी ने कहा कि इन्होंने पहली पारी सफलतापूर्वक की है, अब दूसरी पारी की तैयारी है। मेरा विश्वास है कि यह पारी पहले से भी अधिक गौरवपूर्ण होगी।

इनके हाथ में पार्टी का भविष्य उज्जवल है। हम इन्हें बधाई देजे हैं और पूरे सहयोग का वचन देते है। वाजपेयी के साथ–साथ लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष लाकृष्ण आडवाणी ने भी राजनाथ के नेतृत्व की प्रशंसा की। साथ ही अपेक्षा व्यक्त की कि वह सबको साथ लेकर संगठन को और मजबूत मनाएंगे। इस दौरान पार्टी के सभी वरिष्ठ नेता डा. मुरली मनोहर जोशी, वेंकैया नायडू, सुषमा स्वराज, संजय जोशी, मुख्तार अब्बास नकवी आदि मौजूद थे।

7.2.11 0;kikj vkj okf.kT; lekpkj fdl dgr g

पाठकों में व्यापार और वाणिज्य से संबंधित समाचारों को लेकर विशेष जिज्ञासा रहती है। इसे देखते हुए प्रायः सभी समाचार पत्रों में इससे संबंधित समाचार के लिए अलग से पृष्ठ निर्धारित कर दिया गया है। इसके बावजूद इससे संबंधित कोई बड़ी धटना होती है तो उसे समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ पर प्रमुखता से प्रकाशित किया जाता है। अभी कुछ दिनों से रिलायंस समूह में मुकेश और अनिल अंबानी से जुड़े विवाद को सभी समाचार पत्रों में प्रकाशित कियाा गयां और इलेक्ट्राानिक चैनलों पर दिखाया गया। व्यापार और वाणिज्य से संबंधित समाचार अलग–अलग होते हुए भी कई बार एक दूसरे के पूरक हो जाते हैं। शेयर से संबंधित समाचार भी इसी प्रकार के समाचारों के अंतर्गत आते हैं। व्यापारिक गतिविधियों को लेकर बाजार में क्या रूझान है इस बारे में प्रमुखता से समचार प्रकाशित किये जााते हैं। त्यौहार के अवसर पर बाजार में व्यापारिक गतिविधियां कम है या उसके प्रति उपभोक्ता की दिलचस्पी नहीं है। इसका कारण क्या है। इसे मालमू कर विश्लेषणात्मक समाचार प्रकाशित किये जाते हैं। अब तक समाचार पत्रों में अनाज मंडी और सब्जी मंडी के साप्ताहिक समीक्षा भी प्रमुखता से प्रकाशित किये जाते हैं। समाचार की गतिविधियों पर पैनी नजर रखने के लिए संववाददाता को चाहिए कि वह अपनी डायरी में विभिन्न उत्पादों के भाव नोट कर रखा करे। क्योंकि वाणिज्य से संबंधित समाचारों को आंकडों का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कंपनियों द्वारा नए उत्पादों की जानकारी संवाददातओं को दी जाती है। इसके लिए प्रेस विज्ञप्ति जारी करने से लेकर प्रेस वार्ता तक आयोजित किये जाते हैं। पहले वाणिज्य से संबंधित समाचार देने की जिम्मेदारी वाणिज्य पृष्ठ देखने वाले उपसंपादक या विज्ञापन लाने वालों की होती थी। लेकिन इस प्रकार के समाचारों के लिए अब अलग से वाणिज्य संवाददाता समाचार पत्रों में रखे जाने लगे हैं। यहां तक जिला मुख्याल्य में वाणिज्यिक गतिविधियां शुरू होने के कारण इससे संबंधित समाचार संकलन करने की जिम्मेदारी भी संवाददाता को ही सौंपी जाती है।

7.2.12 okf.kT; vkj 0;kikj lekpkj d uewu

fctusl dk ekgkSy vkj vuqdwy gksxk

नई दिल्ली, एजेंसियां : प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने कहा है कि देश–विदेश के उद्यमियों के मिलकर काम करने से भारत की आर्थिक प्रगति में और तेजी आएगी। डा. सिंह ने शनिवार की शाम यहां भारत आर्थिक सम्मेलन के चुनिंदा प्रतिनिधियों के साथ अपने निवास पर बातचीत में कहा कि सभी राजनीतिक दल इस बात पर सहमत हैं कि देश में आर्थिक विकास तेज करने की आवश्यकता है ताकि जनता की विभिन्न समस्याओं से निपटा जा सके। उन्होंने बडी संख्या में रोजगार सृजन पर भी विशेष जोर दिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि निजीकरण जैसे कुछ मुद्दों पर मतभेद जरूर हैं, लेकिन इस बात पर सहमति है कि नई परियोजनाओं को बाजार पर छोड दिया जाना चाहिए। डा. सिंह ने कहा कि आबादी का प्रबुद्ध तबका देश की अर्थव्यवस्था से जोड़ने के पक्ष में है। आर्थिक विकास में गरीबों को भी साथ ले चलने के लिए अभी बहुत कुछ करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि जब तक देश में रोजगारों की संख्या और नहीं बढेगी तथा पिछडे क्षेत्रों के लिए अवसर नहीं उपलब्ध होंगे, तब तक अर्थव्यवस्था की गाड़ी रफ्तार नहीं पकडेगी। प्रधानमंत्री ने भरोसा जताया कि सरकार की अनूकूल नीतियों की बदौलत अर्थव्यवस्था कम से कम आठ प्रतिशत की सालाना विकास दर को बरकार रखेगी। उन्होंने स्विट्जरलैंड के गैर सरकारी संगठन वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम तथा सीआईआई द्वारा पिछले दो दशक से भी ज्यादा समय से आयोजित किये जा रहे सम्मेलन की सराहना करते हुए कहा कि इस सम्मेलन ने अंतर्राष्टीय आर्थिक समुदाय को भारत की

प्रगति से परिचित कराने में महत्वपूर्ण सहयोग किया है। उल्लेखनीय है कि सम्मेलन में इस बार करीब छह सौ प्रतिनिधि भाग ले रहे हैं, जिनमें दो तिहाई विदेशी हैं।

n: k e: fcdu: okyk 90 i:fr kr l kuk v k)

चंडीगढ, एजेसियां

केंद्र सरकार भले ही वर्ष 2008 से सोने के आभूषणों की हॉलमार्किंग अनिवार्य करने जा रही हो, लेकिन सोना खरीदने वालों को निश्चित तौर पर इस तथ्य से करारा झटका लगेगा कि देश में बिकने वाला अधिकतर सोना अशुद्ध है।

भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा देश के 16 प्रमुख शहरों में किए गए एक सर्वेक्षण में विभिन्न ज्वैलरों के स्वर्ण आभूषणों के 90 प्रतिशत से भी ज्यादा नमूने शुद्धता की कसौटी पर खरे नहीं उतरे हैं और उनमें घोषित शुद्धता 44.66 प्रतिशत तक कम पाई गई है। हाल ही में यह सर्वेक्षण उपभोक्ता मामलों के मंत्रालय ने भारतीय मानक ब्यूरो के माध्यम से करवाया था। ब्यूरो के अतिरिक्त महानिदेशक यशपाल सिंह ने रविवार को यहां संवाददाताओं को यह जानकारी दी। इस मामले में चंडीगढ का हाल सबसे बुरा क्योंकि सर्वेक्षण के दौरान यहां ऐसे दस नमूने एकत्रित किए गए और ये सभी शुदधता की कसौटी पर विफल रहे। यशपाल ने कहा कि उपभोक्ताओं को उनके पैसे के बदले उचित शुद्धता के आभूषण सुनिश्चित करने तथा उन्हें धोखाधड़ी से बचाने के लिए सरकार ने एक जनवरी 2008 से आभूषणों की हॉलमार्किंग कराना अनिवार्य कर दिया है। उन्होंने कहा कि सरकार ने आभूषणों की हालमार्किंग योजना एक अप्रैल 2000 को शुरू की थी जो अब तक स्वैच्छिक थी। इस योजना के सार्थक परिणाम सामने आ रहे हैं और ज्यादा से ज्यादा ज्वैलर अब हॉलमार्क आभूषणों की ब्रिकी के लिए लाइसेंस ले रहे हैं। गत 31 अक्टूबर तक 2708 ज्वैलरों को ये लाइसेंस ही जारी किए गए थे। उन्होंने यह भी कहा कि देश में इस समय 40 हॉलमार्किंग केंद्र हैं तथा इनमें से उत्तर भारत में यह केवल दिल्ली में है। लुधियाना में ऐसा ही एक केंद्र जल्द स्थापित किया जाएगा।

7.2.13 [ky lekpkj dh ifjHkk'kk

खेल समाचारों का लेखन कई प्रकार के प्रतिबंधों से मुक्त होता है, लेकिन इस प्रकार के समाचारों का संकलन करने वाले संवाददाता के लिए यह अनिवार्य है कि जिस खेल का उसे समाचार संकलन करने के लिए कहा गया है। उसे उक्त खेल के नियमों की जानकारी अवश्य होनी चाहिए। ऐसा नहीं होने पर समाचार में गलती होने की पूरी संभावना रहती है। समाचार लेखने में उसकी महत्ता नहीं प्रदर्शित होने पर उसे प्रमुख स्थान मिलने की संभावना नहीं रहती है। खेल प्रेमी पाठकों की संख्या को देखते हुए विदेशों के समाचार पत्रों में भी खेल संबंधी समाचार के लिए अलग से पृष्ठ निर्धारित किया गया है। भारत में विशेषकर हिन्दी समाचार पत्रों में खेल समाचारों के लिए अगल से पृष्ठ देने की परिपाटी जालंधर से प्रकाशित पंजाब केसरी द्वारा की गई है। खेल की महत्ता को देखते हुए दूरदर्शन द्वारा अलग से एक स्पोटर्स चैनल शुरू किया गया है तो अन्य समाचार चैनलों द्वारा भी खेल संबंधी समाचार के लिए अलग से समय निर्धारित कर दिया गया है। पाठकों में खेल की समझ ज्यादा होती है। इस कारण संवाददाता द्वारा गलत सूचना देने पर पाठकों के पत्र माध्यम से संवाददाता की शिकायत संपादक तक पहुंच जाती है। खेल समाचारों की मांग को देखते हुए अब सभी समाचार पत्रों में एक या उससे अधिक संवाददाता जरूरत के अनुसार रखे जाने लगे हैं।

7.2.14 [ksy lekpkj dk fo'k;

खेल से संबंधित समाचारों को निम्नलिखित रूप में विभाजित कर उसे समझा जा सकता है।

- खेले गए खेल का विवरण
- खेल के आयोजन संबंधी जानकारी
- खेल संघ की गतिविधियों : जैसे खिलाडियों के लिए प्रशिक्षण शिविर, संघ के चुनाव इत्यादी।
- खिलाड़ियों के साक्षात्कार
- टीमों की घोषणा
- खिलाड़ियों के चयन में भेद भाव
- खिलााड़ियों का प्रदर्शन
- खिलाड़ियों के प्रशिक्षण स्थल
- प्रतिबंधित दवाओं का प्रयोग

खेल समाचार भी सामाान्य समाचारों की तरह लिखा जाता है। इसमें भी पहले आमुख या इंट्रो लिखा जाता है, जिसमें खेल परिणाम, विजेताा टीम या खिलाडी का नाम, चैपियिनशिप का नाम तथा खेल का विशेष आकर्षण क्या रहा की जानकारी दी जाती है। इसके बाद दूसरे भाग में अन्य विवरणों को प्रकाशित किया जाता है। खेल का विवरण लिखते समय संवाददाता को सजग रहना चाहिए।

[ksy lekpkj fy[krs le; lko/kkuh :

खेल संवाददाता को निम्नलिखित सावधानी रखनी चाहिए।

- खिलाडी का नाम सही तरीके से लिखें।
- आंकडा लिखते समय आांकडों का मिलान कर लें।
- खेल के दौरान कौन सी धटना ऐसी विशेष थी, जिसने खेल परिणाम को बदल दिया।
- खिलाडी का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन।

7.2.15 [ksy lekpkj dk pqfuank mnkgj.k

Hkkjr us thrk igyk ,f'k;kbZ gkWiesu di

हैदराबाद, एजेंसी : बुखार की हरारत सानिया के हौसले से ज्यादा मजबूत नहीं है। भारतीय टेनिस सनसनी सानिया मिर्जा ने अस्वस्थता के बावजूद भारत को पहला एशियाई होपमैन कप जिता ही दिया। चीन ताइपेई के खिलाफ फाइनल में भारत ने 3- 0 की शानदार जीत दर्ज की। सानिया ने पहले सिंगल्स में हुसआन हुवांग को 6-2, 6–4 से हराया, जिसके बाद रोहन बोपन्ना ने पुरूष सिंगल्स में ताई चेन को 6–3 ,6–4 से पराजित किया, जबकि मिक्स डबल्स में जब भारतीय जोड़ी 6–1 से आगे थी तब विपक्षी जोडी ने संधर्ष छोड दिया। सानिया ने दुनिया में 316 वे नंबर की हुवांग के खिलाफ दर्शकों के भारी समर्थन के बीच पहले सेट के पांचवें और सातवें गेम में हुवांग

की सर्विस तोडी। दूसरे सेट में उन्होंने शुरू में ही हुवांग की सर्विस तोड़कर बढ़त हासिल कर ली। जीत के बाद सानिया ने कहा कि मैं अच्छा महसूस नहीं कर रही थी। हालांकि कल रात बुखार के कारण थोडी कमजोरी महसूस हो रही थी। पिछले साल डब्लयूटीए खिताब जीतने वाली भारतीय सानिया ने कहा कि इस जीत से आगामी दोहा एशियाई खेलों के लिए उसे अच्छा अभ्यास मिल गया है। 20 वर्षीय हैदाराबादी स्टार एशियाई खेलों में लिएंडर पेस के साथ मिक्स डबल्स में स्वर्ण पदक की दोवदार हैं। इससे पहले इसी जोडी ने चार साल पहले बसान में कांस्य पदक हासिल किया था। विजेता के रूप में भारतीय टीम 20 हजार डालर की हकदार बनी। इस जीत से भारत 30 दिसंबर से 5 जनवरी तक आस्ट्रेलिया के पर्थ में होने वाले होपमैन कप के लिए भी क्वालीफाई कर गया। होपमैन कप में भारतीय टीम स्पेन चेक गणराज्य और क्रोशिया के साथ ग्रुप बी में है, जबकि ए ग्रुप में जर्मनी, अमेरिका, आस्ट्रेलिया और रूस की टीमें हैं।

vk/k u gfj;k.kk dk 114 juk l gjk;k

रोहतक, जागरण संवाद केंद्र : चौधरी बंसीलाल क्रिकेट स्टेडियम में खेले जा रहे रणजी ट्राफी के अंतिम दिन रविवार को आंध्रप्रदेश ने हरियाणा को 114 रनों से हरा दिया। चौथे व अंतिम दिन का खेल मात्र 17.2 ओवरों में ही सिमट गया। हरियाणाा के 7 विकेट मात्र 35 रनों पर ही गिर गये। 7 के निजी स्कोर से आगे खेलने के लिए उतरे सचिन मात्र 5 रन जोड कर कल्याण कृष्णा की गेंद पर प्रसाद को कैच थमा बैठे।

xkre xHkhj d nf{k.k vfQdk tku dh Hkfo';ok.kh

नई दिल्ली, खेसं .: कर्नाटक के एक ज्योतिष दिंगबर ने भविष्यवाणी की है कि नजरअंदाज किए गए पूर्व प्रारंभिक बल्लेबाज गौतम गंभीर दक्षिण अफ्रीका जा सकते हैं। दिगंबर ने यहां रविवार को तमिलनाडु के खिलाफ समाप्त हुए दिल्ली के रणजी मुकाबले के बाद गौतम गंभीर से मुलाकात की और इस दौरान इन दोनों के बीच काफी लंबी बातचीत हुई। इस कन्नड ज्योतिष ने कहा कि घरेलू मैचों में भले ही गंभीर का प्रदर्शन उतना अच्छा नहीं रहा है, लेकिन ग्रह नक्षत्र ऐसे अनुकूल रहे हैं कि गंभीर न केवल दक्षिण अफ्रीका दौरे पर जा सकते हैं, बल्कि उनके वहां काफी रन बनाने की उम्मीद है। दिगंबर ने लगभग एक घंटे गौतम के हाथ की रेखाओं का अध्ययन किया। उन्होंने कहा कि गंभीर का गुरू मजबूत होता जा रही है और इससे बाएं हत्था बल्लेबाज के साथ–साथ टीम इंडिया को भी पूरा लाभ मिल सकता है।

7.3 Ikj

vijk/k lekpkj dh ifjHkk'kk % कानून में जिन अपराधों का उल्लेख किया गया है वे ही अपराध समाचार होते हैं। लेकिन इनमें एक ध्यान रखने योग्य बात यह है कि सभी अपराध की बातें या सभी अपराध समाचार में प्रकाशित करने लायक नहीं होती हैं। अपराध के समाचारों का प्रमुख स्त्रोत संवाददाता के लिए पुलिस होती है। लेकिन कई बार देखने में आया है कि छोटे से बड़े अपराधों का स्त्रोत प्रत्यक्षदर्शी या अन्य विभागों का या फिर आपका कोई जानकार होता है।
अपराध समाचारों के प्रमुख प्रकार निम्नलिखित हैं –

- हत्या
- चोरी

- बलात्कार
- वेश्यावृति
- मारपीट एवं अन्य जैसे भ्रष्टाचार

vnkyr lekpkj dh iz[k lko/kkfu;k % अदालत संबंधित समाचारों का संकलन करते समय संवाददाता को निम्नलिखत प्रमुख सावधानियों को ध्यान में रखना चाहिए।

क. मुकद्मों की सुनवाई के दौरान समाचार को सनसनीखेज बनाकर नहीं प्रकाशित करें।

ख. न्यायालय के निर्णय को समाचार बनाते समय उन्हीं शब्दों का प्रयोग करे, जैसा कि निर्णय में सुनाया गया है।

ग. अदालत के निर्णय को सुनी–सुनायी आधार पर कभी भी किसी सूरत में नहीं लिखें।

[ksy lekpkj fdls dgrs gS

खेल समाचारों का लेखन कई प्रकार के प्रतिबंधों से मुक्त होता है, लेकिन इस प्रकार के समाचारों का संकलन करने वाले संवाददाता के लिए यह अनिवार्य है कि जिस खेल का उसे समाचार संकलन करने के लिए कहा गया है उस खेल पर उसकी पकड़ होना अनिवार्य है वरना पाठकों खेल समाचारों की प्रतिक्रिया भेजकर आपके लिए मुश्किल पैदा कर सकते हैं।

jktuhfrd lekpkj dh lko/kkfu;k

राजनीतिक समाचारों का संकलन करते समय निम्नलिखत सावधानियां बरतनी चाहिए।

क. कौन सा नेता कितने महत्व का है, उसकी परख होनी चाहिए।

ख. प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री की सभाओं के प्रति विशेष सतर्क रहें।

ग. नेताओं द्वारा दिए गए बयान का ज्ञान होना जरूरी है।

घ. नेताओं के स्वभाव को ध्यान को रखते हुए प्रश्नों का क्रम तैयार करें।

7.4 fof k'V "kCnkoyh

j{kk % यहां पर रक्षा का अर्थ देश की सुरक्षा संबंध से हैं।
[ksy : विभिन्न प्रकार के खेल जो खेले जाते हैं।
vnkyr % यहां पर अदालत का संबंध अदालती कार्रवाई से हैं।

7.5 vkdyu iz ukoyh

1- अपराध समाचार की परिभाषा क्या है? अपराध समाचार लिखते समय क्या–क्या सावधानी बरतें विस्तार से विवेचना करें।

2. अपराध समाचारों में किस प्रकार के समाचारों का समावेश रहता है? उसका उदाहरण पूर्वक वर्णन करें.

3. अदालत समाचार किसे कहते हैं? अदालत समाचार और अपराध समाचार में क्या अंतर हैं उहाहरण के साथ बताएं।

4. अदालत समाचार में बरती जाने वाली सावधानियों का विस्तार पूर्वक विर्णन करें।

5. वाणिज्य और व्यापार समाचार किसे कहते हैं। वाणिज्य और आम समाचार में क्या अंतर है? उसकी विवेचना करें।
6. खेल समचार की परिभाषा लिखें और खेल समाचार के विषयों का वर्णन करें।
7. रक्षा समाचार किसे कहते हैं और उसके प्रमुख तथ्य क्या हैं।

7.6 lanHkZ iqLrdsa

d- fons'k fjiksfVZax jke 'kj.k tks'kh
[k- lEiknu dyk lathoHkkukor
x- i=dkfjrk ds fl)kar v:.k Hkkxr
?k- VkbEl vkWQ bafM;k
M- nSfud tkxj.k
p- nSfud HkkLdj

Block - D Unit – II
Lesson 8

dk;lde] cBd] lfeukj] dk;l kkyk] isl dkQsl] vkj
lk{kkRdkj

ys[kd % Jh v:.kk k dekj iujh{kd % Jh fefgj jtu ik=

<u><kpk</u>

8.0 mnns ;

8.1 ikB ifjp;

8.2 fo'k; oLrq iLrqfrdj.k

8.2.1 dk;lde

8.2.2 cBd

8.2.3 lfeukj

8.2.4 dk;l kkyk

8.2.5 isl dkQsl

8.2.6 lk{kkRdkj

8.3 lkj

8.4 fof k'V "kCnkoyh

8.5 vkdyu iz ukoyh

8.6 lnHkZ iqLrdsa

8.0 mnns ;

इस अध्याय का प्रमुख उद्‌देश्य पत्रकारिता के छात्रों को यह बताना कि एक संवाददाता कार्यक्रमों, बैठक, सेमिनार, कार्यशाला, प्रेसकांफ्रेस और साक्षात्कार के दौरान किस प्रकार से समाचार

का संकलन कर सकता है। छात्रों को यह भी बताना कि इन सब कार्यक्रमों के दौरान उसका बर्ताव कैसा होना चाहिए।

8.1 ikB ifjp;

समाचारों के संकलन के लिए संवाददाता प्रातः काल से लेकर देर रात्रि तक किस प्रकार व्यस्त रहता है? किस प्रकार वह अपने कार्यक्रमों को निपटाता है और किस प्रकार वह इन सभी कार्यक्रमों से समाचारों का संकलन करता है। आइए नजर डालें एक संवाददाता कि दिनचर्या पर। संवाददाता सुबह–सुबह ही सारे समाचार पत्रों पर नजर डालता है, उसके बाद शुरू होता है उसका काम बस डायरी पेन उठाया और नोट कर डाले सारे दिन घटित होन वाले वे सभी कार्यक्रम जो उसकी बीट में आते हैं। इन कार्यक्रमों को वह सारे दिन के घटित होने के क्रमानुसार लिख लेता है। मुख्यतः कार्यक्रमों में स्कूलों, कालेजों, विश्वविद्यालयों व अन्य सरकारी व गैर सरकारी विभागों में घटित होने वाले कार्यक्रम होते हैं। इन कार्यक्रमों में मुख्य रूप से विभागीय अधिकारियों की बैठकें, विश्वविद्यालयों में होने वाले किसी विषय पर सेमिनार, रैडक्रास जैसी सोसायटीयों में कार्यशालाएं, नेताओं व मंत्रियों द्वारा बुलाई गई पत्रकारों के सम्मेलन जिन्हें प्रेसकांफ्रेस कहते हैं या किसी खास अवसर पर या अचानक आने वाले किसी राजनीतिक, खिलाड़ी या व्यवसायिक व्यक्ति का साक्षात्कार शामिल होते हैं। इन सभी से संवाददाता के लिए समाचार संकलन करना काफी महत्वपूर्ण व सुलभ रहता है।

8.2 fo'k; oLrq iLrqfrdj.k

- 8.2.1 कार्यक्रम
- 8.2.2 बैठक
- 8.2.3 सेमिनार
- 8.2.4 कार्यशाला
- 8.2.5 प्रेसकांफ्रेस
- 8.2.6 साक्षात्कार

8.2.1 dk;Zde % संवाददाता के लिए प्रतिदिन अपनी निर्धारित बीट में बहुत से कार्यक्रम होते हैं जिनसे वह समाचारों का संकलन करता है। वैसे तो इन सभी कार्यक्रमों के प्रैस नोट संबंधित व्यक्तियों द्वारा ब्यूरो कार्यालय पहुंचा दिए जाते हैं फिर भी संवाददाता को इन सभी कार्यक्रमों में कुछ देर के लिए अवश्य जाना पड़ता है। संवाददाता प्रत्येक कार्यक्रम में उपस्थित तो नहीं हो सकता क्योंकि कार्यक्रमों की बहुलता कई बार बहुत ज्यादा हो जाती है। इस लिए कार्यक्रमों को महत्वपूर्ण की दृष्टि से क्रम में लगा लेना चाहिए। संवाददाता को कार्यक्रमों में जाकर वहां के घटना क्रम व मुख्यातिथि द्वारा कहे गए वाक्यों पर खास नजर रखनी पड़ती है, क्योकि वही वाक्य कार्यक्रम की लीड भी बन सकते हैं। कार्यक्रम में महत्वपूर्ण लोगों की उपस्थिति व कार्यक्रम के घटित होने का कारण व परिणाम इन सब तथ्यों का संकलन कर लेना चाहिए। जरूरत पड़ने पर सबाल–जबाव भी किया जा सकता है। एक संवाददाता के लिए किसी भी दिन के कार्यक्रम इस प्रकार से हो सकते हैं।

- स्कूल के खेद–कूद कार्यक्रम।
- कालेजों में पुराने छात्र मिलन समारोह, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं व अन्य कार्यक्रम।
- किसी महापुरूष की जयंती मनाने का कार्यक्रम।
- किसी व्यवसायिक प्रतिष्ठान द्वारा नयी स्कीमों या ग्राहकों को लुभाने के लिए किया गया सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- किसी भी नयी जगह के उद्घाटन के लिए किसी बहुचर्चित हस्ती को बुलाना।
- नगर में धार्मिक कार्यक्रम जैसे प्रवचन, कथा, कीर्तन व गरीब कन्याओं का संस्थाओं द्वारा सामूहिक विवाह करवाना इत्यादि।

8.2.1 cBd ¼ बैठक का स्तर क्या है? अर्थात बैठक का आयोजन किसी संगठन द्वारा किया जा रहा है या फिर लोग किसी समस्याओं को लेकर एकत्रित होकर बैठक कर रहे हैं। बैठक में कौन–कौन से लोग भाग ले रहे हैं। बैठक का अंतिम निर्णय क्या हुआ। इन सब प्रश्नों का उत्तर खोजते हुए संवाददाता को समाचार संकलन करना पडता है। इस प्रकार के बैठकों का निर्णय जानने की इच्छा आम पाठक को भी रहती है। इसलिए बैठक संबंधी समाचार का संकलन करते समय अन्य समाचार संकलन के विपरीत इसमें संवाददाता को बैठक के निष्कर्ष तक पहुंचना पडता है। किसी भी संवाददाता के लिए एक दिन की बैठकें इस प्रकार हो सकती हैं।

- नगरपलिका या नगर परिषद के सदस्यों की आम व खास बैठक।
- शिक्षा मंत्री या जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ली गई अध्यापकों की मासिक बैठक।
- जिला आयुक्त द्वारा जिले के सभी प्रशासिनक अधिकारियों की बैठक लेना।
- किसी भी राजनीतिक पार्टी के मुख्य नेता द्वारा जिले में पार्टी की राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी लेना।

कई बार संवाददाता को बैठकों में अन्दर आने दिया जाता है और कई बार नहीं। यदि अन्दर आने दिया गया है तो चुपचाप रहकर सारी कार्यवाई पर नजर रखनी चाहिए। कई बार जिला आयुक्त द्वारा ली गई बैठक में आयुक्त द्वारा कई प्रशासिनक अधिकारियों की खिंचाई की जाती है। यह सब बातें समाचार की लीड तक बन सकती हैं। यदि बैठकों में अन्दर नहीं जाने दिया गया है तो बैठक के खत्म होने का इंतजार करना चाहिए तथा बाद में बैठक प्रमुख से सारा मामला जानने की कोशिश करनी चाहिए। बैठक से संबंधित सवाल अवश्य करने चाहिए। बैठक का क्या परिणाम रहा उसको भी समाचार में प्रमुखता से दर्शाना चाहिए।

8.2.3 l:feukj ¼ सेमिनार अधिकतर कालेजों व विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित किए जाते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य संस्थान के विद्यार्थियों को नई खोजों व खास विषयों पर शिक्षित करना होता है। सेमिनारों में अधिकतर मुख्य वक्ता के रूप में किसी प्रसिद्ध वैज्ञानिक, राजनीतिक, व्यावसायी या प्रशासन के आला अधिकारी को बुलाया जाता है।

इन सेमिनारों का फायदा उन सभी लोगों तक भी पहुंचे जो इन सेमिनारों में होने वाले विषय के प्रति रूचि रखते हैं या फिर वे लोग जो इनका लाभ जानते हुए भी नहीं आ पाने के कारण उठा सके, इसको ध्यान में रखते हुए संवाददाता का फर्ज बनता है कि वह ठीक से इस सेमिनार की रिर्पोटिंग करे और सेमिनार के विषय को अच्छे से कलमबद्ध कर ले। यदि संवाददाता विषय के बारे में थोड़ी बहुत भी जानकारी रखता है तो उसे उससे संबंधित प्रश्न भी पूछने चाहिए।

यदि वह जानकारी नहीं रखता तो वहां उपस्थित लोगों द्वारा पूछे गए प्रश्नों को क्रमबद्ध कर ले और प्रमुखता के आधार पर उन्हें प्रकाशित करे।

lsfeukj ds nkjku loknnkrk dks D;k lko/kkfu;ka j[kuh pkfg,\

- सेमिनार के दौरान संवाददाता को वक्ता व अन्य लोगों की बातें ध्यानपूर्वक सुननी चाहिए।
- यदि विषय के बारे में जानकारी है तो अवश्य प्रश्न पूछना चाहिए अन्यथा दूसरों के द्वारा पूछे गए प्रश्नों पर ध्यान देना चाहिए।
- किसी कारणवश कोई बात ठीक से समझ नहीं आती तो उसे सेमिनार समाप्त होने के बाद सेमिनार संयोजक या मुख्य वक्ता से समय लेकर दोबारा पूछ लेना चाहिए, यदि ऐसा संभव नहीं है तो उस के बारे में गलत नहीं लिखना चाहिए, क्योंकि आपके द्वारा दी गई गलत जानकारी किसी को मुसीबत में डाल सकती है।

8.2.4 dk;Z'kkyk % कार्यशालाओं का आयोजन सरकारी विभागों द्वारा अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने, कैम्प लगाने के दौरान, या कालेजों व विश्वविद्यलयों में भी छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिए लगाई जाती हैं। इसमें भी सेमिनार की तरह औपचारिकता का निर्वाह करना पड़ता है।

ukV % कार्यशाला व सेमिनार में मुख्य अन्तर यह है कि सेमिनार तो एक दिन में कुछ घंटों के लिए होता है लेकिन कार्यशालाएं अधिकतर एक सप्ताह तक कि हो सकती हैं। इस लिए संवाददाता को सभी दिनों में होने वाले कार्यक्रमों का ब्यौरा लिखना पड़ता है। यहां एक बात यह है कि इस प्रकार की कार्यशालाओं में पहले और अंतिम दिन ही लगभग खास कार्यक्रम होता है। बाकी दिनों के लिए संवाददाता वहां थोड़ा समय खर्च करे और पहले और अखिरी दिन उसे पूरा समय देना पड़ता है।

8.2.5 izsl dkWQsl % अनुभवी संवाददाताओं को ही प्रेस कांफ्रेंस में भेजने की परंपरा समाचार पत्रों में समाप्त होती जा रही है। प्रेस कांफ्रेंस में किसी संवाददाता को भेजते समय यह देखा जाता है कि प्रेस कांफ्रेंस करने वाले व्यक्ति का महत्व क्या है। वहीं वरिष्ठ नेताओं, मुख्यमंत्री या अन्य महत्वपूर्ण व्यक्ति के आने पर उसके अनुरूप ही अनुभवी संवाददाता को भेजा जाता है। प्रेस कांफ्रेंस समाचार के लिए एक आसान और सहज उपलब्ध स्त्रोत होता है, लेकिन उसमें दिये गए बयानों को सही प्रकार से लिखना संवाददाता की महत्ववूर्ण जिम्मेदारी होती है। आम तौर पर यह माना जाता है कि प्रेस कांफ्रेंस से संबंधित समचारों का लेखन आसान होता है, लेकिन ऐसा होता नहीं है। इस प्रकार के समाचारों का लेखन करने से पूर्व संवाददाता के लिए यह जानना अनिवार्य है कि उस दौरान उसका आचरण और व्यवहार कैसा हो। क्योंकि वहां पर एक साथ कई वरिष्ठ पत्रकार भी होते हैं। कई बार संवाददातओं के व्यवहार के कारण भी प्रेस कांफ्रेंस बीच में ही समाप्त करने की नौबत आ जाती है या संबंधित व्यक्ति बीच में ही प्रेस कांफ्रेंस को समाप्त कर देता है। इसे देखते हुए संवाददाता को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए।

- इस प्रकार का व्यवहार नहीं प्रदर्शित करे, जिससे कि यह लगे की संवाददातओं में वही सर्वश्रेष्ठ है। प्रेस कांफ्रेस के बारे में प्रायः पूर्व में सूचना दे दी जाती है। ऐसे में संवाददाता को होम वर्क करके जाना चाहिए।
- अन्य संवाददाता क्या कर रहें है। इसकी चिंता किये बिना अपनी ठोस भूमिका निभाने के लिए तैयार रहें।

- प्रेस कांफ्रेंस में भाग लेने के लिए निर्धारित समय से दस मिनट पहले पहुंच जाएं।
- प्रश्न को सहज भाव में पूछे, न कि उस प्रश्न के लिए आक्रामक बनें।
- दिये गए उत्तरों से प्रश्न निकालने की कोशिश करें।
- जिस बारे में प्रश्न पूछें उस विषय की पूरी जानकारी रखें।
- प्रश्न करते समय संवाददाता अपने विचारों को प्रकट नहीं करे।
- प्रश्न ऐसे पूछें, जिससे अगली बात भी वक्ता से कहलवायी जा सके।
- ऐसे सवाल नहीं करें, जिसके बारे में वक्ता विस्तार से उत्तर नहीं दे सके।
- वक्ता को बार–बार अपने प्रश्नों से परेशान नहीं करने की कोशिश करें।
- इस बात का भी ध्यान रखें कि जितना प्रश्न पूछने का अधिकार आपको है। उतना ही अधिकार आपके अन्य साथियों को भी हैं। अपने साथी को प्रश्न पूछने का अवसर दें।
- आपके द्वारा पूछा गया प्रश्न ऐसा हो, जो चल रहे प्रश्नोत्तर के क्रम में संगत और उपयुक्त हो।
- यह कोशिश न करें कि आपके द्वारा पूछा गया प्रश्न ही प्रेस कांफ्रेंस की लीड बने।
- यदि वक्ता द्वारा कही गई बातें असंगत है। ऐसी स्थिति में उससे सही बात कहलवाएं, चाहे वक्ता को इसका उत्तर देने में परेशानी क्यों न हो।

प्रेस कांफ्रेस का समाचार लेखन करने का भी वही नियम और सिद्वांत है, जो आम समाचारों के लेखन का होता है। इसमें भी सर्वाधिक महत्वपूर्ण और रोचक बात आमुख में उसके बाद कम महत्व की बातें शेष समाचार में लिखा जाता है। यहां उल्लेखनीय है कि यदि प्रेस कांफ्रेंस में आपने एक भी प्रश्न नहीं पूछा है, फिर भी दूसरे संवाददाओं से बेहतर तरीके से समाचार लिख सकते हैं। ऐसा करने के लिए यह जरूरी है कि आपने प्रेस कांफ्रेंस को मनोयोग से सुना है और वक्ता द्वारा दिये गए उत्तरों को डायरी में नोट किया है। प्रेस कांफ्रेंस से संबंधित समाचारों को लिखते समय यह हमेशा लिखें कि उक्त कथन किसके द्वारा कही गई है। संवाददाता अपनी ओर से कुछ नहीं लिख रहा है, लेकिन वक्ता ने जो कहा है वही लिख रखा है। यदि आप यह पाठकों को बताना चाहते हैं कि वक्ता प्रभावशाली रहा या मूर्ख तो इस बात को लिखे बिना आप अपनी लेखनी में शब्दों के चयन के माध्यम से पाठक को बता सकते हैं।

8.2.6 lk{kkRdkj % प्रेस कांफ्रेंस से थोडा हटकर साक्षात्कार होता है। इसमें मुख्य अंतर यह होता है कि यहां पर अनेक संवाददाता की जगह सिर्फ आप अकेले संवाददाता होते हैं। समाचार पत्रों और इलेक्ट्रानिक मीडिया में भी इन दिनों विशेष साक्षात्कार का प्रचलन तेजी से शुरू हुआ है। उसे अलग–अलग नामों से प्रकाशित और प्रकाशित भी किया जाता है। साक्षात्कार की पूरी प्रक्रिया संवाददाता पर निर्भर करती है।

ऐसे में पत्रकारिता के छात्रों को यह जानना जरूरी है कि वह साक्षात्कार कैसे ले, और उसका लेखन किस प्रकार करे, जिससे कि पाठकों के मध्य उसकी पठनीयता अधिक रहे। साक्षात्कारकार्ता का दिमाग खुला और सजग होना चाहिए। यही सफल साक्षात्कारकर्ता का मूलमंत्र है। साक्षात्कार तीन प्रकार के होते हैं।

- एक आमने–सामने बैठ कर।
- दूसरा टेलिफोन या मोबाइल पर
- तीसरा ई मेल या प्रश्नावली भेजकर किया जाता है।

साक्षात्कार के दौरान यदि कोई व्यक्ति अपने आप बहुत बताता है, तो इस बात की पूरी संभावना रहती है कि वह आपको प्रचार का साधन बनाने की कोशिश कर रहा है। वह व्यक्ति इसलिए आपसे बहुत कुछ कह रहा है या बातों में उलझा रहा है, जिससे असली बात छिपी रह जाए। इन दिनों मीडिया में चलते–चलते या खाने के मेज पर भी साक्षात्कार लेने की परंपरा चल रही है, क्योंकि कार्यक्रम की व्यस्तता के कारण कई बार संवाददाता को इस प्रकार की परिस्थितियों से गुजरना पडता है। इसलिए संवाददाता को महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साक्षात्कार के लिए इस प्रकार तैयार रहना चाहिए कि उसे अवसर मिलते ही वह अपना कार्य सफलता पूर्वक कर ले। सफल साक्षात्कारकर्ता में निम्नलिखित गुण होना चाहिए।

- तैयारी
- शिष्टाचार
- प्रश्नों का क्रम तैयार होना चाहिए

rS;kjh % सभी प्रकार के साक्षात्कार के लिए संवाददाता को अपनी पूरी तैयार करनी चाहिए। अर्थात जिस व्यक्ति का वह साक्षात्कार करने जा रहा है उससे संबंधित विषयों की पहले से ही तैयारी कर लें, क्योंकि उसके पास जाने के बाद आपको प्रश्न तैयार करने के लिए अवसर मिलने की संभावना कम रहती है। प्रश्नों की तैयारी करने में अपने वरिष्ठ साथी से सहयोग लेने में संकोच नहीं करें। साथ ही उस व्यक्ति के विषय से संबंधित समसामयिक विषयों की जानकारी अवश्य प्राप्त कर लें। इसके लिए एक अच्छा तरीका यह भी हो सकता है कि आप विगत एक पखवाडे के समाचार पत्रों का अध्ययन कर लें। इसके लिए आपका रंग–ढंग अर्थात पहनावा ऐसा होना चाहिए, जिससे कि व्यक्ति को बुरा या अच्छा नहीं लगे। इसके लिए यह जरूरी नहीं है कि आप एक मॉडल की तरह तैयार हो कर चले जाएं।

f k’Vkpkj % सफल साक्षात्कार लेने के लिए संवाददाता में शिष्टाचार का होना अनिवार्य है। लेकिन शिष्टता वहीं तक रखें, जहां तक मर्यादित रहे। अर्थात यदि आप किसी का साक्षात्कार लेने के लिए जा रहे हैं और वहां पर उनके अधीनस्थ व्यक्तियों और अधिकारियों द्वारा अनावश्यक रूप से व्यवधान उपस्थित किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में आपको थोडी सी दृढता भी दिखानी पडे तो इससे परहेज नहीं करें, क्योंकि ऐसा नहीं करने पर संबंधित व्यक्ति से साक्षात्कार नहीं होने की संभावना बढ जाती है।

iz uks dk dze % प्रश्नों का क्रम इस प्रकार तैयार करें, जिससे कि साक्षात्कार देने वाले व्यक्ति को अपनापन का एहसास हो सके।

जब तक साक्षात्कार लेने वाले व्यक्ति के साथ संवाददाता का आत्मीय उद्‌बोधन या बातचीत के दौरान आत्मीयता नहीं झलकेगी तब तक इस बात की संभावना बनी रहती है कि आप जिस जानकारी को प्राप्त करना चाह रहे हैं वह नहीं मिल पाए।

जिस जानकारी को आप प्राप्त करना चाहते हैं उससे संबंधित प्रश्नों को आप अंतिम क्रम में रखें। क्योंकि आपके द्वारा शुरू में ही टेढ़े–मेढ़े प्रश्न पूछने पर साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति बीच में ही साक्षात्कार देना बंद कर सकता है। कई बार ऐसा भी होता है कि साक्षात्कार देने वाला व्यक्ति अपनी उपलब्धियों से ही साक्षात्कार शुरू करता है। ऐसा होने पर आप उसे अपनी बात पूरी कर लेने दें।

le; ugha gS % कुछ ऐसे भी लोग होते हैं, जो यह कह कर साक्षात्कार देने से मना कर देते हैं कि मुझे कुछ भी नहीं कहना है या इस बारे में कोई टिप्पणी नहीं करनी। इस बारे में कल कुछ कहुंगा। आपके समाचार पत्र पर विश्वास नहीं है। आपको जो लिखना है वह लिख दें।इस प्रकार के लोगों से संवाददाता को मनौवैज्ञानिक तरीके से निपटना चाहिए। साथ ही यदि उनसे या उनके विभाग से संबंधित महत्वपूर्ण प्रश्न है, जिससे कि उस प्रभाव पड सकता है। उस प्रकार के प्रश्न

पूछने से परहेज भी नहीं करना चाहिए, क्योंकि हो सकता है कि उस प्रकार के प्रश्न सुनकर वह स्वयं नरम हो जाए। यदि आपके प्रश्न का उत्तर नहीं देता है तब भी आपकी बात बन जाएगी।

8.3 lkj

loknnkrk ds fy, dk;Zdeksa ds izdkj %

- स्कूल के खेद–कूद कार्यक्रम।
- कालेजों में पुराने छात्र मिलन समारोह, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएं व अन्य कार्यक्रम।
- किसी महापुरूष की जयंती मनाने का कार्यक्रम।
- किसी व्यवसायिक प्रतिष्ठान द्वारा नयी स्कीमों या ग्राहकों को लुभाने के लिए किया गया सांस्कृतिक कार्यक्रम।
- किसी भी नयी जगह के उद्घाटन के लिए किसी बहुचर्चित हस्ती को बुलाना।
- नगर में धार्मिक कार्यक्रम जैसे प्रवचन, कथा, कीर्तन व गरीब कन्याओं का संस्थाओं द्वारा सामूहिक विवाह करवाना इत्यादि।

cSBd %

- नगरपलिका या नगर परिषद के सदस्यों की आम व खास बैठक।
- शिक्षा मंत्री या जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा ली गई अध्यापकों की मासिक बैठक।
- जिला आयुक्त द्वारा जिले के सभी प्रशासिनक अधिकारियों की बैठक लेना।
- किसी भी राजनीतिक पार्टी के मुख्य नेता द्वारा जिले में पार्टी की राजनीतिक गतिविधियों की जानकारी लेना।

uksV % कार्यशाला व सेमिनार में मुख्य अन्तर यह है कि सेमिनार तो एक दिन में कुछ घंटों के लिए होता है लेकिन कार्यशालाएं अधिकतर एक सप्ताह तक कि हो सकती हैं। इस लिए संवाददाता को सभी दिनों में होने वाले कार्यक्रमों का ब्यौरा लिखना पड़ता है। यहां एक बात यह है कि इस प्रकार की कार्यशालाओं में पहले और अंतिम दिन ही लगभग खास कार्यक्रम होता है। बाकी दिनों के लिए संवाददाता वहां थोड़ा समय खर्च करे और पहले और अखिरी दिन उसे पूरा समय देना पड़ता है।

lk{kkRdkj ds izdkj %

- एक आमने–सामने बैठ कर।
- दूसरा टेलिफोन या मोबाइल पर
- तीसरा ई मेल या प्रश्नावली भेजकर किया जाता है।

8.4 fof'k"V "kCnkoyh

dk;Z'kkyk % कार्यशालाओं का आयोजन सरकारी विभागों द्वारा अपने कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने, कैम्प लगाने के दौरान, या कालेजों व विश्वविद्यलयों में भी छात्रों को प्रशिक्षण देने के लिए लगाई जाती हैं।

izsl dkaQzsal % अधिकतर राजनीतिक पार्टीयों के मुख्य नेता इत्यादि अपनी बयानबाजी करने के लिए या फिर विरोधी पार्टी की बयानबाजी का जबाब देने के लिए पत्रकारों को इक्कट्ठा कर उन्हें अपने बात कहते हैं। प्रेस कांफ्रेंस आयोजित करने का कारण नेताओं को मिलने वाली प्रख्याति से भी है।

8.5 vkadyu iz'ukoyh %

1. साक्षात्कार लेने की विधि व संवाददाता की औपचारिकता पर प्रकाश डालें।
2. कार्यशाला, सेमिनार व कार्यक्रमों पर पांच सौ शब्दों पर नोट लिखें।
3. अपने कालेज व विश्वविद्यालय में होने वाले सेमिनार पर समाचार तैयार करके उसे पास के समाचार पत्र के ब्यूरो कार्यालय में भेजें।
4. अपने आस–पास होने वाली किसी भी तरह की बैठक का समाचार तैयार कर अपने शिक्षक को दिखाएं व कक्षा में उस पर चर्चा करें।
5. अपने कालेज या विश्वविद्यालय के किसी विशेष व्यक्ति या अधिकारी का साक्षात्कार लें और उसे शिक्षक को दिखाएं।

8.6 lanHkZ iqLrdsa

jsfM;ks vkSj nwjn'kZu lk=dkfjrk   MkW- gfjeksgu

i=dkfjrk dk bfrgkl ,oa tu&lapkj ek/;e   lathr ekukor

7 Block – E Unit – I
Lesson 9

jfM;k i=dkfjrk dk ifjp;

y[kd % Jh v:.kk k dekj
jtu ik=

iujh{kd % Jh fefgj

<kpk

9.0 mnn ;
9.1 ikB ifjp;
9.2 fo'k; oLr iLrfrdj.k
    9.2.1 jfM;k lekpkj dk liknu
    9.2.2 jfM;k dh J0; Hkk'kk
    9.2.3 jfM;k lekpkjk e lf{kIrrk
    9.2.4 foykse Lrih fl)kr
    9.2.5 lekpkj d L=kr
    9.2.6 iy foHkkx
    9.2.7 cyfVu dk l;ktu
    9.2.8 dec)rk
    9.2.9 LVfM;k e lekpkj liknu
9.3 lkj
9.4 fof k'V “kCnkoyh
9.5 vkdyu i ukoyh
9.6 lnHk iLrd

9.0 mnn ; % रेडियो समाचार संपादन की अपनी भाषा–शैली होती है। जन संचार और पत्रकारिता के छात्रों के मन में यह जानने की स्वाभाविक उत्सुकता होती है कि रेडियो समाचार अन्य समाचारों से भिन्न कैसे होते हैं। बुलेटिन का संयोजन किस प्रकार से किया जाता है छात्रों की इसी जिज्ञासा को ध्यान में रखकर यह पाठ लिखा गया है।

9.1 ikB ifjp;

रेडियो श्रव्य माध्यम है। श्रव्य भाषा और लिखित भाषा में तात्विक भेद होता है। रेडियो सुना जाता है, अखबार पढ़ा जाता है। इसीलिए रेडियो के लिए समाचार लिखते समय बोलचाल की भाषा का उपयोग किया जाता है। श्रव्य माध्यम में संक्षिप्तता समाचार की आत्मा होती है। रेडियो समाचार एक निश्चित अवधि में सुने जाते हैं। एक समर्पित श्रोता भी अधिक समय तक निरन्तर समाचार नहीं सुन सकता। इसी लिए समाचार बुलेटिन को संक्षिप्त तथा आकर्षक होना चाहिए। इलैक्ट्रानिक मीडिया में हुए परिवर्तन का असर रेडियो पत्रकारिता पर भी हुआ है। आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में समाचार प्राप्त करने से लेकर मनोरंजन का साधन रेडियो ही है। शहरों में भले ही इसकी लोकप्रियता कम हो गई हो, लेकिन मोबाइल पर एफएम के प्रसारण ने श्रोताओं में एक बार फिर से रेडियो के प्रति आकर्षण बना दिया है। भारत जब आजाद हुआ था उस समय में देश में रेडियो स्टेशनों की संख्या मात्र दस थी जो अब तीन सौ केंद्रों तक पहुंच गई है। अभी हाल ही में प्रसारण भारती द्वारा डायरेक्ट टू होम केबल के माध्यम से दर्शकों को टेलीविजन सेट पर रेडियो सुनने की सुविधा उपलब्ध कराने से एक बार फिर आकाशवाणी के प्रसारणों में नई चुनौती बढने की संभावना बढ गई है। टीवी पर न्यूज चैनलों का असर रेडियों के समाचार प्रसारणों पर भी बहुत हद तक पड़ा है। यही कारण आकाशवाणी केंद्रों से प्रसारित किये जाने वाले समाचारों का स्वरूप टीवी जैसा दिखने लगा है। इन केंद्रों के माध्यम से भी महत्वपूर्ण धटनाओं से संबंधित समाचारों को सीधा प्रसारित किया जाने लगा है या समाचार के समय धटना स्थल से संवाददातओं की रिपोर्ट के माध्यम से समाचार को सजीव बनाने का भरपूर प्रयास किया जाता है। टीवी और रेडियो की पत्रकारिता भले ही तकनीकी रूप से एक जैसा है, लेकिन जब समाचार लिखने की बारी आती है, तो इसमें कुछ परिवर्तन करना पडता है। इसके बावजूद भी इलेक्ट्रानिक मीडिया की तरह यहां भी न्यूज रूम होता है तथा संपादक, समाचार संपादक और उपसंपादक भी होते हैं। इसके अतिरिक्त देश के प्रमुख स्थानों पर विशेष संवाददाता, संवाददाता और स्टींगर भी होते हैं। जिनके माध्यम से समाचार प्राप्त किये जाते हैं। अभी आकाशवाणी में दो स्तर पर समाचार प्रसारण की व्यवस्था की गई। इसके तहत राज्यों के समाचार भी संबंधित राज्य का एक रेडियो प्रादेशिक समाचार के तहत समाचार का प्रसारण करता है, जबकि दिल्ली से आल इंडिया रेडियो से अखिल भारतीय समाचार का प्रसारण किया जाता है। इस समाचार का रिले सभी राज्यों के आकााशवाणी केंद्रों द्वारा किया जाता है। आकाशावाणी के माध्यम से समाचारों के प्रसारण के अतिरिक्त स्कूल छात्रों के लिए, युवाओं, किसानों, महिलाओं के लिए भी अलग से प्रसारण किये जाते हैं। आकाशवाणी में सवांददाताओं द्वारा भेजे गए समाचार को कम से कम स्थान मिलता है, क्योंकि आकशवाणी से प्रसारित किये जाने वाले समाचार की महत्ता कम से कम राज्य स्तर का होना जरूरी है, क्योंकि समाचार पत्रों की तरह अभी भी आकाशवाणी में जिला वार या क्षेत्रवार समाचार प्रसारण की व्यवस्था नहीं शुरू हो पाई है। इसके विपरीत टीवी पर समाचार के लिए चौबीस घंटे उपलब्ध होने के कारण संवाददाताओं को इस प्रकार की समस्याओं का सामना नहीं करना पडता है। इस पाठ में रेडियो समाचार संपादन के लिए आवश्यक उपरोक्त अवयवों सहित अन्य तत्वों पर विस्तार से प्रकाश डाला गया है।

9.2 fo’k; oLr| iLr|frdj.k

9.2.1 रेडियो समाचार का संपादन

9.2.2 रेडियो की श्रव्य भाषा
9.2.3 रेडियो समाचारों में संक्षिप्तता
9.2.4 विलोम स्तूपी सिद्धांत
9.2.5 समाचार के स्त्रोत
9.2.6 पूल विभाग
9.2.7 बुलेटिन का संयोजन
9.2.8 क्रमबद्धता
9.2.9 स्टूडियो में समाचार संपादन

9.2.1 jsfM;ks lekpkj dk laiknu % रेडियो समाचारों के लिए संपादन दूरदर्शन और समाचार पत्रों से भिन्न होता है। रेडियो समाचार क्षणभंगुर होते हैं अर्थात जब वे प्रसारित होते हैं तभी उन्हें सुना जा सकता है जबकि समाचार पत्रों व दूरदर्शन में समाचारों की स्थिति अलग होती है। समाचार पत्रों में उन्हें जब मन करे जब पढ़ा जा सकता है और दूरदर्शन पर आवाज के साथ फोटो भी होती है जिससे समाचारों को समझने में मदद मिल जाती है। रेडियो पर हमें समाचारों के मामले में थोड़ी असुविधा का सामना करना पड़ता है। लेकिन यहां एक असमानता है कि अखबार को पढ़ने के लिए व्यक्ति का पढ़ा–लिखा होना अति आवश्यक है और टेलीविजन और रेडियो के लिए व्यक्ति का पढ़ा–लिखा होना अनिवार्य नहीं है। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए रेडियो समाचारों का संपादन इस प्रकार किया जाता है कि अनपढ़ व्यक्ति भी इसे ठीक से समझ सके। अर्थात बिल्कुल सरल, सहज, सीधी–साधी भाषा का इस्तेमाल करके रेडियो समाचारों का संपादन किया जाता है। रेडियो पर समाचार वाचक दिखाई नहीं देता वह केवल अपनी आवाज और स्वरों के आरोह–अवरोह से ही अपने श्रोता को प्रभावित करता है।

9.2.2 jsfM;ks dh J0; Hkk'kk % श्रव्य भाषा और लिखित भाषा में भेद होता है, जिसे रेडियो पत्रकारिता के लिए समझना अति आवश्यक है। रेडियो सुनते समय श्रोता के पास इतना समय नहीं होता कि वह सुने गए कठिन शब्दों का किसी से अर्थ पूछे। यदि वह ऐसा करता है तो वह शेष समाचारों से वंचित रह जाता है। जबकि समाचार पत्रों के पाठकों के लिए कठिन शब्दों का अर्थ समझने के लिए ढेरों समय होता है। पाठक चाहें तो समाचार पत्र में किसी अनुच्छेद को पढ़ सकता है और किसी को भी छोड़ सकता है, लेकिन यह सब रेडियो में संभव नहीं है। इसलिए रेडियो समाचार संपादक उन शब्दों का चयन करता है, जिन्हें श्रोता आसानी से समझ पाता है। रेडियो समाचार की भाषा स्वाभाविक एवं प्रवाह–पूर्ण होनी चाहिए। उसका रूप प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा के अनुरूप होना चाहिए। इस दृष्टि से रेडियो के लिए लिखे गए समाचार में एक विशेष प्रकार की भाषा–शैली आवश्यक हो जाती है।

रेडियो समाचारों की भाषा–शैली अन्य कई माइनों में भी पृथक होती है। यहां धनराशि का पहले और रूपए का बाद में उल्लेख करते हैं। क्योंकि बातचीत के दौरान भी हम कह सकते हैं कि अमुक परियोजना पर 'दस करोड़ रूपए' की लागत आएगी। जबकि मुद्रित माध्यम में हम लिखते हैं कि परियोजना पर रूपए '10,0000000 की लागत आएगी।

समाचार पत्रों में स्थान और डेट लाइन का उल्लेख समाचार के शुरू में किया जाता है जबकि रेडियो समाचारों में स्थान और समय संवाद के अभिन्न अंग होते हैं और सामान्यतः उनका उल्लेख पहले या दूसरे वाक्य में किया जाता है। इसी प्रकार तारीख का उल्लेख 'आज' या कल, करके किया जाता है क्योंकि हम बातचीत करते हुए कहते हैं कि आज हुआ या कल हुआ है। हम

यह भी कहते हैं कि 'इस साल फसल अच्छी हुई' और 'पिछले साल अच्छी नहीं हुई थी। तारीख या महीने के नाम का उल्लेख करने पर श्रोता थोड़ा सोच में पड़ जाता है। जबकि आज या कल और अगले महीने कहने पर वह तुरंत समझ जाता है और उसे अपने दिमाग पर जोर डालना नहीं पडता है।

9.2.3 jfM;k lekpkjk e lf{kIrrk % श्रव्य माध्यम यानी रेडियो में संक्षिप्तता समाचार की आत्मा होती है। रेडियो समाचार कानों से सुने जाते हैं। एक समर्पित रेडियो श्रोता भी बहुत अधिक समय तक लगातार समाचार नहीं सुन सकता। इसीलिए समाचार बुलेटिन को संक्षिप्त और आकर्षक होना चाहिए। एक समाचार बुलेटिन सामान्यतः दस मिनट का होता है। आकाशवाणी के कई समाचार बुलेटिन इससे कम समय के होते हैं तथा दो बुलेटिन 15–15 मिनट के होते हैं। दस मिनट की अवधि में कुल कितने शब्दों का प्रसारण किया जा सकता है। औसतन हिन्दी में प्रति मिनट 100 से 200 शब्दों का उच्चारण हो सकता है। पूरे बुलेटिन में 1300 शब्दों से अधिक का प्रसारण ठीक नहीं होता है। दस मिनट के बुलेटिन में 12 से 15 समाचार शामिल किए जाते हैं। इस प्रकार प्रत्येक समाचार में 80 से 100 समाचार शामिल किए जाते हैं। व्यापक सार्वजनिक रूचि के समाचारों को कुछ अधिक विस्तार से लिखना होता है। कुछ विशेष अवसरों पर पूरी बुलेटिन में एक ही समाचार के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया जाता है। लेकिन रेडियो के समाचार संपादक को इस तथ्य को हमेशा ध्यान में रखना होता है कि बुलेटिन में किसी समाचार के सार तत्व को ही शामिल किया जा सकता है।

9.2.4 foyke Lrih fl)kr % सभी संवाद जिन्हें अंग्रेजी में स्टोरी कहते हैं को विलोम स्तूपी तरीके से लिखा जाता है। इसमें प्रत्येक समाचार का आरंभ घटनाक्रम में निहित सर्वाधिक महत्वपूर्ण सूचना, तथ्य या घटना से किया जाता है। जबकि दादी मां द्वारा सुनाई जाने वाली कहानी में चरम बिन्दु अंत में दिया जाता है। समाचारों मे विस्तृत विवरण बाद में दिया जाता है। सबसे अंत में आवश्यकतानुसार पृष्ठभूमि का उल्लेख करने का कारण स्पष्ट है। समाचार श्रोता सबसे पहले यह जानना चाहता है कि क्या हुआ, घटना के ब्यौरे की वह प्रतीक्षा कर सकता है।

9.2.5 lekpkj dk L=kr % रेडियो समाचारों की सच्चाई, विश्वसनीयता तथा प्रतिष्ठा में समाचार श्रोता की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। रेडियो के कार्यक्षेत्र, प्रभाव तथा महत्व को देखते हुए आकाशवाणी के पास अपने समाचार श्रोत, बहुत कम हैं। देश–विदेश में संवाददाताओं की संख्या अपर्याप्त है। आकाशवाणी के संवाददाता ग्रामीण क्षेत्र में तो हैं ही नहीं, सभी प्रमुख नगरों में भी उनका अभाव है। अंशकालिक संवाददाताओ की नियुक्ति के बाद भी अभी सभी जिला मुख्यालयों में आकाशवाणी के संवाददाता नहीं हैं। आकाशवाणी अपने सीमित संवाददाताओं के अतिरिक्त देश–विदेश के समाचारों के लिए प्रेस ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, यूनाइटेड न्यूज ऑफ इण्डिया, रायटर व अन्य समाचार एजेंसियों पर निर्भर है। पत्र सूचना कार्यालय, राज्य सरकारों के सूचना विभाग, सरकारी प्रतिष्ठानों, संयुक्त राष्ट्र सूचना अभिकरणों तथा दिल्ली स्थित विभिन्न दूतावासों की पत्र विज्ञप्तियों से समाचार प्राप्त होते है। आकाशवाणी का अनुश्रवण प्रभाग विदेशी रेडियो संगठनों का अनुश्रवण कर उनके समाचार, समाचार कक्ष को उपलब्ध करवाता है।

9.2.6 iy foHkkx % आकाशवाणी के समाचार सेवा प्रभाग में अंग्रेजी के समाचार कक्ष और हिन्दी समाचार कक्ष में समाचारों का सम्पादन किया जाता है। समाचार कक्ष में प्रभारी संपादक की

देखरेख में पूल प्रणाली से संपादन किया जाता है। सभी श्रोतों से प्राप्त समाचारों में से प्रभारी संपादक उन समाचारों का चयन करता है। जो किसी न किसी बुलेटिन में शामिल किए जाते हैं। विभिन्न सूत्रों–संवाद समितियों, संवाददाताओं से प्राप्त ढेरों समाचारों में से अपने माध्यम के लिए उपयुक्त समाचारों के चयन का कार्य अत्यन्त सूझबूझ का होता है। जिन श्रोतों से प्राप्त समाचारों में से महत्वपूर्ण समाचार के चयन करने में बड़े–बड़े समाचार पत्रों के समाचार संपादकों को भी कठोर परिश्रम करना पड़ता है, उन्हीं में से रेडियो के लिए समाचार चुनना और भी कठिन होता है। सचमुच यह कार्य 'गागर में सागर' भरने जैसा होता है। समाचार के चयन के उपरान्त प्रभारी संपादक उसे अपने सहयोगी संपादकों को देते हैं जो कि उन्हें काट छाटं कर श्रव्य भाषा–शैली में लिखकर 'पूल कापी' तैयार करते हैं। अति महत्वपूर्ण समाचारों की 'पूल प्रति' प्रभारी संपादक स्वंय तैयार करते हैं। स्वदेशी समाचारों से तैयार 'पूल कापी' स्वदेशी पूल में तथा विदेशी समाचारों संबंधी आइटम 'विदेशी पूल' में शामिल किए जाते हैं। खेलकूद संबंधी समाचारों का खेलकूद पूल अलग बनाया जाता है। संसद के अधिवेशन के दौरान 'संसद पूल' भी बनाया जाता है। आकाशवाणी के प्रादेशिक समाचार एकांशों में पूल व्यवस्था नहीं है वहां विभिन्न श्रोतों से प्राप्त समाचारों से सीधे बुलेटिन तैयार किया जाता है।

9.2.7 cyfVu dk l;ktu % समाचारों की पूल कापी से बुलेटिन तैयार करना भी एक कला है। आकाशवाणी में जो संपादक बुलेटिन तैयार करता है उसे संयोजक कहते हैं। संयोजक संपादक ही बुलेटिन की संरचना करता है। संरचना की दृष्टि से रेडियो समाचार बुलेटिन के चार अंग होते हैं।

- मुख्य समाचार या हैड लाइन।
- समाचारों का विस्तृत वर्णन।
- मध्यान्तर जो कि 10 मिनट की बुलेटिन में पहले पांच मिनट के बाद होता है। मध्यान्तर के दौरान समाचार वाचक श्रोता को फिर से यह बताता है कि वह किस प्रसारण संगठन से समाचार सुन रहा है तथा एक गहरी सांस भी भरता है।
- मुख्य समाचारों की पुनरावृत्ति तथा समापन की घोषणा।

संयोजक संपादक ही वास्तव में बुलेटिन को स्वरूप प्रदान करता है। वह सभी मूल समाचारों को पढ़कर उनमें से उन समाचारों का चयन करता है जिन्हें बुलेटिन में शामिल किया जाता है। अपने श्रोता की रूचि और हित को ध्यान में रखते हए वह उन समाचारों को और अधिक काट–छाटं कर उन्हें और सहज तथा सरल भाषा में फिर से लिखता है। वही शीर्ष पंक्तियों के लिए कम से कम चार आइटमों को चुनाता है तथा उन्हें विशेष रूप से संपादित करता है। संयोजक संपादक बुलेटिन मे शामिल किए जाने वाले सभी समाचारों को अन्तिम स्वरूप प्रदान करता है। इस दौरान त्रुटियों को ठीक करने के साथ–साथ संपादक श्रवण ग्राहयता का मूल्यांकन भी करता है। यदि वह अनुभव करता है कि समाचार में कोई ऐसा शब्द है जो श्रोता को भ्रमित कर सकता है तो उसके स्थान पर सरल शब्द लिख सकता है। इसी प्रकार यदि कोई वाक्य सरलता पूर्वक श्रवण ग्राह नहीं है तो उसमें भी परिर्वतन कर सकता है। बुलेटिन में शामिल किए जाने वाले सभी आइटमों को अन्तिम रूप देने तथा मुख्य समाचारों को लिखने के बाद समाचारों का किस क्रम में पढ़ा जाना है इसका निर्धारण भी संयोजक संपादक की करता है। समाचारों के महत्व के अनुसार उनका क्रम निर्धारित किया जाता है। खेल तथा मौसम संबंधी समाचारों को सामान्यतः अंत में पढ़ा जाता हैं। लेकिन संयोजक संपादक को ध्यान रखना होता है कि इन समाचारों को बुलेटिन में अवश्य शामिल किया जाए। इसी प्रकार संपादक को ध्यान रखना होता है कि शीर्ष पंक्तियों वाले समाचारों को बुलेटिन में हर हालत में शामिल किया जाए।

9.2.8 dec)rk % बुलेटिन के समाचारों को उसी क्रम में नहीं तैयार किया जाता जिस क्रम में उन्हें पढ़ा जाता है। समाचार की 'पूल कापी' जैसे ही संयोजक संपादक को प्राप्त होती है वह तत्काल उसे पढ़कर यह तय करता है कि उसे बुलेटिन में शामिल करना है या नहीं। बुलेटिन में शामिल किए जाने वाले समाचार अलग–अलग तैयार किए जाते हैं, लेकिन जब एक ही घटना के विभिन्न पहलुओं पर अलग–अलग समय पर समाचार प्राप्त होते है तो उन्हें मिलाकर एक समाचार के रूप में तैयार किया जाता है। बुलेटिन जिस क्रम में पढ़ी जाती है उसे उस स्वरूप में तैयार करने को 'क्रमबद्धता' कहते हैं बुलेटिन के समाचारों को क्रमबद्ध करने के दौरान उन्हें दो भागों में बांटा जाता है। पन्द्रह मिनट की बुलेटिन में समाचार के तीन समूह तैयार किए जाते हैं।

क्रमबद्धता के दौरान भौगोलिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए एक क्षेत्र, राज्य, देश, महाद्वीप, पड़ौसी देश आदि के समाचारों को एक साथ क्रमबद्ध किया जाता है इसी प्रकार समाचारों की प्रकृति के आधार पर आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक समाचारों को एक साथ रखा जाता है। लेकिन क्रमबद्धता के दौरान महत्वपूर्ण समाचारों को सबसे पहले रखा जाता है। यह जरूरी नहीं है कि बुलेटिन के प्रथम भाग में महत्वपूर्ण विदेशी समाचार के बाद कम महत्व के विदेशी समाचारों को शामिल किया जाए। उचित यह होगा कि उसके बाद महत्वपूर्ण स्वदेशी समाचारों को प्रसारित किया जाए।

9.2.9 LVfM;ks esa lekpkj lEiknu % बुलेटिन को क्रमबद्ध करने के बाद संपादक उस स्टूडियो में जाता है जहां से समाचार वाचक समाचारों को पढ़ता है। समाचारों के प्रसारण के दौरान भी संपादक को बुलेटिन में मामूली फेंर बदल करने की आवश्यकता पड़ सकती है। यदि संपादक अनुभव करता है कि समयाभाव के कारण सभी समाचारों को वाचक नहीं पढ़ पायेगा ता वह संकेत के माध्यम से वाचक से कम महत्वपूर्ण समाचारों को बुलेटिन से निकाल देने को कहता है। इसी प्रकार यदि समय बच रहा है तो वाचक को पढ़ने के लिए अतिरिक्त समाचार भी देना पड़ सकता है। दोनों स्थितियो में बुलेटिन के क्रम में भी फेर बदल की आवश्यकता पड़ सकती है।

लेकिन संपादक को स्टूडियों में सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि वह बुलेटिन में कम से कम फेर बदल करे जिससे समाचार वाचक को समाचार पढ़ने में कोई विशेष कठिनाई न हो। स्टूडियो में अपरिहार्य स्थिति में ही बुलेटिन में फेरबदल करना चाहिए। समाचार घोषणा तक बुलेटिन के संपादन का कार्य चलता रहता है। रेडियो एक तत्कालिक माध्यम है। किसी घटना के घटते ही उसका समाचार प्रसारित किया जा सकता है।

समाचार कक्ष में समाचारों का प्रवाह निरन्तर जारी रहता है। बुलेटिन के प्रसारण के दौरान भी तत्काल प्राप्त अति आवश्यक समाचारों को बुलेटिन में शामिल किया जाता है तथा कम महत्वपूर्ण समाचारों को निकाल दिया जाता है। संपादक, उसके सहयोगियों तथा समाचार वाचक को बुलेटिन के प्रसारण के दौरान समाचार कक्ष में प्राप्त अति आवश्यक समाचार को बुलेटिन में शामिल करने के लिए सदैव तैयार रहना होता है।

9.3 lkj

रेडियो समाचार एक निश्चित अवधि के दौरान सुने जाते है जबकि अखबार पढ़ा जाता है। इसलिए रेडियो के लिए समाचार लिखते समय हमें ध्यान रखना चाहिए किवे सुनने के लिए होते हैं न कि पढ़ने के लिए। अतः रेडियो के समाचार छोटे और सरल वाक्यों में प्रतिदिन की बोलचाल की भाषा में लिखे जाते हैं।

इलैक्ट्रानिक माध्यमों में सक्षिप्तता का बहुत महत्व है। बुलेटिन की अवधि को ध्यान में रख कर समाचार संपादित किए जाते हैं। रेडियो का समाचार बुलेटिन सामान्यतः दस मिनट का होता है। इसी में विविध रूचि के समाचारों को संक्षेप मे शामिल किया जाता है। रेडियो समाचार संपादन का कार्य 'गागर में सागर' भरने जैसा होता है।

nl feuV d: lekpkj cqy:fVu d: pkj Hkkx gk:r: g: ;: g:%

- हैड लाइंस या शीर्ष पंक्तियां
- समाचारों का विवरण
- मध्यान्तर और मुख्य समाचारों की पुनरावृति।

बुलेटिन जिस क्रम में पढ़ा जाता है उसे उस स्वरूप में तैयार करने को क्रमबद्धता कहते हैं। बुलेटिन के प्रसारण के दौरान प्राप्त अति आवश्यक समाचारों को भी बुलेटिन में शामिल कर लिया जाता है तथा पहले से शामिल कम महत्वपूर्ण आइटमों को निकाल दिया जाता है।

9.4 fof k'V "kCnkoyh

iy % विभिन्न प्रकार के समाचारों का सरोवर होता है जिसमें से प्रसारण हेतु समाचारों का चयन किया जाता है।

9.5 vkdyu i: ukoyh

1. रेडियो के लिए समाचार लिखते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
2. रेडियो समाचारों में जिन शब्दों का उपयोग न किया जाए उनकी एक सूची बनाईए। साथ ही उनके पर्यावाची सरल शब्द भी लिखो।
3. समाचार बुलेटिन की संरचना को विस्तार पूर्वक लिखो।
4. क्या आपको लगता है कि टेलिविजन के आने से रेडियो का महत्व कम हो गया है, अपना उत्तर पांच सौ शब्दों में दें।

9.6 lnHk iLrd %

tu ek/;e vkj i=dkfjrk&2 ioh.k nhf{kr

fgnh i=dkfjrk fofo/k vk;ke Mk- on irki ofnd

i=dkfjrk dk bfrgkl ,o tu&lpkj ek/;e lthO ekuor

Block – E Unit –II

Lesson 10

दूरदर्शन पत्रकारिता

y[kd % Jh v:.k k dekj iujh{kd % Jh fefgj jtu ik=

<kpk

10.0 mnns ;

10.1 ikB ifjp;

10.2 fo'k; oLrq iLrfrdj.k

10.2.1 lepkj y[ku

10.2.2 lekpkj cqyfVu ugh /kkjkokfgd cu x,

10.2.3 lekpkjkss dh eq[; fo k'krk,

10.2.4 lekpkj okpu ,o iLrfrdj.k

10.2.5 Hkkjr ee njn kZu ,d utj

10.3 lkj

10.4 fof k'V "kCnkoyh

10.5 vkdyu i ukoyh

10.6 lnHkZ iLrd

10.0 mnns ;

इस अध्याय का प्रमुख उद्देश्य पत्रकारिता के छात्रों को दूरदर्शन पत्रकारिता के बारे में अवगत कराना है। इस पाठ को पढ़ने से छात्रों को यह पता चलेगा कि दूरदर्शन पत्रकारिता किस प्रकार से एक चुनौती भरा कार्य है और उसे किस प्रकार किया जाता है।

इस पाठ में छात्र यह सीखेंगे कि किस प्रकार से दूरदर्शन समाचार लेखन होता है, और किस प्रकार से समाचार बुलेटिन का स्वरूप और प्रकिया चलती है। दूरदर्शन समाचारों की अपनी अलग विशेषताएं होती हैं तथा इस पाठ में समाचार वाचन एवं प्रस्तुतिकरण के बारे में भी बताया गया है।

10.1 ikB ifjp;

दूर–दर्शन पत्रकारिता को विश्वभर में एक नया आयाम दिया है, ‘नई पत्रकारिता’ अथवा ‘इलैक्ट्रानिक पत्रकारिता’ तो एक प्रकार से दूर–दर्शन पत्रकारिता का पर्याय ही है। इस इलैक्ट्रानिक जन–माध्यम से सूचनाएं और समाचर व्यापक जन–समुदाय तक अत्यंत तीव्र गति से, दृश्यों और आवाज दोनों से युक्त हो कर एकसाथ पहुंचते हैं। इसलिए उनमें विश्वसनीयता और रोचकता होती है। साथ ही इनमें संगीत तत्व जुड़ जाने से लोक–रंजन अथव मनोरंजन का आयाम और मिल जाता है।

प्रायः समाचार को ही पत्रकारिता का पर्याय मान लिया जाता है। यह तो पत्रकारिता का सीमित परिचय हुआ। यह ठीक है कि मूल रूप से समाचार पत्रकारिता की आत्मा है, लेकिन वे अन्य विधएं भी पत्रकारिता से जुड़ी हैं, जिनमें नीवनता, शिक्षा, लोक रंजन, जनजागृति, जीवन–जगत् के विविध क्षेत्रों की गतिविधियों की जानकारी इत्यादि का समावेश रहता है। विशेष्रूप से नई पत्रकारिता में ऐसी व्यापकता आ चुकी है। इस दृष्टि से दूर–दर्शन पत्रकारिता में सामान्यतः ये विधायें सम्मिलित हैं : समाचार, साक्षात्कार, डॉक्यूमेंटरी, सीधा प्रसारण, सांस्कृतिक पत्रिका आदि। इसी तरह डिस्कवरी चैनल के बहुत से अन्वेषणपरक कार्यक्रम जो इस पत्रकारिता की सीमा में आते है। मनोरंजन के साथ तथ्यपरक सूचना देने वाले ऐसे बहुत रूचि के साथ देखे जाते हैं।

इंटरव्यू का तो बहुत बड़ा क्षेत्र है, जिसमें विभिन्न चैनल नए–नए प्रयोग भी करते रहते हैं और उन्हें नए–नए नामों के साथ प्रसारित भी करते हैं। कई बार तो लाइव शो भी दिखाए जाते हैं और दर्शकों के सबाल भी सीधे ही प्रसारित कार्यक्रम में रखे जाते हैं। इनके कुद उदाहरण इस प्रकार से हैं ‘रूबरू’ इ एल टीवी पर, ‘आप की अदालत’ जी टीवी पर, दिखाए जाते रहें हैं। आज तक समाचार चैनल पर प्रभुचावला द्वारा ‘सीधी बात’ भी इसका उदाहरण है।

समाचार के विविधतापूर्ण बुलेटिन आज प्रायः सभी प्रमुख टीवी चैनल्स पर प्रसारित किए जाते हैं और व दर्शकों के व्यापक जनसमूह द्वारा रूचिपूर्वक देखे व सुने जाते हैं। चाहे ये समाचार सामान्य हो या विशेष क्षेत्रों के। वर्तमान में चौबीस घंटे के समाचार चैनलों की बाढ़ सी आ गई है। इस बाढ़ के साथ ही उनमें प्रतिस्पर्धा इतनी बढ़ गई है उन्हें यह पता है यदि हमसे एक चूक हुई तो हमारे दर्शकों के पास और भी चैनल लाइन में खड़े हैं उसे तो बस रिमोट का बटन दबाने की जरूरत है। इन चैनलों पर एक्सक्लूसिव न्यूज, ब्रेकिंग न्यूज और स्ट्रिंग आप्रेशन वाले समाचारों का बोलबाला रहता है जो कि अपने दर्शकों व श्रोताओं को अपने पास से हटने ही नहीं देता है।

कई प्रमुख समाचार चैनलों ने तो व्यापार आदि के अलग से ही समाचार चैनल बनाएं हुए हैं इन पर व्यापार जगत का छोटे से छोटा समाचार प्रसारित किया जाता है। वहीं सभी प्रमुख समाचार चैनलों ने खेल जगत् की गतिविधियों को गीत–संगीत के साथ एंव शूटिंग–रिर्पोट के साथ प्रस्तुत करते हैं। फिल्मी जगत के समाचारों के वैसे तो हर प्रमुख चैनल दिखाते हैं लेकिन वर्तमान में ‘जूम’ जैसे चैनल आए है जो पूर्णतः फिल्मी हलचलों पर नजर रखते है और शीघ्र अति शीघ्र उनका प्रसारण करते हैं।

10.2 fo’k; oLr| iLr|frdj.k

10.2.1 समचार लेखन

10.2.2 समाचार बुलेटिन नहीं धारावाहिक बन गए

10.2.3 समाचारों की मुख्य विशेषताएं

10.2.4 समाचार वाचन एवं प्रस्तुतिकरण

10.2.5 भारत में दूरदर्शन एक नजर

10.2.1 lepkj y[ku ¼ दूरदर्शन के लिए समाचार लेखन करते समय यह ध्यान रखा जाता है कि समाचार की प्रस्तुति एक टीमवर्क होता है। लेखन की सफलता कई प्रतिभाओं और यंत्रों पर निर्भर करती है। इस दृष्टि से पहले हमें निर्माता, निर्देशक, निर्माण सहायक, तल–प्रबन्धक, अभिनेता, कैमरामैन, दृश्यबंध अभिकल्पकार, लेखाचित्र कला पर्यवेक्षक एवं कलाकार, रूपसज्जाकार तथा अन्य कर्मियों की सुविधाओं व आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए समाचार लेखन करते हैं।

इसके बाद मूल बात आती है दूर–दर्शन समाचारों की भाषा की। हर माध्यम की अपनी भाषा है। टेलिविजन समाचारों की अपनी भाषा है। यहां शब्द भी बोलते हैं, रंग भी, चेहरे भी, मौन भी और संगीत भी। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए समाचारों की भाषा सरल, सहज, व पीछे दिखाए जाने वाले चित्रों के अनुकूल रखी जाती है।

lekpkj dh jpuk e: i:e|[k rRo bl i:dkj l: g|A

- मुख्य अंश
- मुख्य अंशों की पुनरावृति
- समयावधि व दृश्यों का स्थान
- पूर्णतया वर्णात्मक समाचार कहानी
- वक्ता द्वारा आवाज प्रयोग
- पहले से तैयार साक्षात्कार प्रसारण एवं सीधा साक्षात्कार प्रसारण
- हॉट स्विच
- अंतराल व उसके बाद फिर समाचार कहानी
- खेल, मौसम व अन्य समाचार

e|[; v: k ¼ रेडियो की भांति टेलिविजन पर भी मुख्य अंशों को प्रारम्भ में प्रस्तुत किया जाता है तथा दर्शक को यह भी बताया जाता है कि बुलेटिन में किस–किस विषयों से संबंधित समाचारों का समावेश किया गया है और साथ–साथ समाचार से जुड़े दृश्यों के अंशों को दिखाया भी जाता है जोकि सर्वाधिक प्रभावशाली एवं दर्शक में समाचार के प्रति उत्सुकता उत्पन्न करने के लिए होता है। एक कम महत्व के समाचार कहानी को भी मुख्य अंशों में शामिल किया जा सकता है अगर उस कहानी से संबंधित दृश्य अधिक प्रभावशाली एंव महत्वपूर्ण हो।

इसके विपरित अगर किसी महत्वपूर्ण समाचार कहानी में दृश्य बुति कम प्रभावशाली या दृश्य न हो तो संभव है कि उसे मुख्य अंशों में न रखा जाए तथा उसका स्तर उपर्युक्त समाचार कहानी की अपेक्षा कम हो जाएगा। दूसरी और कुछ घटनाएं इतनी अधिक महत्वपूर्ण तथा समाचार योग्य होती है कि उन्हें चाह कर भी मुख्य अंशों से नहीं निकाला जा सकता चाहे उनके दृश्य, चित्र अथवा आवाज गुणात्मक तौर पर अच्छे हो या नहीं।

e|[; v: kk: dh i|ujkofr ¼ मुख्य अंशों को मुख्यता उन दर्शकों के लिए दोहराया जाता है जो किसी कारणवश बुलेटिन को शुरू से नहीं देख पाते इसलिए मुख्य अंशों को बुलेटिन के अंत में दोहराया जाता है। सामान्यतः मुख्य अंशों की पुनरावृति के समय संबंधित आकर्षक दृश्यों को दिखाया जाता है।

le;kof/k o n ;k dk LFkku % एक समाचार बुलेटिन में हमेशा यह प्रयास किया जाता है कि उसे किसी बहुत आकर्षक व प्रभावशाली दृश्यों से आरंभ किया जाए क्योंकि अगर दर्शक आकर्षित नहीं होगा तो वह उस चैनल का विकल्प ढूढ़लेगा। दूसरी ओर अगर सभी आकर्षक दृश्यों को बुलेटिन के शुरू में रख दें तो शेष बुलेटिन नीरस हो जाएगा या दर्शक समाचारों को छोड़ कोई और कार्यक्रम देखना शुरू कर देगा। इसलिए जरूरी है कि कुछ अच्छे दृश्यों की समाचार कहानियों को शंरू में रखा जाए और बाकी दृश्यों की समाचार कहानियों को शेष बुलेटिन में बिखेर कर दिखाया जाए। यह कार्य बड़ा विवकेशील होता है, तथा इसे सावधानी पूर्वक करना चाहिए।

टेलिविजन दृश्यों का संचार माध्यम होता है व अच्छे दृश्यों का भरपूर प्रयोग करना चाहिए। कभी भी अच्छे दृश्यों के लिए छोटा लेखन नहीं किया जाता। शुष्क समाचार कहानी अर्थात जिसमें चित्र इत्यादि उपलब्ध न हों सिर्फ कह कर ही बताई जाती हो की समयावधि निश्चित कर उसे दो दृश्य समाचार कहानियों के बीच में सैंडविच की तरह छुपा कर प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार किसी समाचार बुलेटिन के स्थान को विभिन्न प्रकार की कहानियों से भरा जाता है।

i.kr;k o.kkRed lekpkj dgkuh : पहले के समय में प्रत्येक बुलेटिन में पहले से रिकार्ड की गई समाचार कहानियां होती थीं। जिसमें कोई भी परिर्वतन व आवाज को दृश्यों के अनुरूप पहले से ही किया गया होता था। यह समाचार कहानियां समाचार वक्ता को आराम प्रदान करती थीं। लेकिन वर्तमान समय में हालात बदल गए हैं समाचारों को लाइव अर्थात सीधा प्रसारण करके दिखाया जाता है और समाचार में रिकार्ड किए गए चलचित्रों को ज्यादा दिखाया जाता है, जिन्हें हम QVt कहते हैं। इन फुटेज के साथ ही एंकर भी लगाता स्टूडियो में बैठक समाचार वाचक या एंकर से संबंध साधे रखते हैं जरूरत पड़ने पर स्टूडियो में बैठा एंकर घटना क्रम वाले स्थान पर खड़े एंकर से वहां की ताजा जानकारी को बार–बार लेता रहता है। इस प्रकार के समाचारों में स्टूडियो में बैठे एंकर को कम समय ही आराम के लिए मिल पाता है।

oDrk }kjk vkokt i;kx % कुछ समाचार कहानियों में समाचार वक्ता की आवाज उपलब्ध दृश्यों के अनुरूप पहले ही रिकार्ड कर ली जाती है और उसे समाचारों में रिर्पोट की भांति प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन अगर कोई इस प्रकार की समाचार कहानी समाचार प्रसारण के दौरान मिले तो उसका लाइव प्रसारण किया जाता है। कई बार किन्हीं समाचारों के लिए चित्र नहीं मिल पाते तो उस स्थिति में लाइब्रेरी चित्रों या पुराने रिकार्डों से भी काम चलाना पड़ता है।

igy l r;kj lk{kkRdkj i lkj.k ,o lh/kk lk{kkRdkj i lkj.k % पहले के समाचारों में रिकार्ड किए गए साक्षात्कार ही दिखाए जाते थे, लेकिन वर्तमान समय में साक्षात्कार देने वाले को या तो स्टूडियो में ही बुला लिया जाता है नही ंतो लाइव वेन की सुविधा का फायदा उठाकर साक्षात्कार देने वाले के घर या कार्यालय से ही उसका साक्षात्कार का सीधा प्रसारण किया जाता है। इसको करने के लिए साक्षात्कार लेने वाले से तत्तकालीन स्थितियों के अनुरूप प्रश्नावली तैयार कर ली जाती है। कई बार यदि साक्षात्कार लेने वाले ज्यादा अनुभवी व्यक्ति है तो वह सीधे ही बातचीत के क्रम को ध्यान में रखते हुए प्रश्न पूछता चलता है जो कि ज्यादा सटीक बैठता है। इसके उदाहरण हैं vktrd U;t pSuy ij ^lh/kh ckr^ o ,uMhVhoh bafM;k ij ^eqdkcyk^A

gkV fLop % हॉट स्विच समाचार बुलेटिन का महत्वपूर्ण भाग है। आजकल इसका काफी प्रचलन भी है। किसी भी समाचार बुलेटिन की सफलता के लिए आवश्यक है कि उसके प्रसारण के दौरान होने वाली घटनाओं को दिखाया जाए जिससे दर्शक अपने घर बैठा रोमांचित हो सके। इनमें

,DlDyflo U;t o cfdx U;t djd दर्शकों को समाचार दिखाए जाते हैं। इनमें अधिकतर चुनावों या खेलों के रिजल्ट, कोई बहुत बड़ा हादसा इत्यादि शामिल होते हैं।

vrjky o mld ckn fQj lekpkj dgkuh % किसी भी टेलिविजन संघ को जीवित रहने के लिए विज्ञापनों से प्राप्त धन पर निर्भर रहना पड़ता है। विज्ञापनों को बुलेटिन के दौरान छोटे अंतराल के रूप में प्रसारित किया जाता है। यह अंतराल 5–10 मिनट के हो सकते हैं इस दौरान समाचार प्रस्तुत करने वाले एंकरों का आराम करने व चाय–पानी लेने का पर्याप्त समय मिल जाता है तथा दर्शक के लिए भी बोरियत नहीं होती। कई बार तो इन अंतरालों का फायदा दर्शक भी रिफ्रेश होने के लिए उठाते हैं। इसके बाद समाचारों का क्रम फिर उसी प्रकार चलने लगता है।

[ky] ekle o vU; lekpkj % पहले के समाचारों में खेल समाचारों को बाकी समाचारों के बाद प्रस्तुत किया जाता था वह भी संक्षिप्त रूप में लेकिन वर्तमान समय में खेल में दर्शकों की अच्छी–खासी रूचि को देखते हुए कई प्रमुख समाचार चैनल बने हुए हैं। जैसे कि टेन स्पोर्टस, ईएसपीएन, स्टार स्पोर्टस इत्यादि चौबीसों घंटे खेल समाचारों की प्रस्तुति होती रहती है, या फिर खेल भी चलते रहते हैं। परन्तु सभी प्रमुख समाचार चैनलों पर खेलों को बहुत ज्यादा महत्व दिया जाने लगा है, इसके चलते खेलों पर विशेष स्टोरी तैयार कर दिखाने का प्रचलन चल निकला है। इनमें खेलों के पुराने महारथियों को भी विशेष रूप से आमंत्रित किया जाने लगा है।

मौसम समाचारों को लेकर भी जागरूकता बढ़ी है तो इस पर भी पहले की अपेक्षा अधिक समय दिया जाने लगा है। आजकल एक नया प्रचलन भी सामने आया है भविष्य समाचारों का कई प्रमुख चैनल दिन में दो बार तक भविष्यफल बताने लगे हैं। प्रतिदिन दिन में दो बार दस–दस मिनट का और रविवार को आधा घंटा तक भविष्यफल बताया जाने लगा है। अर्थात वर्तमान समय में समाचार चैनलों एक धारावाहिक रूप में भी प्रस्तुत किया जाने लगा है।

10.2.2 lekpkj cyfVu ugh /kkjkokfgd cu x, %

बहुत कम ऐसे चैनल बचे हैं जिन पर समाचारों को एक धारावाहिक के रूप में एक या आधा घंटा के लिए प्रस्तुत किया जाता हो। यहां तक की प्रसार भारती ने भी मैट्रो चैनल को डी डी न्यूज चैनल बना कर उसे भी चौबीस घंटे का समाचार चैनल बना दिया है। यदि दूरदर्शन पर हम देखें तो समाचार चैनलों की बाढ़ सी आई हुई है। इन सभी समाचार चैनलों पर दर्शकों को खींचने की होड़ सी लगी हुई है। वो समय गया जब समाचारों का रिकार्ड कर उन्हें प्रस्तुत किया जाता था। वर्तमान समय में समाचारों को जल्दी से जल्दी दर्शकों तक पहुंचाने की होड़ ने उन्हें लाइव टेलिकास्ट की पोजिशन पर ला कर खड़ा कर दिया है। कई बार एक्सक्लूसिव समाचारों को धारावाहिक के रूप में रिकार्ड कर लिया जाता है और उसकी प्रस्तुति इस प्रकार की जाती है कि दर्शकों को लगे कि यह सब घटनाक्रम सीधा प्रसारण दिया जा रहा है।

वर्तमान समय में सभी प्रमुख समाचार चैनलों पर दर्शकों व श्रोताओं को राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय समाचारों के साथ–साथ प्रादेशिक समाचारों को भी सुर्खियों में रखा जाता है। दर्शकों को यहां तक जानकारी दी जाती है कि क्या सामान बाजार में आपके लिए फायदे का सौदा है और क्या नहीं है। इसी का उदाहरण है 'आज तक' समाचार चैनल पर मार्किट में आने वाले आटोमोबाइल्स की जानकारी का धारावाहिक है 'चक्के पे चक्का'। इसी तरह प्रत्येक दर्शक की जरूरत को ध्यान में रखते हुए समाचार चैनल काम कर रहे हैं इस का एक और उदाहरण है कुंभ पर होने वाले गंगा स्नान का जहां पर समाचार चैनलों के संवाददाताओं की पूरी की पूरी फौज मेले के एक कोने का हाल बताने के लिए अपनी लाइव वैनों के साथ तैयार खड़ी रहती है।

10.2.3 lekpkjk dh e[; fo k'krk, %एक बार फिर हम दूरदर्शन के समाचारों की मुख्य विशेषताओं का अवलोकन कर लें और देखें कि इनके संयोजन में क्या–क्या किया जा सकता है। जैसा कि हमने पीछे कहा, दूरदर्शन समाचार की सरंचना में इन बातों का विशेष ध्यान रखना होता है : घटनाक्रम में तारतम्यता, चित्रात्मकता, संक्षिप्तता, संभाषणशीलता, रिपोर्ट और समय–सापेक्षता। संरचना की इन विशेषताओं को हम अपनी लेखन–क्षमता, कल्पनाशीलता, वस्तुनिष्ठता और तकनीकी ज्ञान से पूरा कर सकते हैं। सबसे पहले हम भाषा पर ध्यान दें। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि –

- भाषा सरल, और सहज होनी चाहिए।
- वक्य छोटे और सरल होने चाहिए।
- प्रयास करें कि एक वाक्य में एक बात पूरी हो जाए।
- बोलचाल के शब्द और ऐसे मुहावरों का प्रयोग करें जो आम जनमानस में रचे बसे हों।
- कठिन शब्दों से जितना हो सके परहेज करें, इससे समाचार वाचक को बोलने में सुविधा रहती है।
- समाचार की शब्दावली में भी विविधता होनी चाहिए, यदि किसी का नाम बार–बार लेना पड़ता है तो उसे उसके उपनाम से भी बुलाया जा सकता है जैसे औमप्रकाश चौटला को समाचारों में कभी चौटाला ता कभी मुख्यमंत्री के रूप में बोला जा सकता है।
- पूरा समाचार लिखने के बाद उसे पुनः ठीक से चैक कर लेना चाहिए, क्योंकि हम कई बार न चाहते हुए भी गलतियां कर जाते हैं। कई बार किसी का गलत नाम या जगह का नाम गलत हो जाने से बाद में खेद जताना पड़ता है।
- समाचारों को रोचक बनाने के लिए कहीं–कहीं संगीत भी जोड़ा जा सकता है। कई बार तो नाटकीय घटनाक्रम का भी सहारा लेना पड़ता है।
- कई बार कवरेज की क्वालिटी खराब होने पर स्टिल फोटोग्राफ जो लाइब्रेरी में रहते हैं उनका प्रयोग कर लेना चाहिए।
- सी. जी. यानि कैरेस्टर जनरेशन, इस तकनीक में समाचार के महत्वपूर्ण अंश को विशेष रूप से संख्याओं व आंकड़ों को सुपर किया जाता है।

10.2.4 lekpkj okpu ,o iLrfrdj.k %

समाचार वाचन एवं प्रस्तुतिकरण के लिए स्टूडियो में एंकर होते हैं जो कि समाचारों के प्रस्तुतिकरण का कार्य करते हैं। समाचार लेखन की भांति समाचार वाचन भी एक महत्वपूर्ण कार्य है। जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं, दूरदर्शन लेखन और प्रस्तुति परस्पर जुड़ी हुई प्रक्रियाएं हैं। इसी से जुड़ता है समाचारों का वाचन तब जाकर यह प्रक्रिया पूरी होती है। अतः एक समाचार वाचक की भूमिका समाचार लेखक, सम्पादक, निर्देशक से किसी भी तरह कम नहीं है। घटना स्थल के समाचारों के एंकरों के लिए तो यह चुनौती भरा कार्य होता है क्योंकि वे किसी भी टेलीप्रोम्पटर पर देख कर नहीं बोलते हैं। समाचार कक्ष में इतने सारे लोगों के परिश्रम से तैयार की गई मूल्यवान सामग्री समाचार वाचक की अयोग्यता से व्यर्थ हो सकती है। इसलिए एक समाचार वाचक को बहुत ही सिद्धहस्त व जारगरूर होना चाहिए। उसके अन्दर मुख्य रूप से निम्नलिखत गुण आवश्यक हैं –

- भाषा का शुद्ध ज्ञान।
- उच्चारण की शुद्धता।
- प्रभाव पूर्ण वाणी।
- आत्मविश्वास।

- त्वरित बुद्धि।
- सौम्य चेहरा।

समाचार एंकर के लिए उसका करियर बड़ा ही चुनौती पूर्ण रहता है। यदि उसकी वाणी प्रभावपूर्ण है तो वह किसी भी एक समाचार के पैकेज को पूरा करके समाचार चैनल की टी आर पी तक बढ़ा सकता है। इसका उदाहरण जी न्यूज पर आप्रेशन प्रिंस के समय देखने को मिला था। इसके अलावा समाचार एंकर फोन इन और वॉयस ओवर का भी जरूरत पड़ने पर प्रयोग करते हैं।

Qku bu % कभी–कभी ऐसा भी होता है कि दूर–दराज के इलाके से संवाददाता की आवाज मिलती है तो उसे उसी के स्वर में प्रस्तुत कर दिया जाता है।

Okk;l vkoj % कई बार आपने देखा और सुना होगा कि 'आइए हम आप को लिए चलते हैं अमुक स्थान पर जहां हमारे संवाददाता दिनेश भाटिया मौजूद हैं घटनाक्रम की ताजा जानकारी के लिए'। इस प्रकार पीछे से आने वाली आवाज या उसकी जानकारी जोकि घटनाक्रम की ताजा तस्वीरों के साथ दिखाई जा रही है, वॉयस ओवर कहलाती है।

10.2.5 Hkkjr esa nwjn'ku ,d utj % दूरदर्शन अर्थात टेलीविजन आज भारत में लोगों के मनोरंजन के साथ–साथ सूचना प्राप्ति का एक महत्वपूर्ण साधन बन गया है। शहरी तो शहरी ग्रामीण लोग भी टेलीविजन की चकाचौंध रोशनी में खो गए हैं। यही कारण है कि अब लोग रेडियो खरीदने या सुनने की बजाए टेलीविजन खरीदने और सुनने को प्राथमिकता दे रहे हैं। टेलीविजन की खासियत यह है कि जिस श्रोता को पढना भी नहीं आता है, उसे समाचार सुनने, देखने और समझने में परेशानी नहीं होती है। आज भी भारत में लगभग 50 करोड की आबादी निरक्षर है। लोगों द्वारा टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले समाचारों की मांग या व्यूरशिप इतना अधिक बढ गई है कि प्रिंट माध्यम की तरह ही कई समाचार चैनल शुरू हो गए हैं। एक समय था कि सिर्फ सरकारी समाचार टेलीविजन पर देखने को मिलता था, लेकिन आज लगभग एक दर्जन निजी समाचार चैनलों द्वारा चौबीस घंटे समाचारों को प्रसारित किया जाता है। सरकारी तंत्र प्रसार भारती द्वारा भी चौबीस घंटे का समाचार चैनल शुरू कर दिया गया है। इन समाचार चैनलों का लाभ यह हुआ है कि लोगों को समाचार प्राप्त करने के लिए अब निर्धारित समय का या समाचार पत्रों की तरह सुबह का इंतजार नहीं करना पडता है। इस कारण दूरदर्शन पत्रकारिता की चुनौती और महत्ता दिन प्रतिदिन बढती जा रही है।

भारत में टेलीविजन की शुरूआत प्रायाोगिक तौर पर 1 सितंबर 1959 को शुरू की गई थी। उस समय सप्ताह में मात्र एक दिन ही शाम के समय दो घंटे का प्रसारण किया जाता था। वर्ष 1965 में इसकी सेवा नियमित शुरू कर दी गई। टेलीविजन प्रसारण को नियमित करते ही इसके विकास में महत्वपूर्ण चरण आ गया। उपलब्ध आंकडों के अनुसार वर्ष 1962 में देश में मात्र एक प्रसारण केंद्र था और सिर्फ 41 टेलीविजन के सेट। देश में दूसरे केंद्र की स्थापना 1972 में मुंबई में तथा तीसरे केंद्र की स्थापना 1973 में कश्मीर में की गई। वास्तव में टेलीविजन के विकास प्रथम चरण एक मॉडल था। यूनेस्कों विशेषज्ञों द्वारा भारत में टेलीविजन की संभावना का अध्ययन करने बाद जारी एक रिपोर्ट में कहा गया कि टेलीविजन के विकास को भारत के विकास से जोड दिया जाना चाहिए। संभवतः इसी रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए वर्ष 1973 में उपग्रह आधारित शैक्षणिक टेलीविजन साईट का प्रसारण प्रायोगिक तैार पर शुरू किया गया। इस कार्यक्रम को अमेरिकी संस्था नासा के सहयोग से चलाया गया। इस कार्यक्रम के लिए सरकार ने 2400 सामुदायिक टेलीविजन उपलब्ध कराए। इसके माध्यम से बिहार, मध्यप्रदेश, राजस्थान, उडीसा, आंध्र प्रदेश और

कर्नाटक के पिछड़े इलाकों को फायदा पहुंचाने का लक्ष्य रखा गया। साईट संबंधी कार्यक्रमों के निर्माण के लिए निर्माण केंद्र अर्थात स्टूडियों की स्थापना की गई। सर्वप्रथम स्टूडियो दिल्ली, कटक और हैदराबाद में स्थापित किये गए। दिल्ली स्टूडियों में बिहार, राजस्थान और मध्य प्रदेश के 1200 गांवों में प्रसारण के लिए हिंदी कार्यक्रम तैयार किये जाते थे, जबकि कटक केंद्र द्वारा उड़ीसा के 400 गांवों के लिए कार्यक्रम तैयार किये जाते थे। इसके अतिरिक्त हैदराबाद केंद्र में तेलगु दर्शकों के लिए कार्यक्रम तैयार किये जाते थे। साईट का प्रयोग मुख्यतः किसानों के लिए किया गया था। इसलिए कार्यक्रमों में विशेषकर सफाई, परिवार नियोजन और कृषि संबंधी जानकारी होती थी। वर्ष 1976 में दूरदर्शन आकाशवाणी से अलग हुआ और दूरदर्शन के लिए दिल्ली में मंडी हाउस खोला गया। इसी वर्ष में दूरदर्शन ने अलग से एक विज्ञापन सेवा भी शुरू की। दूरदर्शन के सात केंद्रों कलकत्ता, मुबंई, दिल्ली, जालंधर, मद्रास, श्रीनगर और लखनउ से विज्ञापन प्रसारण सेवा शुरू की गई। दूरदर्शन ने विज्ञापन सेवा के साथ ही सप्ताह में एक बार फिल्म और आगे चलकर चित्रहार का प्रसारण भी शुरू किया। दूरदर्शन का तेजी से विस्तार अस्सी के दशक में हुआ। पहली बार 1981–82 में दिल्ली, मुंबई, दिल्ली, जालंधर और बंगलौर के बीच माइक्रोवेव लिंक की स्थापनाा की गई। इसी दौरान 1 अप्रैल 1982 को बहुउद्देशीय संचार उपग्रह इनसेट 1 अंतरिक्ष में छोडा गया। इसके साथ ही दूरदर्शन के विकास में तेजी आ गई।

15 अगस्त 1982 को तत्कालीन प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी ने देश में 21 दूरदर्शन केंद्रों से कार्यक्रम का प्रसारण का शुभारंभ किया और उसी दिन से रंगीन प्रसारण भी शुरू हुआ। इसके कुछ दिन बाद ही उसी वर्ष नई दिल्ली में एशियन गेम्स का आयोजन किया गया। जिसे देखते हुए कई अल्प शक्ति के प्रसारण केंद्रों की स्थापना की गई। वर्ष 1983 आते–आते दूरदर्शन पर प्रायोजित कार्यक्रमों की शुरूआत हो गई।

7 जुलाई 1984 को देश का पहला दूरदर्शन धारावाहिक हमलोग का प्रसारण शुरू किया गया। हमलोग धारावाहिक के लेखक थे मनोहर श्याम जोशी और निर्देशन पी कुमार वासुदेव ने किया। हमलोग धारावाहिक दूरदर्शन पर इतना अधिक सफल हुआ कि दूरदर्शन मध्यमवर्गीय परिवार के लिए जरूरत का एक हिस्सा बन गया।

नब्बे के दशक में भी दूरदर्शन का विकास तेजी से हुआ। इसी दशक में समाचार के क्षेत्र में दूरदर्शन पर समाचार युद्ध शुरू हुआ जो आज भी जारी है।

10.3 lkj

lekpkj dh jpuk es ie[k rRo bl idkj ls gSA

- मुख्य अंश
- मुख्य अंशों की पुनरावृति
- समयावधि व दृश्यों का स्थान
- पूर्णतया वर्णात्मक समाचार कहानी
- वक्ता द्वारा आवाज प्रयोग
- पहले से तैयार साक्षात्कार प्रसारण एवं सीधा साक्षात्कार प्रसारण
- हॉट स्विच
- अंतराल व उसके बाद फिर समाचार कहानी
- खेल, मौसम व अन्य समाचार

lekpkjk dh e[; fo k’krk,

- भाषा सरल, और सहज होनी चाहिए।
- वक्य छोटे और सरल होने चाहिए।
- प्रयास करें कि एक वाक्य में एक बात पूरी हो जाए।
- बोलचाल के शब्द और ऐसे मुहावरों का प्रयोग करें जो आम जनमानस में रचे बसे हों।
- कठिन शब्दों से जितना हो सके परहेज करें, इससे समाचार वाचक को बोलने में सुविधा रहती है।
- समाचार की शब्दावली में भी विविधता होनी चाहिए, यदि किसी का नाम बार–बार लेना पड़ता है तो उसे उसके उपनाम से भी बुलाया जा सकता है जैसे औमप्रकाश चौटला को समाचारों में कभी चौटाला ता कभी मुख्यमंत्री के रूप में बोला जा सकता है।
- पूरा समाचार लिखने के बाद उसे पुनः ठीक से चैक कर लेना चाहिए, क्योंकि हम कई बार न चाहते हुए भी गलतियां कर जाते हैं। कई बार किसी का गलत नाम या जगह का नाम गलत हो जाने से बाद में खेद जताना पड़ता है।
- समाचारों को रोचक बनाने के लिए कहीं–कहीं संगीत भी जोड़ा जा सकता है। कई बार तो नाटकीय घटनाक्रम का भी सहारा लेना पड़ता है।
- कई बार कवरेज की क्वालिटी खराब होने पर स्टिल फोटोग्राफ जो लाइब्रेरी में रहते हैं उनका प्रयोग कर लेना चाहिए।
- सी. जी. यानि कैरेक्टर जनरेशन, इस तकनीक में समाचार के महत्वपूर्ण अंश को विशेष रूप से संख्याओं व आंकड़ों को सुपर किया जाता है।

lekpkj okpd dh e[; fo k’krk,

- भाषा का शुद्ध ज्ञान।
- उच्चारण की शुद्धता।
- प्रभाव पूर्ण वाणी।
- आत्मविश्वास।
- त्वरित बुद्धि।
- सौम्य चेहरा।

10.4 fof k’V “kCnkoyh

Qku bu % कभी–कभी ऐसा भी होता है कि दूर–दराज के इलाके से संवाददाता की आवाज मिलती है तो उसे उसी के स्वर में प्रस्तुत कर दिया जाता है।

Okk;l vkoj % कई बार आपने देखा और सुना होगा कि ‘आइए हम आप को लिए चलते हैं अमुक स्थान पर जहां हमारे संवाददाता दिनेश भाटिया मौजूद हैं घटनाक्रम की ताजा जानकारी के लिए’। इस प्रकार पीछे से आने वाली आवाज या उसकी जानकारी जोकि घटनाक्रम की ताजा तस्वीरों के साथ दिखाई जा रही है, वॉयस ओवर कहलाती है।

,DlDyflo % कई बार संवाददाता कोई खास खबर खोज कर लाते हैं या फिर कोई स्टींग आप्रेशन या फिर ऐसी कोई खबर जो सिर्फ उस समय उसी समाचार चैनल के पास ही है और वही उसे प्रसारित कर रहा है।

cfdx U;t ½ कई बार समाचारों के बीच कोई बहुत ही खास खबर जिसका लोगों को बेसब्री से इंतजार हो या फिर कोई हादसा आदि के समाचारों को बीच में अचानक ला कर प्रस्तुत करना ब्रकिंग न्यूज कहलाता है।

10.5 vkdyu i ukoyh

1. 'भारत में दूरदर्शन' पर पांच सौ शब्दों का नोट लिखें।
2. किन्हीं 6 समाचार चैनलों के प्रसारण के विषय में विस्तार से लिखें।
3. आप को जो समाचार चैनल पसन्द हो उसके विषय में विस्तार से लिखें, और कक्षा में उसपर परिचिर्चा करें।
4. दूरदर्शन समाचार लेखन के बारे में वताएं।
5. नब्बे के दशक और वर्तमान समय के समाचार प्रसारण के अंतर को स्पष्ट करें।

10.6 lnHk iLrd

jfM;k vkj njn ku Ik=dkfjrk Mk- gfjekgu

i=dkfjrk dk bfrgkl ,o tu&lpkj ek/;e l tho ekukor